जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 67 | *अंक* - 11 | *नवम्बर* - 2023 | *मूल्य एक प्रति* 6 *रुपये*

सम्पादक
राजीव जैन, दिल्ली

सम्पादक मण्डल
संजय बाफना जैन, अहमदनगर
83298 28560
डॉ. भद्रेश कुमार जैन, चेन्नई
93822 91400
एन. गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई
93826 36363

केन्द्रीय कार्यालय
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
011-23363729, 23365420
+91 90197 31906
+91 72899 00012
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : www.jainconference.org

SHRI ALL INDIA S S JAINCONFERENCE

CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

महामंत्री की कलम से	- श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री	09
अध्यक्षीय	- श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	10-11
ऑडिटिड अकाउंट्स वर्ष 2022-23	-	12-21
कला और जीवन का संबंध	- आचार्य सम्राट् श्री आनंदऋषिजी म. सा.	22
प्रभु महावीर के 2550वें...	- आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनिजी म. सा.	23-24
आचार्य श्री अमोलकऋषिजी म.सा.	- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति	25-27
खद्दरधारी, कर्नाटक गजकेसरी...	- उप-प्रवर्तक पू. श्री श्रुतमुनिजी म.सा.	28
शुचि कर्मों की दीपमालिका...	- महासाध्वी पू. श्री सुधाकंवरजी म. सा.	29-31
अध्यात्म जगत के क्रांतिकारी...	- श्री एम. पदमचंद कांकरिया जैन	32
और चाँद मुस्कुरा दिया...	- श्री सुनील बाफना जैन	33-35
विवाह संबंध में देरी...	- श्री गौतमचंद दुग्गड़ जैन	36-37
अहिंसा और पर्यावरण संरक्षण	- डॉ. एन. के. खींचा	38-39
उपकारों से उपकृत...	- श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन	40
राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा अक्टूबर माह में सम्पन्न ...		41
समाचार प्रकाश		42-49
शोक समाचार		50

अस्वीकरण : *लेखक / प्रेषक द्वारा लिखे गए विचारों, सामग्री एवं विषय व उसकी प्रमाणिकता के लिए सम्पादक या जैन कॉन्फ्रेंस जिम्मेदार नहीं है। यह आवश्यक नहीं है कि सभी रचनाएं मौलिक एवं आवश्यकतानुसार सन्दर्भ-युक्त हों। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।*

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश',
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुमतिप्रकाशजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विनयमुनिजी म. सा. 'भीम'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री ज्ञानप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना - चेयरमैन	98505 00015
02.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
03.	श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
04.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
06.	श्री राजीव जैन, दिल्ली	98110 42280
07.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
08.	श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
09.	श्री रमेश भण्डारी जैन, इंदौर	93021 03817
10.	श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
11.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010
12.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
13.	श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98100 45440
14.	श्री कांतिकुमार लोढा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
15.	डॉ. अमित राय जैन, बड़ौत	98373 94448

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2021-23

राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई 98410 30035

राष्ट्रीय चेयरमैन
श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली 98100 45440

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री पारसमल मोदी जैन, मुंबई 98200 60530

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
श्री अशोककुमार मेहता जैन, सूरत 98251 19082

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद 98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली 98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली 93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर 98930 32777
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक 94239 62818

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, घोड़नदी, पुणे 98222 42795
श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली 98111 97000
श्री रमेश भंडारी जैन, इंदौर 93021 03817
श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर 92264 72284
श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर 93412 32573

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री दिनेशकुमार भलगट जैन, चेन्नई 98402 64888

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, बैंगलोर 98440 11908
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, सिकंदराबाद 92463 61008
श्री सुरेशकुमार लुनावत जैन, चेन्नई 98842 21003
श्री संजीव जैन, लुधियाना 98140 25325
श्री संदीप कुमार जैन, सिरसा, हरियाणा 92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुजफ्फरनगर 98370 67082
श्री प्रशांत जैन, नई दिल्ली 98101 21450
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली 99113 00888
श्री डिपिन जैन, इंदौर 78699 99222
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली 98113 58110
श्री सुरेश कुमार जैन, दिल्ली 98112 39872
श्री गुमानसिंह पीपारा जैन, कोलकाता 98300 30774
श्री राजेन्द्र नथमल मुथा जैन, जालना 70206 36161
श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन, मालेगांव 98239 55515
श्री संजय बोथरा जैन, नासिक 98225 96781
श्री बालासाहेब धोका जैन, पुणे 98220 39728
श्री किशोर खाबिया जैन, मुंबई 98200 48618
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, शिरूर-घोड़नदी 87882 35525
श्री रमेश कुमार पुनमिया जैन, पालघर 94030 09639
श्री शंभूलाल ललवाणी जैन, अहमदाबाद 99783 47800

राष्ट्रीय महामंत्री
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली 98110 75336

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98841 67400

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष
श्री जसवन्त जैन, नई दिल्ली 98104 35108

जीवन प्रकाश योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पुणे 98505 00015
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चन्द्रशेखर लुंकड़ जैन, पुणे 98903 01635

मानव सेवा योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेश मुथा जैन, बैंगलोर 93428 63447
राष्ट्रीय मंत्री : श्री ज्ञानचंद लोढ़ा जैन, बैंगलोर 98452 21302

जीव दया योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री हुकमीचंद कोठारी जैन, सूरत 70161 20162
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई 98201 11839

ज्ञान प्रकाश योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय बाफना जैन, अहमदनगर 83298 28560
राष्ट्रीय मंत्री : श्री किशोरकुमार दलाल जैन, बैंगलोर 94480 81348

वैय्यावच्च योजना
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर 99455 41200
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री जे. रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर 93425 97955
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु 98220 31788

अल्पसंख्यक योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेन्द्र ओस्तवाल जैन, ब्यावर 98280 54770
राष्ट्रीय मंत्री : एडवोकेट डॉ. अर्पित छाजेड़ जैन, ब्यावर 92149 63701

विहारधाम योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नन्दकुमार भटेवरा जैन, कोल्हार भगवती 98606 67000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनसुखलाल गुगले जैन, घोड़नदी (शिरूर) 98224 47166

राष्ट्रीय मंत्री
श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर 93412 21774
श्री महेन्द्र कुमार मुणोत जैन, बैंगलोर 98450 73276
श्री संपतराज कोठारी जैन, सिकंदराबाद 92461 58452
श्री धर्मीचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98410 59884
श्री राजेन्द्रकुमार बोहरा जैन, चेन्नई 98406 00003
श्री मुकेश कुमार जैन 'सांड', मोहाली 93185 93599
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना 98150 20661
श्री सुभाष जैन 'लिली', मुक्तसर 98146 99393
श्री रविंदर जैन, पानीपत 98960 92861
श्री पुष्कर जैन, मेरठ 94122 06374
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली 93509 16150

राष्ट्रीय मंत्री :

श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री अंबालाल लोढ़ा जैन, नाथद्वारा	95295 40800
श्री सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इंदौर	99818 50900
श्री वीरप्रकाश जैन, कोलकाता	93310 35450
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	92258 31765
श्री सुरेश गुंदेचा जैन, रत्नागिरी	98817 41101
श्री बंसीलाल सूर्या जैन, सूरत	93280 97429
श्री प्यारचन्द कोठारी जैन, सूरत	93745 35686

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री :

एडवोकेट श्री दिलीप खिंवसरा जैन, औरंगाबाद	94222 05434

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री गौतमचंद धारीवाल जैन, बैंगलोर	98451 49433
श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
श्री दीपक सूर्या जैन, भीलवाड़ा	98293 47007
श्री राजेन्द्र महाजन जैन, इंदौर	98267 23161
श्री आनंद सुराणा जैन, जालना	94222 18747

राष्ट्रीय संगठन मंत्री :

श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री दिनेश सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री मदनलाल जैन 'शामड़ी', दिल्ली	98737 76896
श्री कांतिलाल जैन, उदयपुर	93220 90220
श्री प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	73877 86999

:: प्रांतीय अध्यक्ष ::

श्री पुखराज मेहता जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98446 77725
श्री सुरेन्द्र कुमार कटारिया जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98480 38094
श्री गौतमचंद कटारिया जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	96770 43212
श्री अरुण जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98155 66885
श्री विनय कुमार जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	83968 00000
श्री अमितराय जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	98373 94448
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री निर्मल पोखरना जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94141 67544
श्री ललित कुमार छल्लाणी जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	98260 27927
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मदनलाल कुंदनमल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	98223 76898
श्री सुनील बाफना जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	98505 67010
श्री जयंतिलाल कुकड़ा जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98251 35744

:: प्रांतीय महामंत्री ::

श्री सुरेंद्रकुमार आंचलिया जैन (कर्नाटक)	98861 86528
श्री राजेश भंडारी जैन (तेलंगाना)	79871 61614
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री अजय जैन (हरियाणा)	94161 22219
श्री भास्कर जैन (उत्तर प्रदेश)	98972 33877
श्री संजय जैन (दिल्ली)	99900 22221
श्री शांतिलाल मारु जैन (राजस्थान)	94141 48875
श्री संतोष धारीवाल जैन (मध्य प्रदेश)	98060 44110
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री संतोष चोरड़िया जैन (महाराष्ट्र)	99225 44744
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन (मुंबई-पुणे)	93710 89896
श्री आकाशकुमार मादरेचा जैन (गुजरात)	94287 45537

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क राशि

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1500/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 2500/-
पति या पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य है तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने के लिए	रु. 1000/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता 12 वर्ष	रु. 1000/-

दिनांक 30 एवं 31 अक्टूबर 2023 को जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय प्रबंध समिति, रा. कार्य. समिति एवं साधारण सभा में जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता शुल्क राशि निम्न प्रकार से सर्वसम्मति से पारित की गई :-

व्यक्तिगत	रु. 1000/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 1500/-
पति या पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य है तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने के लिए	रु. 1000/-

नोट :

जैन प्रकाश पत्रिका को केवल ई-पत्रिका (E-Magazine) आजीवन ऑलाइन प्रेषित की जाएगी।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - महिला शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-23

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

सौ. पुष्पा कीमती जैन, हैदराबाद	99639 11219
सौ. रतनबाई मेहता जैन, बैंगलोर	93412 32857
सौ. नीलम ओसवाल जैन, दिल्ली	93112 45440
सौ. बेबीबेन डागलिया जैन, मुंबई	93203 39560

राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. पुष्पा राजेन्द्र गोखरु जैन, भीलवाड़ा	94141 84005

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. विमल सुदर्शन बाफना जैन, पुणे	88050 80002

राष्ट्रीय उपाध्यक्षा

सौ. जतनबाई कांकरिया जैन, हैदराबाद	92901 19207
सौ. संतोष आच्छा जैन, बैंगलोर	97406 17633
सौ. संतोष बोहरा जैन, बैंगलोर	99005 36047
सौ. पुष्पा संचेती जैन, चेन्नई	84282 24444
सौ. बबीता रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 92862
सौ. सुमित्रा जैन, दिल्ली	99715 65853
सौ. संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
सौ. इंदु जैन, कोटा	94608 50363
सौ. लाडजी मेहता जैन, भीलवाड़ा	87641 22999
सौ. संतोष सिंघवी जैन, भीलवाड़ा	94138 60891
सौ. आशा साम्भर जैन, नीमच	94066 59600
सौ. अंतरदेवी बाघमार जैन, कलकत्ता	93317 15789
सौ. अनिता लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	98816 88988
सौ. कल्पना धारीवाल जैन, नाशिक	82081 74668
सौ. लता पगारिया जैन, पुणे	90287 36831
सौ. सुरेखाजी कटारिया जैन, पुणे	94223 27041
सौ. स्वीटी चण्डालिया जैन, सूरत	94083 52726
सौ. प्रभावती मुथा जैन, पुणे	94220 79908
सौ. लाडजी सिंघवी जैन, मुंबई	90049 67285

राष्ट्रीय महामंत्री

सौ. आरती (प्रेमलता) बुरड़ जैन, बैंगलोर	99451 24476

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा

सौ. सुषमा धाकड़ जैन, पालघर	99878 52656

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्षा

सौ. मीना तातेड़ जैन, वलसाड़	81419 17775

राष्ट्रीय मंत्री

सौ. चन्द्रकला कोठारी जैन, हैदराबाद	97040 66066
सौ. प्रेमा बोहरा जैन, बैंगलोर	99001 38806
सौ. सपना सिंघवी जैन, बैंगलोर	99168 38735
सौ. पिंकी सुराणा जैन, चेन्नई	97907 44221
सौ. आरती सुराणा जैन, सिकन्द्राबाद	86883 60361
सौ. मोनिका जैन, लुधियाना	78886 65752
सौ. वीणा जैन, दिल्ली	78389 00380
सौ. मधु लोढा जैन, भीलवाड़ा	99284 59794
सौ. सुशीला लोढा जैन, ब्यावर	99500 21210
सौ. नैना नौलखा जैन, उदयपुर	94148 08250
सौ. पुष्पा बागरेचा जैन, कोटा	90790 88691
सौ. भारती चंगेड़िया जैन, इचलकरंजी	99223 59071
सौ. तृप्ति जैन, अहमदनगर	89999 18531
सौ. नन्दा कांकरिया जैन, औरंगाबाद	88888 91223
सौ. कंचन सिंघवी जैन, मुंबई	92243 31981
सौ. सुशीला लोढा जैन, मुंबई	99203 67337
सौ. मन्जू सिंघवी जैन, मुंबई	99307 55670
सौ. सूरज वीरवाल जैन, उदयपुर	94604 45044
सौ. अंजू सिरोया जैन, वापी	98241 40086

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

सौ. प्राची मुगदिया जैन, औरंगाबाद	82755 13888

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

सौ. ज्योति गांधी जैन, अहमदनगर	96578 67583
सौ. शोभा जैन, इन्दौर	91793 49386
सौ. बसंती चोपड़ा जैन, बैंगलोर	97396 73194
सौ. वन्दना छाजेड़ जैन, भीलवाड़ा	98280 82728
सौ. शुभ आराधना हिंगड़ जैन, अहमदाबाद	99249 93749

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

सौ. नगीना मण्डोत जैन, बैंगलोर	99002 81067
सौ. संगीता छल्लानी जैन, बैंगलोर	97311 06160
सौ. ममता वडाला जैन, मुंबई	98672 62323
सौ. सरोज ढेलावत जैन, निम्बाहेड़ा	94610 09650
सौ. मधु जैन, लुधियाना	84374 14111

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. मन्जू तातेड़ जैन, मुंबई	77381 69999
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. पिंकी नाहर जैन, मुंबई	97571 95533

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. आजाद सांड जैन, चंडीगढ़	93564 52299
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. सुमित्रा बनवट जैन, सूरत	96019 59035

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता लोढा जैन, नाथद्वारा	75973 47706
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. बरखा कोठारी जैन, सूरत	99049 30907

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. दर्शना तलेसरा जैन, विरार	80803 74525
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. प्रतिभा डांगी जैन, नवी मुंबई	98198 17719

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता राजावत जैन, मुंबई	99878 54838
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. मनीषा कागरेचा जैन, मुंबई	98920 11619

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. शिल्पा पामेचा जैन, उदयपुर	94146 82462
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. नयना सिसोदिया जैन, उदयपुर	91662 11412

विहार धाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. ज्योति गांधी जैन, नारायणगाँव, पुणे	98811 23552
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. लीला खरवड़ जैन, कलवा मुम्ब्रा, ठाणे	99696 02393

जैन प्रकाश मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख भेजने हेतु आग्रह

व्हाट्सएप्प नं. - 90197 31906 / 72899 00012 अथवा ई-मेल - aissjc1906@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - युवा शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-23

राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री पदम चन्द आच्छा जैन, बैंगलोर	99800 59421

निवर्तमान राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री सागर सांखला जैन, पुणे	88880 90999

राष्ट्रीय वरिष्ठ युवा उपाध्यक्ष :

श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111

राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष :

श्री राकेश लुंकड़ जैन, बैंगलोर	99802 84908
श्री भरत कोठारी जैन, बैंगलोर	93796 77127
श्री विशाल बोरा जैन, सिकन्द्राबाद	95500 02225
श्री विमल खाबिया जैन, चेन्नई	99403 25649
श्री अभय कोठारी जैन, चेन्नई	99629 17371
श्री श्रेयांस जैन, लुधियाना	98557 99909
श्री अंश रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 93861
श्री नितिन राय जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री दीपक जैन, दिल्ली	93508 70065
श्री लोकेश धाकड़ जैन, उदयपुर	98280 50143
श्री विकास जैन, सूरत	93770 41606
श्री दिनेश हंसमुख बंबकी जैन, दापोली	94223 82620
श्री अंकित अनिल संचेती जैन, नासिक	83800 00208
श्री प्रितेश प्रदीप गादिया जैन, शिरूर	98229 82244
श्री वैभव तातेड़ जैन, इन्दौर	98264 81900
श्री सागर प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	90289 59000

राष्ट्रीय युवा मंत्री :

श्री मुकेश बाबेल जैन, बैंगलोर	98444 13227
श्री नवीन कावड़िया जैन, हैदराबाद	98851 85598
श्री आशीष रांका जैन, चेन्नई	98400 85846
श्री कुणाल जैन, लुधियाना	99140 14010
श्री सुमित जैन, करनाल	98124 75000
श्री पुनीत जैन, गाज़ियाबाद	95013 67207
श्री पानिल पोखरणा जैन, उदयपुर	97722 67444
श्री अश्विन गांग जैन, रतलाम	94245 29556
श्री कमलेश मादरेचा जैन, अहमदाबाद	98258 08580
श्री किशोर बाफना जैन, बैंगलोर	98865 02636
श्री लोकेश जैन, दिल्ली	98682 03098
श्री जयप्रकाश बोकाड़िया जैन, उदयपुर	96022 64277
श्री विपुल ढाबरिया जैन, इन्दौर	94250 64243
श्री केतन दुग्गड़ जैन, पुणे	98605 56838
श्री सुनील कुमार बम्ब जैन, बैंगलोर	98455 53001
श्री सुभाष डंक जैन, हुबली	99002 69151

राष्ट्रीय युवा प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री अजय धोका जैन, बैंगलोर	96118 28888
श्री अमित लोढा जैन, औरंगाबाद	78758 88811
श्री नीलेश कांकरिया जैन, बाघोली	97672 94085
श्री विनय जैन, लुधियाना	95010 03864

राष्ट्रीय युवा संगठन मंत्री :

श्री राकेश बोहरा जैन, बैंगलोर	98443 27580
श्री एस. विमलेश छल्लाणी जैन, चेन्नई	98401 15333
श्री मुकेश जैन, लुधियाना	98156 09170
श्री गौरव कोठारी जैन, वडगांवशेरी	90284 43181

राष्ट्रीय युवा महामंत्री :

श्री प्रमोद सिंघी जैन, बैंगलोर	98441 17766

राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष :

श्री मनोज सोलंकी जैन, बैंगलोर	98441 62930

राष्ट्रीय युवा सह-कोषाध्यक्ष :

श्री प्रवीण सिंघी जैन, बैंगलोर	98443 31009

राष्ट्रीय युवा कानूनी सलाहकार मंत्री :

श्री विशाल छल्लाणी जैन, बैंगलोर	98861 84743

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - प्रवीण बोहरा जैन, सोजत सिटी	98295 00211
राष्ट्रीय मंत्री - श्री विवेक जैन, रोहतक	95412 12000

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विपुल जैन, दिल्ली	98117 40074
राष्ट्रीय मंत्री - श्री कपिल बडाला जैन, नाथद्वारा	94141 71246

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विशाल बोहरा जैन, बैंगलोर	89041 41411
राष्ट्रीय मंत्री - श्री अभिषेक डुंगरवाल जैन, बैंगलोर	89705 60900

प्रांतीय युवा अध्यक्ष :

श्री विकास कोठारी जैन, कर्नाटक	98458 50155
श्री पवन कटारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98491 59292
श्री आनंद बालेचा जैन, तमिलनाडु	98413 68579
श्री दीपांशु जैन, पंजाब	88470 11852
श्री प्रवेश जैन, हरियाणा	92116 00001
श्री सुविनित कुमार जैन, उत्तर प्रदेश	87917 03503
श्री दिनेश जैन, दिल्ली	99996 58350
श्री निर्मल सिंघवी जैन, राजस्थान	94141 63710
श्री संदीप गोखरु जैन, मध्य प्रदेश	94250 63976
श्री रोशन चोरड़िया जैन, महाराष्ट्र	94031 51617
श्री बाबूलाल बडोला जैन, मुंबई-पुणे	79776 61263
श्री मंजीत कोठारी जैन, गुजरात	93745 44138

प्रांतीय युवा महामंत्री :

श्री मनोज बोहरा जैन, कर्नाटक	98444 68490
श्री श्रेणिक राज डफारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98490 95411
श्री मनीष रांका जैन, तमिलनाडु	98402 74685
श्री अभय जैन, पंजाब	99156 01005
श्री अतिमुक्त जैन, हरियाणा	94660 51369
श्री विकास जैन, उत्तर प्रदेश	93193 13717
श्री विनीत जैन, दिल्ली	98993 64620
श्री मनीष दाणी जैन, राजस्थान	94148 31484
श्री प्रदीप छल्लाणी जैन, मध्य प्रदेश	98260 87909
श्री पवन कटारिया जैन, महाराष्ट्र	92267 58479
श्री मनोज मेहता जैन, मुंबई-पुणे	93211 11837
श्री आशीष पोखरणा जैन, सूरत	93745 44139

महामंत्री की कलम से

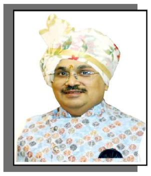

- अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस
E-mail: ajvk1973@gmail.com

आदरणीय पाठकगण, आत्मीय बंधुओं !
सादर जय जिनेन्द्र ।

जैन कॉन्फ्रेंस की गत राष्ट्रीय प्रबंध समिति, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति एवं साधारण सभा का सफलतम आयोजन जैन भवन दिल्ली में संस्था सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं सदस्यों की उपस्थिति में सभी विचारों, सुझावों के साथ सम्पन्न हुआ। मैं इन तीनों सभाओं में उपस्थित सभी महानुभावों द्वारा प्रदान किये गये विचारों, सुझावों के लिए हार्दिक धन्यवाद और आभार प्रेषित करता हूँ।

पावापुरी में चातुर्मास रत भगवान महावीर के बारे में पहले ही से सभी निर्ग्रंथ उपासकों को पता है कि कार्तिक अमावस्या वह निश्चित तिथि है जब भगवान महावीर निर्वाण को प्राप्त हो जायेंगे। इसी कारण नौ मल्लवी और नौ लिच्छवी, ये 18 गणराज्यों के राजाओं के साथ अन्यान्य उपासक वर्ग भी भगवान का अंतिम सान्निध्य पाने की लालसा लिए समवशरण में उपस्थित थे। लगातार 48 घंटों तक भगवान ने अपना अंतिम उपदेश सभी मुमुक्षुओं तक पहुँचाया।

पाप और पुण्य से संबंधित 55-55 अध्ययन सुनाकर उत्तराध्ययन सूत्र के 36 अध्ययन पूरे करके 37वें अध्ययन में माता मरुदेवी से संबंधित विवरण सुना रहे थे और तभी अपने योगों का निरोध करते हुए वे सदा सर्वदा के लिए जन्म-मृत्यु-रोग व शोक की आकुलता-व्याकुलता से मुक्त होकर परम धाम निर्वाण को प्राप्त हो गए।

भगवान के निर्वाण की पूर्व सूचना तो स्वयं भगवान ने ही सूचित कर दी थी। देवताओं की चारों जातियों के जमावड़े ने अमावस की काली रात में भी पावापुरी को जगमगाहट से भर दिया। पूरा आकाश देव विमानों और उनके प्रकाश से जगमग हो रहा था। वहीं देवी-देवताओं की देह ज्योति से सारा वातावरण और भी अधिक दिव्यता से भरा-पूरा हो गया था।

गौतम स्वामी को भगवान ने निर्वाण की संध्या से पहले ही देव शर्मा पुरोहित को उपदेश प्रदान करने हेतु भेज दिया था और प्रातः होने से कुछ पूर्व ही उन्हें भगवान के निर्वाण की सूचना मिलती है, गौतम स्वामी की मोहरात्रि अमावस की कालरात्रि की भांति समाप्त हो गयी और प्रतिपदा के उज्ज्वल सूर्य की भांति कैवल्य सूर्य प्रकाशित हो उठा। जैन परम्परा में दीपावली का पर्व त्याग, जप, तप, स्वाध्याय और ध्यान-साधना के साथ मनाये जाने का यही अर्थ है कि हम भी प्रभु वीर के निर्वाण पथ पर गौतम स्वामी की तरह मोह का क्षय करके जन्म-मृत्यु के पार चले जाएं।

स्थानकवासी परम्परा के पुरोधा पुरुष महामना, महान क्रांतिकारी, वीर लोंकाशाह का नाम स्वर्णिम अक्षरों में समेट कर रखने योग्य है। पाखंड और धर्म विरुद्ध आचरण के युग में सद्धर्म और सम्यक् ज्ञान का आपने प्रकाश फैलाया। पहले एक श्रावक के रूप में धर्म का शंखनाद किया और उसका परिणाम ये रहा कि 40 से अधिक श्रावकों ने आपकी प्रेरणा से साधु जीवन अंगीकार करके एक नए युग का सूत्रपात किया। बाद में स्वयं आपने भी साधु जीवन अंगीकार कर धर्म का प्रसार किया। अंत में अलवर की एक विरोधी स्त्री ने विष मिश्रित लड्डू पारने में दिए जिसके कारण आपका स्वर्गवास समताभाव और संथारापूर्वक हुआ। महावीर प्रभु से लेकर लोंकाशाह तक की यह पतित पावनी जिनधारा लोक कल्याण का पथ प्रशस्त कर रही है। हम सब का भी कर्तव्य है कि अपनी ज्ञान दृष्टि में मुक्ति का निश्चय कर सभी कर्मजालों के बंधन से मुक्त हो जायें।

मैं, जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से आप सभी को भगवान महावीर निर्वाणोत्सव एवं दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। आशा करता हूँ कि आप सभी ने दीपोत्सव हर्षोल्लास एवं सादगी के साथ मनाया होगा।

इस माह में पूज्यवर्ग के जन्म, दीक्षा एवं पुण्य प्रसंग के उपलक्ष्य में उन सभी के श्रीचरणों में सादर श्रद्धा वन्दन ।

अपना आलेख पूर्ण करने से पूर्व आपसे प्राप्त हुए सहयोग से प्रेरित होकर कहना चाहूँगा कि

प्रयत्न करने से कभी न चूकें, हिम्मत नहीं तो प्रतिष्ठा नहीं, विरोधी नहीं तो प्रगति नहीं, जो पानी में भीगेगा वो सिर्फ लिबास बदल सकता है लेकिन जो पसीने में भीगता है वो इतिहास बदल सकता है ।।

अध्यक्षीय उद्गार

सत्यमेव जयते

E-mail : rjachallani@gmail.com

– आनंदमल जवरीलाल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष - जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

अहिंसा के अवतार, करुणा-सिंधु, शासनपति, सिद्धात्मा भगवान महावीर को कोटिशः वन्दन! भगवान महावीर का 2550वाँ निर्वाणोत्सव वर्ष प्रारंभ हो गया है।

जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा एवं साधारण सभा अक्टूबर के अंत में सोत्साह सम्पन्न हुई। जिसमें सत्य की विजय हुई, असत्य की हार हुई। असत्य भले ही मुखर हो सकता है, रावण की तरह दस मुख वाला हो सकता है, बलवान भी हो सकता है। आज हम रावण को जलाते हैं, परन्तु अपने भीतर के रावण को जब तक नहीं हटायेंगे, तब तक कोई फायदा नहीं। आज राष्ट्र, समाज में रावणों की एक फौज तैयार हो रही हैं, जो अपना ही हित चाहती है, किस्सा कुर्सी के अंतर्गत जनता को गुमराह कर, बेवकूफ बनाकर, सत्य को परास्त करने का भरसक प्रयास करती हैं परन्तु जनता जनार्दन अगर कुछ ठान ले तो बल, शक्ति, पैसा, मद, अहंकार सभी एक ही पल में तिरोहित हो जाते हैं।

याद रखिये सत्य एक बार भले ही निराश हो सकता है, उसका हौंसला भले ही पस्त हो सकता हैं किंतु सत्य को समझ लेने पर, सत्य को जीवन में आचरित कर लेने पर सदैव सत्य की ही विजय होती है। दशहरा पर्व यही सन्देश देता है कि धनबल, सत्ताबल, अहंकार सदा स्थायी नहीं रहते, किंवदंती आज भी प्रचलित हैं कि "रावण का भी अहंकार चकनाचूर हो गया तो तुम किस बाग की मूली हो।"

आज लोग सत्ता तथा पद को पाने के लिये अनैतिक हथकण्डे अपनाते हैं, जाल बिछाते हैं किंतु उसी जाल में फंसकर एक दिन वे खुद ही धराशायी हो जाते हैं। कुर्सी हेतु दूसरों के लिये गड्ढ़ा खोदते हैं, एक दिन वे खुद ही उस गड्ढे में गिर जाते हैं। आज लाखों रूपये ही नहीं अपितु करोड़ों रूपये के सब्जबाग लोगों को दिखाकर, लुभावने नारे लगाकर, खिला-पिलाकर जनता को भले ही एक बार दिग्भ्रमित करलें किंतु जनता बेवकूफ नहीं हैं। आज जनता प्रबुद्ध हो चुकी है, अपना हित-अहित स्वयं जानती है, उसे पद-पैसा-प्रलोभन से कोई लेना-देना नहीं है, जनता जाग चुकी है, विवेकवान बन चुकी है, अपना भला स्वयं सोचने लगी है। जनता को आप कब तक दिग्भ्रमित करते रहेंगे। जनता ही चुनती है, जनता ही पद से उतारती है। अतः आम जनता को कमजोर न समझें।

मैं उन सभी का आभारी हूँ, जिन्होंने जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय प्रबंध समिति, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति एवं साधारण सभा में संविधान-संशोधन के पक्ष में मतदान दिया तथा कोर्ट-कचहरी जाने वाले लोगों को वोटिंग से करारा जबाब दिया। मेरे कार्यकाल में हुए कार्यों को सभी महानुभावों ने देखा है। व्यक्ति हित नहीं, संस्था हित ही सर्वोपरी है- यह सोच-समझकर ही सभी ने अपनी विवेक-बुद्धि के बल पर मतदान किया है। अभी तो यह संस्था के हित में परिवर्तन की शुरूआत भर है।

साथ ही साथ वे दोहरे चेहरे भी उजागर हुए है, जिन्हें विशेष कारणों से, असंवैधानिक गतिविधियों में लिप्त होने के कारण पदमुक्त कर दिया गया था। सभा ने उन्हें सुनने मात्र से नकार दिया। उपरोक्त सभाओं के समापन के पश्चात् दूसरे ही दिन से अनेक पत्र मुझे प्राप्त हो रहे हैं, पहले भी हुए हैं, जिसमें संविधान संशोधन को सुशासन का परिचायक बताया गया है, सभी उत्फुल्ल हैं, उनमें नया जोश, नवीन चेतना, जागृति का शंखनाद तथा साहस का संचार हुआ है।

सभी पदाधिकारियों, सातों योजनाओं के राष्ट्रीय अध्यक्षों एवं भारतवर्ष के 77 हजार संस्था के आजीवन सदस्यों, पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं के विश्वास एवं साथ से ही यह कार्य सकुशल एवं ऐतिहासिक हो पाया है, मैं तहेदिल से आप सभी का कृतज्ञता के साथ आभार-अभिनंदन करता हूँ।

आपातकाल में "किस्सा कुर्सी का" (लेखक श्री अमृतजी नाहटा, पाली) ये "किस्सा" पुस्तक के रूप में इतना चर्चित हुआ कि जनता ने इंदिरा गांधी की अजेय सत्ता को भी उखाड़ कर, नकार कर जनता पार्टी को दिल्ली की सत्ता पर काबिज करवा दिया। यह समय है, समय किसी को बक्शता नहीं है, समय किसी का भी नहीं हुआ है। समय पर जो कार्य हुआ, वही अपना है, बाकी सब सपना है। आम सभी ने हमारे काम को परखा, हमारे पदाधिकारियों की सजगता को देखा और प्रचंड बहुमत प्रदान किया, एतदर्थ धन्यवाद!

भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव वर्ष में जैन धर्म के सिद्धान्तों का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करें ताकि भारत ही नहीं दुनियां की आम जनता भी जैन धर्म के मौलिक सिद्धान्तों से परिचित हों तथा जैन धर्म के सिद्धान्तों से अनुप्राणित हो। हमें किसी का धर्म परिवर्तन नहीं कराना है अपितु जैन धर्म के प्रति जन-जन को श्रद्धाप्लावित करवाना है। जन-जन में

जैन धर्म के प्रति श्रद्धा जग गई तो वह जैन धर्म के सिद्धान्तों से अवश्य ही अनुप्राणित हो जायेगा। आप अपने 5 जैनेतर मित्रों के मध्य, जैन-सिद्धान्तों के प्रचार का सद्प्रयास करें।

वर्तमान में तृतीय विश्व युद्ध के जो बादल मंडरा रहे हैं तथा युद्ध की विभिषिका दिनानुदिन बढ़ती ही जा रही है, यह चिंता एवं चिंतन का विषय है। अभी रूस-युक्रेन युद्ध डेढ़ वर्ष से चल रहा है, वह युद्ध थमा ही नहीं कि हमास-इजराइल में युद्ध शुरू हो गया। सभी लामबन्द तो हैं पर युद्धविराम की कोई बात नहीं कर रहा, युद्ध में दोनों पक्ष के निरपराध मानवों के खून से धरती रक्तरंजित हो रही है। ऐसे में भगवान महावीर के समता दर्शन एवं अहिंसा के सूत्र, युद्ध की विभिषिका को रोक सकते हैं। हमारी किसी से कोई दोस्ती या दुश्मनी नहीं है, इन्सान, इन्सान के खून का प्यासा बन बैठा है, दोनों ओर अहिंसा के सूत्रों की सौरभ महकें इस हेतु आप विश्व शांति की कामना के साथ नमोक्कार मंत्र का जाप करें।

एक बात से और आपको आगाह करना चाहूँगा कि आज जैनों के मन्दिर एवं आस्था के केन्द्रों पर अन्य धर्मियों की नजर है। वे इनकी लोकप्रियता, आस्था एवं दर्शनार्थियों की अपार भीड़ को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें अपना बनाना चाहते हैं। हम भले ही अलग-अलग मान्यता वाले जैन हैं परन्तु जैन एकता के नाम पर हम सबको एक छत्र तले आना ही होगा, तभी हमारी संस्कृति, संस्कार एवं आस्था के केन्द्र बच पायेंगे, अन्यथा हम देखते रह जायेंगे एवं विधर्मी हमारी फूट में लूट मचाते रहेंगे। जैन धर्मावलंबी ''विश्व कल्याण की कामना'' एवं ''मित्ती मे सव्व भुएसु'' की भावना से अनुप्राणित है। अभी-अभी गिरनारजी को लेकर जो जैनेतर संतों, बंधुओं ने जो टिप्पणी की, वह बहुत ही चिंताजनक है- ''जो भी इस पहाड़ पर संत आयेंगे, हम उसके सिर काट देंगे।'' क्या हिंदू धर्म यही सिखाता है? हिन्दू धर्म भी ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना वाला है। फिर कुछेक सिरफिरे संत या लोगों की ऐसी विद्रुप विचारधारा क्यों? आज की विचारधारा कल कार्य रूप में भी परिणत हो सकती है, अतः कुत्सित विचारधारा को त्याग, सद्भावना की मिसाल पेश करें। जैनियों ने राम मन्दिर के समय साथ दिया, ढाँचे को गिराने से लेकर वर्तमान में हो रहे मंदिर-निर्माण तक की भूमिका में जैनों का अपार सहयोग रहा है। वर्तमान में भी दो जैन महाअधिवक्ता-पिता एवं बेटा मिलकर ही हिन्दुओं के तीर्थ-रक्षा के लिये केस लड़ रहे हैं।

सभी संत-सतीवृन्द के चातुर्मास धर्म-ध्यान एवं जप-तप-स्वाध्याय-जिनवाणी-श्रवण के साथ सम्पन्न होने जा रहे हैं। संत-सतीवृन्द अपनी आगे की विहार यात्रा के लिए प्रस्थित होंगे। संत-सतीवृन्द की सेवा-वैयावच्च का पूरा लाभ लेते हुए ''विहार-सेवा'' में अपनी सहभागिता निभायें। टीम वर्क के साथ आगामी विहार-यात्राओं को अपने-अपने क्षेत्रों में संचालित करें ताकि संयमी आत्माओं को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। संत-सतीवृन्द भी विहार यात्रा में सड़क पर निर्धारित साइड में ही विहार करें ताकि कोई अनहोनी घटना घटित न हो। आप सभी की विहार यात्राएं निर्विघ्न सम्पन्न होती रहें- यही मेरी ओर से हार्दिक मंगलकामना।...

जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारियों, समस्त योजनाध्यक्षों, सभी प्रांतीय पदाधिकारियों से आग्रह करना चाहूँगा कि वे अपनी-अपनी योजनाओं के अंतर्गत और अधिक कार्यशील-गतिशील बनें ताकि जनकल्याण-परोपकार एवं स्वधर्मी बंधु की सहायता के अधिकाधिक कार्य कर सकें।... आप सभी को भगवान महावीर निर्वाणोत्सव एवं दीपमालिका पर्व की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। सादर जय जिनेन्द्र ! ❖❖

जैन प्रकाश जनवरी 2024 मासिक पत्रिका का अंक
''जैन कॉन्फ्रेंस विशेषांक'' विषय पर आधारित

सभी साधु-साध्वीवृन्द, प्रबुद्ध इतिहासकारों, रचनाकारों व लेखकों को हर्षपूर्वक सूचित किया जाता है कि जैन प्रकाश मासिक पत्रिका का जनवरी 2024 का अंक 'जैन कॉन्फ्रेंस' की 'स्वर्णिम तथा यशोपूर्ण विकास यात्रा' पर आधारित होगा। अतः स्थानकवासी जैन श्रमण-श्रमणी वर्ग एवं सुविज्ञ पाठक वर्ग से अनुरोध है कि आप जैन कॉन्फ्रेंस के वर्तमान और इतिहास से जुड़े हुए अपनी सुनहरी यादों को एवं क्षणों को संक्षिप्त में कलमबद्ध करते हुए (एक पृष्ठ) हमें निम्न माध्यमों से प्रेषित करने का श्रम करें। हमारा प्रयास रहेगा कि सभी को उचित सम्मान और स्थान प्रदान किया जाए।

ई-मेल : aissjc1906@gmail.com व्हाट्सएप्प : 90197 31906
श्री ऑल इंडिया एस. एस. जैन कॉन्फ्रेंस
जैन भवन, 12 शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110001

FORM NO. 10BB (A.Y. 2023-24 onwards)

[See rule 16CC and Rule 17B]

Audit report under clause (b) of the tenth proviso to clause (23C) of section 10 and sub-clause (ii) of clause (b) of sub-section (1) of section 12A of the Income-tax Act, 1961, in the case of a fund or trust or institution or any university or other educational institution or any hospital or other medical institution which is required to be furnished under clause (b) of the tenth proviso to clause (23C) of section 10 or a trust or institution which is required to be furnished under sub-clause (ii) of clause (b) of section 12A

Acknowledgement Number -490824000311023

We have examined the balance sheet of **ALL INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE** [name of the fund or trust or institution or any university or other educational institution or any hospital or other medical institution] as at **31-MAR-2023** and the Income and Expenditure account or Profit and Loss account for the year ended on that date are in agreement with the books of account maintained by the said fund or trust or institution or university or other educational institution or hospital or other medical institution.

We have obtained all the information and explanations to the best of **our** knowledge and belief which are necessary for the purposes of the audit.

In **our** opinion, proper books of account have been maintained at the registered office of the above named fund or trust or institution or university or other educational institution or hospital or other medical institution at the address mentioned at row 11 of the Annexure :

In our opinion and to the best of **our** information and according to explanations given to **us**, the particulars given in the Annexure are true and correct subject to following observations or qualifications, if any-

Sl.no	Observations/ Qualifications
1	Preparation of Financial Statement & Tax Audit is the responsibility of Management. We have Checked this data on test check basis on the basis of information/ documents provided to us.

In our opinion and to the best of **our** information, and according to information given to **us**, the said accounts give a true and fair view-

(i) in the case of the balance sheet, of the state of affairs of the above named **trust** as on **31-MAR-2023** ; and

(ii) in the case of the Income and Expenditure account or Profit and Loss account, of the income and application/ profit or loss of its accounting year ending on **31-MAR-2023**

subject to the following observations/qualifications-

Sl.no	Observations/ Qualifications
	No Records Added

The prescribed particulars are annexed hereto.

Accountant Name	**PRAMOD KUMAR GUPTA**
Membership Number	**090445**
Firm Registration Number	**0011784N**

SHRI ALL INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE

Trust Registration No. S-721, Date of Registration : 26/03/1954

Address of Trust :- JAIN BHAWAN, 12, SHAHEED BHAGAT SINGH MARG, GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001 Phone No.: 011-23365420

BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH, 2023

LIABILITIES	AMOUNT(Rs)	AMOUNT(Rs)	ASSETS	AMOUNT(Rs)	AMOUNT(Rs)
Trusts Funds or Corpus			**Immovable Properties :- Sch -V**		
Capital Fund	8,764,651		WDV Block as at 01-04-2022	19,324,682	
Corpus Fund - Sch I	41,485,741	50,250,392	Add : Additions during the year	-	
			Add: Depreciation Reversed	3,863,050	
Intended Membership Fees Advance: Sch-II		253,000	Less : Depreciation for the year	-	23,187,732
Liabilities :- Sch-IV					
For Duties & Taxes	13,205				
For Security Deposit Others Advance	187,550		**Fixed Assets :- Sch - V**		
For Expenses Payable	1,650,574		Balance as per last Balance Sheet	1,733,128	
For Sundry Credit Balances	1,168,532	3,019,861	Add : Additions During the year	2,236,320	
			Less : Sales During the year	-	
Income & Expenditure Account :-			Less : Depreciation for the year	474,638	3,494,810
Balance as per last Balance Sheet	7,287,335				
Add: Opening Balance Earmarked Funds	4,614,343		**Investments :- SCH - VI**		
Add: Amount receipts in Earmarked Funds	10,504,517		Fixed Deposit & Bonds	41,504,400	
Less: Amount Exp. From Earmarked Funds	(17,631,609)		Interest Accrued and Reinvested	2,207,523	43,711,923
Add: Transfer from Corpus Fund	21,789,054				
Add: Depreciation Reversed	3,863,050				
Add : Excess of Income over			**Loans (Secured or Unsecured)**		
Expenditure Account	(2,130,485)	28,296,205	**Advances - Sch- VII**		
			To Security Deposit	86,581	
			To Others	1,222,503	
					1,309,084
			Tax Deducted at Source - Sch-VII		
			A.Y. 2023-24	274,134	
				-	274,134
			Cash & Bank Balances Sch-VII		
			Bank Balance	9,809,646	
			Cash Balance with Manager	32,129	9,841,775
	Total `	**81,819,458**		**Total `**	**81,819,458**

As per our audit report of even date attached

For Kumar Pramod & Associates
Chartered Accountant
Firm Reg. No. : 011784N

For Shri All India Shwetamber Sthanakwasi Jain Conference

sd/-
CA Pramod Kumar Gupta
Partner
M.No: 090445
Place: New Delhi
Date: 31-10-2023
UDIN: 23090445BGSORO1814

sd/-
R. J. Anandmul
National President

sd/-
Atul Jain
National General Secretary

sd/-
M.Padam Kankaria
National Treasurer

SHRI ALL INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE

Trust Registration No. S-721, Date of Registration : 26/03/1954

Address of Trust :- JAIN BHAWAN, 12, SHAHEED BHAGAT SINGH MARG, GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001 Phone No.: 011-23365420

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH 2023

	EXPENDITURE	AMOUNT(Rs)	AMOUNT(Rs)		INCOME	AMOUNT(Rs)	AMOUNT(Rs)
To	**Expenditure in respect of Properties**			By	Service Income		180,000
	Rates, Taxes, Cesses	64,877		By	Rent		89,433
	Repairs & Maintanance	13,446,403					
	Salaries - Rest House & House Keeping	1,448,655		By	Donation in Cash or Kind		
	Leave Encashment & Gratuity-Rest House	89,594			A) General Donation	5,907,996	
	Staff Welfare - Rest House & House Keeping Staff	570,335			B) Earmarked Donation (Building Repair Fund)	11,113,600	
	Water Charges	234,567					17,021,596
	Electricity Expenses	859,023					
	House Keeping Expenses	339,622		By	Bank Interest		83,145
	T.V.Cable Expenses	11,253	17,064,329				
				By	Int. on Fixed Deposit		2,897,225
To	**Administrative Expenses**						
	Audit Fees	70,000		By	Int. on Income Tax Refund		22,432
	Lrgal & Professional Fees	482,820					
	Repairs. & Maintenance	661,344		By	Shrut Samvardhan Samiti Sales		157,940
	Scooter Expenses	23,939					
	Salaries - Administrative & Security Staff	1,517,297		By	Balance Written Off		162,057
	Bank Charges	14,095					
	Cartage Expenses	3,630					
	Conveyance	28,190					
	Depreciation	474,638					
	Locker Rent (Canara Bank)	2,490					
	Postage & Courier Expenses	179,133					
	Refreshment Expenses	28,430					
	Telephone & Internet charges	98,290					
	Tours & Travelling	72,606					
	Printing & Stationery	132,424					
	Meeting Expenses	538,627					
	Short & Excess	2,105					
	Diwali Expenses	16,500					
	Interest on TDS & GST	1,347	4,347,905				
To	Veer Lokashah Samman Expenses		152,560				
To	Shrut Samvardhan Samiti Purchase		1,001,192				
To	Shrut Samvardhan Samiti Expenses		178,327				
To	Excess of Income & Surplus		(2,130,485)				
		Total	**20,613,828**			**Total**	**20,613,828**

For Shri All India Shwetamber Sthanakwasi Jain Conference

As per our audit report of even date attached

For Kumar Pramod & Associates

Chartered Accountant

Firm Reg. No. : 011784N

sd/-	sd/-	sd/-	sd/-
CA Pramod Kumar Gupta	R. J. Anandmul	Atul Jain	M.Padam Kankaria
Partner	National President	National General Secretary	National Treasurer

M.No: 090445

Place: New Delhi

Date: 31-10-2023

UDIN: 23090445BGSORO1814

SHRI All INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE
JAIN BHAWAN,12, SHAHEED BHAGAT SINGH MARG, GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001
AS AT - 31.03.2023

		SCHEDULE - I
Trusts Funds or Corpus		**AMOUNT (Rs.)**
Balance as per last Balance Sheet	57,740,920	
Add: Advance Membership Fee	-	
Add: Donation Received	4,788,000	
	62,528,920	
Add: Life Membership Fee	745,875	
	63,274,795	
Less; Transferred to Income & Exoenduture A/c	21,789,054	41,485,741
TOTAL AMOUNT (Rs.)		**41,485,741**

		SCHEDULE - II
Intended Membership		
Balance as per last Balance sheet	515,050	
Add:- Receipts during the year	1,229,700	
Less: Advance Membership Fess Trft to Corpus Fund	-	
Less: Transfer to Corpus Life Membership Fees	(745,875)	
Less: Transfer to Jain Prakash	(745,875)	253,000
TOTAL AMOUNT (Rs.)		**253,000**

SHRI All INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE
JAIN BHAWAN,12, SHAHEED BHAGAT SINGH MARG, GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001
AS AT - 31.03.2023

SCHEDULE - III

Earmarked Donation		**AMOUNT (Rs.)**
Jeevan Prakash Yojana		
Receipt During the Year	3,517,200	
Add:- Transfer from Unspent Nomination Donation Yojna	-	3,517,200
Jeev Daya Yojna		
Receipt During the Year	2,313,142	
Add:- Transfer from Unspent Nomination Donation Yojna	-	2,313,142
Nomination Donation Yojna		
Receipts During the Year	-	
Less: Expenses during the year	-	
Less: Transfer to various Yojna`s during the year	-	-
Gyan Prakash Yojna		
Receipts During the Year	-	
Add:- Transfer from Unspent Nomination Donation Yojna	-	-
Manav Sewa Yojna		
Receipts During the Year	601,900	
Add:- Transfer from Unspent Nomination Donation Yojna	-	601,900
Vayavach Yojana		
Receipts During the Year	3,285,600	
Add:- Transfer from Unspent Nomination Donation Yojna	-	3,285,600
Vihar Dham Yojna		
Receipts During the Year	800	
Add:- Transfer from Unspent Nomination Related Yojna	-	800
Jain Prakash Yojna Yojna		
Receipts During the Year	785,875	
Add:- Transfer from Unspent Nomination Donation Yojna	-	785,875
TOTAL AMOUNT (Rs.)		**10,504,517**

Expenditure for Objects	
Jeevan Prakash	3,759,314
Jeev Daya Yojna	2,598,204
Gyan Prakash Yojna	79,616
Manav Seva Yojna	824,788
Vaiyavach Yojna	4,032,278
Vihar Dham Yojna	-
Jain Prakash	6,337,409
TOTAL AMOUNT (Rs.)	**17,631,609**

SHRI All INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE

JAIN BHAWAN, 12, SHAHEED BHAGAT SINGH MARG, GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001

AS AT - 31.03.2023

SCHEDULE - IV

DUTIES & TAXES	AMOUNT (Rs.)
T.D.S.Payable	13,142
GST Payable	-
Int. On TDS & GST	63
TOTAL AMOUNT (Rs.)	**13,205**

SUNDRY CREDITORS	AMOUNT (Rs.)
Jai Bharat Printing Press	351,114
Leela Devi Mour	81,312
PVR & Co	35,000
All India S.S. Jain Conference- Punjab	50,000
Babu Khan	20,660
Bhupender Kumar (photographer)	13,000
Arun Kumar	26,480
IGD Services Pvt Ltd	20,748
DD Express	2,241
Harshit Trading Co.	13,848
Punjab Sanitary Store	5,652
J.J.Paper Sales	32,731
Netglobe Service	2,010
Senior Post Master, Lodi Road	60,813
Classic Enterprises	31,360
Cool Point	44,004
Devraj	36,480
Dev Swaroop	10,000
Dinesh & Co	58,750
Fairdeal Enterprises	18,202
Gunmala Printers	2,500
Jainul	492
Laxmikant Vishwakarma	33,088
Sanskar	54,690
Shivam Courier Service	1,237
S.S.Communication	8,460
Sunil Electric Company	6,052
Toner Technology	2,006
Vardhman Timber Trader	20,602
Vinod Sharma	100,000
Shadab & Co	25,000
TOTAL AMOUNT (Rs.)	**1,168,532**

EXPENSES PAYABLE	AMOUNT (Rs.)
Electricity Charges	35,179
Audit Fee Payable	35,000
Water Charges	524,448
Vayavacch Yojna (Sewak)	693,960
Leave Encashment	54,813
Salary Payable	272,089
Telephone Expenses Payable	2,085
Rest House Expenses Payable	33,000
TOTAL AMOUNT (Rs.)	**1,650,574**

SECURITY DEPOSITS AND OTHER ADVANCES	AMOUNT (Rs.)
Security Deposits Received	54,800
Election 2021-23	47,250
Election 2018-20	85,500
TOTAL AMOUNT (Rs.)	**187,550**

SHRI ALL INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE, NEW DELHI

JAIN BHAWAN, 12, SHAHEED BHAGAT SINGH MARG, GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001

SCHEDULES ANNEXED TO AND FORMING PART OF BALANCE SHEET AS AT 31st March 2023

FIXED ASSETS AND DEPRECIATION CHART

SCHEDULE-V(Amount in Rs)

Particulars	Rate (%)	W.D.V. AS 01-04-2022	Depreciation Reversed during 2022-23	Addition >180 days	<180 days	Sale /written off	Total Amount Rs.	Amount in Rs. Depreciation for the Yr.2022-23	Written off	W.D.V as 31-03-2023
A. Immovable Properties										
LAND AT MUJAFFARNAGAR	0.0%	1,031,050		-	-	-	1,031,050	-	-	1,031,050
LAND AT LUDHIANA	0.0%	1,215,000		-	-	-	1,215,000	-	-	1,215,000
CONF. BHAWAN BLDG.	5.0%	4,648,093	3,693,641	-	-	-	8,341,734	-	-	8,341,734
JAIN BHAWAN(ADVANCE TO L&DO)	0.0%	12,229,000		-			12,229,000	-	-	12,229,000
DURLABH VYAKHYAN HALL	5.0%	66,248	100,653	-	-	-	166,901	-	-	166,901
BIRD HOSPITAL	5.0%	135,291	68,756	-	-	-	204,047	-	-	204,047
Sub Total		**19,324,682**	**3,863,050**	**-**	**-**	**-**	**23,187,732**	**-**	**-**	**23,187,732**
B. Other Fixed Assets										
FURNITURE & FIXTURES	10.0%	487,057		207,900	28,377	-	723,334	70,915	-	652,419
ELECTRICAL FITTING	10.0%	41,257		-	-	-	41,257	4,126	-	37,131
ELECTRICAL EQUIPMENT	15.0%	132,668		10,982	-	-	143,650	21,548	-	122,102
OFFICE EQUIPMENT	15.0%	18,566		-	-	-	18,566	2,785	-	15,781
KITCHEN EQUIPMENT	15.0%	55,875		57,550	504,900	-	618,325	54,881	-	563,444
SURGICAL & MEDICAL EQUIPMENT	15.0%	9,289		-	-	-	9,289	1,393	-	7,896
FAX & PHOTOCOPY MACHINE	15.0%	14,416		-	-	-	14,416	2,162	-	12,254
T.V.	15.0%	100,867		-	-	-	100,867	15,130	-	85,737
AIR CONDITIONER	15.0%	465,734		500,000	819,611	-	1,785,345	206,331	-	1,579,014
WATER COOLER	15.0%	29,352		-	-	-	29,352	4,403	-	24,949
AQUAGUARD	15.0%	8,365		-	-		8,365	1,255	-	7,110
REFRIGERATOR	15.0%	15,412		-	-	-	15,412	2,312	-	13,100
EPBAX SYSTEM & TELEPHONE	15.0%	91,327		-	-	-	91,327	13,699	-	77,628
INVERTOR , UPS & STABILIZER	15.0%	32,700		-	-	-	32,700	4,905	-	27,795
SCOOTER	15.0%	10,169		-	-	-	10,169	1,525	-	8,644
SECURITY SYSTEM_CAMERAS	15.0%	88,560		-	-	-	88,560	13,284	-	75,276
FAN	15.0%	17,565		-	-	-	17,565	2,635	-	14,930
BIOMATRIX MACHINE	15.0%	7,289		-	-	-	7,289	1,093	-	6,196
SCANNER	15.0%	1,422		41,000	-	-	42,422	6,363	-	36,059
COMPUTERS & SOFTWARE	40.0%	38,384		66,000	-	-	104,384	41,754	-	62,630
PNG GAS PIPELINE	3.2%	66,854			-	-	66,854	2,139	-	64,715
Sub Total		**1,733,128**		**883,432**	**1,352,888**	**-**	**3,969,448**	**474,638**	**-**	**3,494,810**
Grand TOTAL		**21,057,810**		**883,432**	**1,352,888**	**-**	**27,157,180**	**474,638**	**-**	**26,682,542**
PREVIOUS YEAR FIGURES		**21,564,264**		**-**	**22,000**	**-**	**21,586,264**	**528,454**	**-**	**21,057,810**

As per our audit report of even date attached

For Kumar Pramod & Associates

Chartered Accountant

Firm Reg. No. : 011784N

For Shri All India Shwetamber Sthanakwasi Jain Conference

sd/-

CA Pramod Kumar Gupta

Partner

M.No: 090445

Place: New Delhi

Date: 31-10-2023

UDIN: 23090445BGSORO1814

sd/-	sd/-	sd/-
R. J. Anandmul	**Atul Jain**	**M.Padam Kankaria**
National President	National General Secretary	National Treasurer

SHRI ALL INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE NEW DELHI

JAIN BHAWAN, 12, SHAHEED BHAGAT SINGH MARG, GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001

DETAILS OF INVESTMENT IN FDR'S/BONDS & INTEREST AS ON 31st March 2023

SCHEDULE-VI

Amount in Rs

							A	B	C	D	A to D Total
S.NO	**Description of Securities**	**Bond/FDR No.**	**Date**	**Investment Amount Rs.**	**Rate of Int.%**	**Date of Maturity**	**Actual Interest Received as on 31 Mar-2023**	**Interest Accrued as on March 23**	**Interest Re-Invest**	**TDS**	**Total Interest Recd + Accrued + Re-Invest Amt Rs.+ TDS Deducted**
1	BANK OF BARODA	06230300028007	05.01.2022	156,030.00	5.1	05.01.2025	-	-	8,210	-	8,210.00
2	CANARA BANK.	0270401000914/6	03.12.2022	101,383.00	5.7	03.06.2025	-	-	4,865	-	4,865.00
3	HDFC LTD	4764764	02.07.2022	2,500,000.00	6	02.07.2023	-	-	100,972	11,220	112,192.00
4	HDFC LTD	4786784	08.09.2022	3,000,000.00	6.15	08.09.2023	-	-	93,260	10,363	103,623.00
5	HDFC LTD	4787699	12.09.2022	2,500,000.00	6.15	12.09.2023	-		76,202	8,466	84,668.00
6	HDFC LTD	1268007	24.04.2020	1,000,000.00	7.1	24.04.2023			63,900	7,100	71,000.00
7	HDFC LTD	1268045	07.07.2020	800,000.00	6.26	07.07.2023	-		45,072	5,008	50,080.00
8	HDFC LTD	1268124	12.07.2020	400,000.00	6.26	12.07.2023	-		22,536	2,504	25,040.00
9	HDFC LTD	1306154	11.10.2020	500,000.00	5.95	11.10.2023	-		26,775	2,975	29,750.00
10	HDFC LTD	4814580	31.10.2022	2,500,000.00	6.35	31.10.2023			59,499	6,611	66,110.00
11	HDFC LTD	1452581	11.01.2022	1,575,381.00	5.65	11.04.2023			81,000	9,001	90,001.00
12	HDFC LTD	1477157	28.03.2022	2,295,735.00	5.75	28.06.2023			118,872	13,208	132,080.00
13	HDFC LTD	1477133	28.03.2022	2,168,195.00	5.75	28.06.2023			112,268	12,474	124,742.00
14	HDFC LTD	1475014	20.03.2022	3,188,776.00	5.75	20.06.2023			165,300	18,367	183,667.00
15	HDFC LTD	1475045	20.03.2022	2,551,023.00	5.75	20.06.2023			132,240	14,693	146,933.00
16	HDFC LTD	1477188	31.03.2022	2,040,590.00	5.75	30.06.2023			105,616	11,735	117,351.00
17	HDFC LTD	1477195	31.03.2022	1,785,518.00	5.75	30.06.2023			92,414	10,268	102,682.00
18	HDFC LTD	1475090	20.03.2022	2,551,020.00	5.75	20.06.2023			132,240	14,693	146,933.00
19	HDFC LTD	4842802	12.12.2022	800,000.00	6.85	12.12.2025			15,032	1,671	16,703.00
20	HDFC LTD	1471326	08.03.2022	1,600,000.00	5.75	08.06.2023			83,082	9,231	92,313.00
21	HDFC LTD	1475076	20.03.2022	2,700,000.00	5.75	20.06.2023			139,963	15,551	155,514.00
22	HDFC LTD	4862174	21.01.2023	1,000,000.00	6.85	21.01.2024	-		11,824	1,313	13,137.00
23	HDFC LTD	307192	21.06.2022	2,000,000.00	5.85	20.06.2023	-		81,933	9,103	91,036.00
24	HDFC LTD	1470741	02.03.2022	1,500,000.00	5.75	02.06.2023			77,955	8,662	86,617.00
25	CENTRAL BANK.	3421459089	31.12.2022	134,623.00	6.5	31.12.2023	-	-	7,222	-	7,222.00
26	CENTRAL BANK.	3194403541	04.08.2022	156,126.00	5.25	03.08.2023	-	-	8,034	-	8,034.00
	Total Investments In FDR/BOND'S during the year			**41,504,400.00**			**-**	**-**	**1,866,286.00**	**204,217.00**	**2,070,503.00**
1	CENTRAL BANK.	3194403541/4	04.08.2022	149,422.00	5				6,704		6,704.00
2	HDFC LTD	1196979	12.12.2022	800,000.00	7.41		37,090	-		4,121	41,211.00
3	HDFC LTD	1221088	30.11.2022	1,200,000.00	7.45		53,420	-		5,935	59,355.00
4	HDFC LTD	1350407	03.04.2022	2,500,000.00	5.6		690	-		77	767.00
5	HDFC LTD	1377659	26.06.2022	2,000,000.00	5.6		22,369	-		2,486	24,855.00
6	HDFC LTD	1400670	20.03.2022	3,075,290.00	5.6		54,780	-		6,086	60,866.00
7	HDFC LTD	1404863	24.08.2022	2,500,000.00	5.6		50,054	-		5,562	55,616.00
8	HDFC LTD	1419061	29.09.2022	2,600,000.00	5.6		64,981	-		7,221	72,202.00
9	HDFC LTD	1419078	29.09.2022	2,500,000.00	5.6		62,483	-		6,942	69,425.00
10	HDFC LTD	1479180	31.03.2022	2,626,000.00	5.6		53,391	-		5,932	59,323.00
11	HDFC LTD	298502	05.01.2023	1,000,000.00	5.35		37,332	-		4,149	41,481.00
12	CENTRAL BANK.	3421459089/2	31.12.2022	128,727.00	5.5				5,896		5,896.00
13	CANARA BANK.	0270401000914/5	03.06.2022	83,721.00	6.2		-	-	17,662	-	17,662.00
	Matured FDR/BOND'S during the year			**21,163,160.00**			**436,590.00**	**-**	**30,262.00**	**48,511.00**	**515,363.00**
								-	**1,896,548.00**	**252,728.00**	**2,585,866.00**
	OPENING FDR			45,349,428.00				-	874,950.00		
	TRANSFER ENTRIES DURING THE YEAR			-				-	-		
	ADD NEW FDR			17,318,132.00				-	1,875,830.00		
	LESS-MATURED FDR			21,163,160.00				-	543,257.00		
	NET BALANCE AS PER BALANCE SHEET			**41,504,400.00**				**-**	**2,207,523.00**		**-**

SHRI All INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE

JAIN BHAWAN, 12, SHAHEED BHAGAT SINGH MARG, GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001

	AS AT - 31.03.2023 SCHEDULE - VII
SECURITY DEPOSIT	**AMOUNT (Rs.)**
Indian Oil Corporation (Gas Cylinder)	9,900
Indraprastha Gas Limited (Gas Pipeline)	72,226
N.D.M.C - Electricity	4,455
TOTAL AMOUNT (Rs.)	**86,581**

AMOUNT RECEIVABLE	**AMOUNT (Rs.)**
Prepaid Expenses - 2022-23	92,328
Salary Advance	43,191
J.P Receivable	21,000
Rent Receiveable	31,077
Sundry Debtors	33,000
Shiv Shanker	300,500
Shri All India S.S. Jain Conference-Maharashtra	53,300
Shri All India S.S. Jain Conferenc-Tamil Nadu	5,600
Shri All India S.S. Jain Conferenc-Gujarat	1,100
Goods & Service Tax Input	641,407
TOTAL AMOUNT (Rs.)	**1,222,503**
Tax Deducted at Source AY 2023-24	274,134

CASH & BANK BALANCES	**AMOUNT (Rs.)**
Cash In Hand	32,129
BANK BALANCES	
Bank of Baroda	13,628
Canara Bank-0059	223,941
Canara Bank- Jeevan Prakash Yojna	12,130
Canara Bank - Rent	174,259
Central Bank of India -740	5,676,749
Central Bank of India-Jeev Daya Account.	29,641
Central Bank of India -Life Membership Account.	54,915
Central Bank of India- RH. Account	57,803
Central Bank of India- B.H. Account	517,965
Central Bank of India - Manav Sewa Yojana Account	23,582
Canara Bank-342	88,242
Central Bank of India - Women Wing	22,196
Canara Bank - Youth Wing	45,977
Canara Bank - Vyavacch Yojna	733,815
Central Bank of India - GPY	6,346
Central Bank of India - MSY- Auto Sweep	35,000
Central Bank of India - LM- Auto Sweep	545,000
Central Bank of India - General- Auto Sweep	615,000
Central Bank of India - RH - Auto Sweep	550,000
Canara Bank J.P.Y - Auto Sweep	97,149
Canara Bank General- Auto Sweep	8,659
Canara Bank Rent- Auto Sweep	21,985
Canara Bank Youth Wing - Auto Sweep	125,665
Central Bank of India - JD- Auto Sweep	130,000
TOTAL AMOUNT (Rs.)	**9,809,646**

SHRI All INDIA SHWETAMBER STHANAKWASI JAIN CONFERENCE
JAIN BHAWAN, 12, SHAHEED BHAGAT SINGH MARG, GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001

AS AT - 31.03.2023

SCHEDULE-VIII

Particulars	Salary & Other Allowances	Leave Encashment	Total Amt. Rs.
Rest House Staff	817,996	13,267	831,263
Administration Staff	1,106,670	41,546	1,148,216
Security Staff	369,081	-	369,081
Housekeeping Staff	1,277,321	-	1,277,321
TOTAL AMOUNT (Rs.)	**3,571,068**	**54,813**	**3,625,881**

SCHEDULE-IX

REPAIR AND MAINTENANCE - BUILDING	AMOUNT (Rs.)
N & L Infratech Pvt Ltd	570,465.00
Rest House Repair and Maintenance	12,742,896
Renovation Expenses	71,000
Renovation Expenses 18,27,28	2,970
Renovation Expenses - Hall	49,146
Sofia Design	(501)
Staircase	10,428
TOTAL AMOUNT (Rs.)	**13,446,404**

REPAIR AND MAINTENCE - OTHERS	AMOUNT (Rs.)
Office Exp. & Maintenance	358,373
Epbax System Repair & Maintenance	20,833
Security System Repair & Maintenance	12,976
Water Cooler Repair & Maintenance	21,897
Website Maintenance	18,000
A.C Repair & Maintenance	157,938
Computer & Inverter	75,434
Repair & Maintenance Charges	2,500
TOTAL AMOUNT (Rs.)	**667,951**

कला और जीवन का सम्बन्ध

- आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषिजी म.सा.

किसी भी विषय को व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने का नाम कला है। मानव जीवन के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। आज से ही नहीं, प्रागैतिहासिक काल से - भगवान ऋषभदेव के युग से विविध कलाएँ मानव जीवन को सुन्दर ढंग से यापन करने हेतु जीविका का साधन रही हैं। उनमें महिलाओं की 64 और पुरुषों की 72 कलाएँ शामिल होती हैं। महिलाओं की कलाओं में संगीत, नृत्य, वाद्य, पाक आदि कलाएँ प्रमुख हैं तो पुरुषों की 72 कलाओं में युद्ध, वाणिज्य, चित्र, साहित्य आदि कलाएँ प्रमुख हैं। ये सब कलाएँ जीवन को सरस, सरल और सुखपूर्वक व्यतीत करने में सहायक होती थीं। जीवन को सँवारने, विशुद्ध और विकसित करने के लिए भी इन कलाओं का होना आवश्यक माना जाता था। भारतीय संस्कृति के उन्नायक महर्षि भर्तृहरि ने कला के अभाव में मनुष्य को पशु की संज्ञा देते हुए कहा है -

साहित्य-संगीत-कलाविहीनः ।
साक्षात् पशुः पुच्छ-विषाणहीनः ।।

साहित्य और संगीत कला से विहीन पुरुष सींग व पूँछ से रहित साक्षात पशु हैं। वास्तव में कला की आराधना-साधना मानव जीवन को सुसंस्कृत और सरस बनाने के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है। जीवन को सुन्दर, सरल, सरस और मधुर बनाना हो तो कला की आराधना के अतिरिक्त कोई चारा नहीं है।

इस प्रकार कला का मानव-जीवन से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध जाने-अनजाने में ही हो गया। आगे चलकर लोग संगीत, नृत्य, वाद्य, चित्र आदि ललित कलाओं को ही कला कहने के आदी हो गये, बाकी की कलाएँ या तो शिल्प में गतार्थ हो गईं या फिर व्यवसाय के अन्तर्गत हो गईं। पश्चिम के सम्पर्क से ललित कलाओं को छोड़कर सिर्फ कला जीवन यापन की एक पद्धति या शैली बन गई, जीवन-शोधन की एक प्रक्रिया हो गई। इससे भी आगे बढ़कर कला भोग-विलास के साधनों एवं उपकरणों तथा सौन्दर्य प्रसाधन के अर्थ में प्रयुक्त होने लगी परन्तु यह कला की विकृति है, कला की विसंगति है, जो कला को बदनाम करने के लिए तथा जीवन को विकृत बनाने के लिए है।

इस प्रकार कला का मानव जीवन से सम्बन्ध होने पर भी वह हितावह नहीं, जीवन के लिए श्रेयस्कर नहीं।

वास्तव में ज़िन्दगी जीना भी एक कला है। कई लोगों को यह अजीब-सा लगता है कि ज़िन्दगी तो हम स्वाभाविक रूप से जी ही रहे हैं, पर वह कला कैसे? मैं कहता हूँ-क्या कुत्ते, बिल्ली आदि पशुओं का सा जीवन जीना अच्छा है? या शानदार, सरस एवं मधुर जीवन जीना अच्छा है?

सभी मनुष्यों के पास प्रायः हाथ, पैर, आँख, नाक, कान जीभ आदि अवयव रहते हैं, गँवारों के पास भी, अमीरों के पास भी और सुसंस्कृत शिक्षितों के पास भी किन्तु गँवार या फूहड़ व्यक्ति जीवन को कलात्मक ढंग से जीना नहीं जानते और न ही वे अमीर जानते हैं, जिनके घर में पैसे की कमी नहीं, कार है, बंगला है, ऐशो-आराम की सभी वस्तुएँ हैं पर यह सब होते हुए भी ऐसा लगता है कहीं कोई कमी है। कहीं न कहीं शृंखला की कड़ियाँ टूटी हुई हैं। साधन सम्पन्न होते हुए भी जीवन का सच्चा आनन्द नहीं। किसी तरह से जी रहे हैं। रो-झोंककर जीना उत्कृष्ट रूप से जीना नहीं है। उत्कृष्ट एवं परिष्कृत रूप से जीना ही वास्तव में कलात्मक जीवन है।

बहुत से लोग जिनमें धनिक, शिक्षित आदि भी हैं, उत्कृष्ट और परिष्कृत जीवन जीना नहीं जानते। अधिकांश लोग ऊँचे दर्जे के रहन-सहन, सौन्दर्य प्रसाधन, आमोद-प्रमोद, हास-विलास, इन्द्रिय-सुखभोग के साधन, स्वादिष्ट भोजन, व्यंजन आदि की प्रचुरता के साथ जीने को उत्कृष्ट कोटि का जीवन मानते हैं। बहुत से लोग ज़िन्दगी को विविध उपकरणों से सजाये संवारे रहने को ही कला समझते हैं, परन्तु बाह्य प्रसाधनों द्वारा जीवन की सजा-सज्जा या शृंगार किये रहना कला नहीं है, यह तो मनुष्य की लिप्सा है, जिसे पूरा करने में उसे एक झूठे संतोष का आभास होता है।

फलतः वह मान बैठता है कि वह ठीक ढंग से जी रहा है। कला तो वास्तव में वह मानसिक वृत्ति है, जिसके आधार पर साधनों की कमी में भी ज़िन्दगी को खूबसूरती से जीया जा सकता है। खाने-पीने, चलने, उठने-बैठने, मल-मूत्र त्याग आदि के सभी साधन पशुओं और मनुष्यों को प्रायः एक-से मिले हैं। इसमें क्या विशेषता हुई कि मनुष्य ने खाने-पीने, पहनने, रहने और के ढेर सारे साधन इकट्ठे कर लिये हैं, उससे क्या लाभ? विचारणीय है । ❖❖

प्रभु महावीर के 2550वें निर्वाण महोत्सव पर विशेष आध्यात्मिक चिंतन

- आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

जीव की यात्रा अनादिकाल से चल रही है। मिथ्यात्व व मोह के वशीभूत जीव हर जन्म में एक ही भूल करता है। निवास स्थान को अपना मानकर उस पर अपनी मिलकियत जमाता है। उसकी सुरक्षा के लिए अनेक उपाय करता है और उस पुद्‌गल के पिण्ड का चिंतन, चिंता एवं उसके व्यक्तित्व को बनाने के लिए जीवन में अधिकांश समय पुद्‌गल के पिण्ड को यानि निवास स्थान को देता है। निवास स्थान को स्वस्थ, मस्त व शक्तिशाली बनाने के लिए समय देता है। अच्छे से अच्छा भोजन देता है। उसे ज्ञानवान बनाने के लिए जीवन के 25 वर्ष अध्ययन करवाता है।

वह कुछ नहीं था, उसे कुछ बनाने में व्यक्तित्व अर्थात जो एक पुद्‌गल का पिण्ड इस जीव को रहने के लिए मिला था, उसका नाम, पद, प्रतिष्ठा व संस्कार देकर संस्कारित करने में, जीवन का अधिकांश समय देता है। इसमें उसका स्वर्णिम बचपन जो आनंद, शांति व सुख से सहज भरा था वह तनाव, अशांति, प्रतिस्पर्धा व कर्त्ता-भोक्ता भाव के संस्कारों में बीतता है और युवावस्था आने पर शरीर में प्राकृतिक रूप से संस्कारवश मिथ्यात्व मोह के वशीभूत जड़ को पंचेन्द्रियों के माध्यम से विषयों की ओर आकर्षण पैदा होता है और वह सुख के आकर्षण में विषयों को भोगता है। क्षणिक सुख के आभास को सुख मान बैठता है और बार-बार विषय सुख भोगने की चाह करता है।

सुखाभास मन में उत्पन्न होने वाले विचार, विकार के रूप में परिवर्तित होते हैं। उन्हीं विकारी भावों के वशीभूत उसकी श्रद्धा हो जाती है कि सुख पुद्‌गलों में है और वह पुद्‌गलों में सुख खोजता है। घर को अपना मानने वाला पर में सुख खोजता है और अनादिकाल के मिथ्यात्व व मोह के संस्कार उसे उसी ओर आकर्षित करते हैं। जीवन का अधिकांश समय वह विषय भोग जुटाने, भोगने में लगा देता है परन्तु उसे सुख की जगह दु:ख, शान्ति की जगह अशान्ति, स्वास्थ्य के स्थान पर रोग, आदि-व्याधि, उपाधि से गुज़रना पड़ता है।

आदि-व्याधि, उपाधि : **आदि** मन की अर्थात मन अशांत बैचेन व तनावग्रस्त हो जाता है।

व्याधि - शरीर पर रोग आने लगते हैं।

उपाधि - धन-सम्पत्ति परिवार पर प्रतिष्ठा को लेकर चिंताएं सताती हैं, तब वह सोचने को मजबूर हो जाता है। वह पुद्‌गल के चिंतन में आर्त्त-रौद्र ध्यान करता है। क्या मैं मनुष्य जीवन में इसीलिए आया हूँ ?

सयं सम्बुद्धाणं - मेरे जीवन का ध्येय क्या है? मैं कहाँ से आया हूँ? मैं यहाँ से आगे कहां जाऊंगा? आदि प्रश्न उसके मन में उठते हैं, उसकी प्रज्ञा उसे जागृत करती है। ऐसे समय में कोई साधक **'सयं सम्बुद्धा'** स्वयं-स्वयं से बोध पाता है और वह अपने भीतर अन्तर्मुखी हो जाता है। किसी को अरिहंत प्रभु या सद्‌गुरु निमित्त बनते हैं और वह आत्मार्थ की ओर मुड़ जाता है। मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से आया हूँ? मेरा लक्ष्य क्या है? और उसे बोध होता है। मैं व्यक्ति नहीं हूँ, मैं अस्तित्व हूँ। जहाँ अस्तित्व है, वहाँ व्यक्तित्व नहीं। जहाँ व्यक्तित्व है, वहाँ अस्तित्व नहीं। वह निवासी व निवास स्थान में भेद करता है, निवासी जीव है, अस्तित्व जीव का है। इस ब्रह्माण्ड में अनंत जीव हैं, उनमें अस्तित्व मुझ जीव का है। यात्रा साधक की है, यात्रा जीव की है। मैं जीव एक यात्री हूँ, मुझमें आनंद, शान्ति व ज्ञान भरा है, मेरा लक्ष्य सिद्धशिला है। ऐसा बोध जिस जीव को हो जाता है, वह एक साधक बन जाता है।

प्रभु महावीर की यात्रा - भगवान महावीर का जीव यात्रा करते हुए नयसार के भव में जीवन यापन करता है और उदय कर्म के अधीन एक संयोग संतों का होता है। उसमें सहयोगी एक नियम बनता है कि मैं सन्तों को आहार देकर भोजन करूँगा। इस नियम से उन्हें सन्तों का सत्संग मिला और उन्होंने, उन्हें जीव के स्वरूप का बोध दिया। वहीं से नयसार के भव में प्रभु महावीर के जीव को अस्तित्व का बोध हुआ और उस भव से वह यात्री अपने लक्ष्य सिद्धालय की ओर बढ़ गया। उसे जड़ जीव का भेद ज्ञान हुआ और 27 भवों की यात्रा करते हुए सम्यक्त्व को क्षायिक सम्यक्त्व बनाकर उस जीव ने वर्धमान के भव में मोह कर्म को क्षय किया।

गृहस्थ में साधना – माँ के गर्भ से बाहर आने के पश्चात घर में वैरागी की भांति रहे अर्थात् देह की देहातीत अवस्था में सम्बन्धों के बीच सम्बन्धों से परे अपने जीव को ही समय देते थे। गर्भ से ही वह जीव अपने लक्ष्य के प्रति सजग रहा तथा उन्होंने कहीं नवीन आसक्ति को जन्म नहीं दिया बल्कि घर में कमल की भांति निर्लेप रहे व उदय कर्म के अधीन 30 वर्ष परिवार में रहकर भी वे एकान्त व एकत्व को जीये। जो आत्मार्थी साधक होता है वह भीड़ में एकान्त ढूंढता है और देह व जीव दोनों में अर्थात एक जीव को केन्द्रिभूत बनाता है।

महावीर की साधना यात्रा – प्रभु महावीर ने 30 वर्ष तक सतत् वैराग्य अर्थात् 'मैं जीव अकेला, मेरे पास, मेरे अलावा, मेरा कुछ नहीं, मेरा कोई नहीं, इसको आत्मसात् किया और अपने कर्म संसार को सीमित किया और समय आने पर कर्म संसार को क्षय करने के लिए प्रव्रज्या ग्रहण की तथा साढ़े बारह वर्ष की छद्मस्थ पर्याय में एकमात्र जीव को केन्द्रिभूत किया। नाम, पद, व्यवहार गौण कर केवल निश्चय आत्मा को महत्व दिया और अनंत सुख का अनुभव छद्मस्थ काल में ही करना प्रारम्भ कर दिया, उन्हें भेदज्ञान हो गया अर्थात् जीव व अजीव का ज्ञान हो गया। जीव में अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख व अनंत शक्ति है। अपने इस सामर्थ्य को प्रकट करने के लिए उन्होंने अपना पूरा समय जीव को दिया और साधना काल में ही अनंत सुख का अनुभव किया। महावीर का मार्ग निर्वाण का मार्ग अनंत सुख का है।

प्रभु महावीर ने **'देह दुःखं महाफलं'** को आत्मसात् किया। देह के मोह को तोड़ने के लिए उन्होंने उदय कर्म के अधीन आने वाले प्रत्येक कर्म को समभाव से अर्थात् अनंत सुख का अनुभव करते हुए क्षय किया और जो कर्म उदय में नहीं आए तो विभिन्न तप व अभिग्रह कर उन कर्मों की उदीरणा की। तिर्यंच देव व मनुष्य की ओर से मिलने वाले उपसर्गों को स्वभाव में रहकर क्षय कर दिया क्योंकि प्रभु महावीर ने निमित्त को निर्दोष माना और अपनी आत्मा को मुख्यता दी। अपने ही विभाव दशा में बांधे कर्मों को क्षय किया। 22 परीषहों को समाधिपूर्वक सहन कर अपनी सहिष्णुता का परिचय दिया। अन्ततः साढ़े बारह वर्ष की घोर साधना के पश्चात् प्रभु ने केवलज्ञान प्राप्त किया और 30 वर्ष तक गौतम आदि गणधरों को आत्मबोध देकर संघ में दीक्षित किया तो चन्दना जैसी नारी जाति का उद्धार कर उन्हें तीर्थ में स्थान दिया।

चतुर्विध संघ का निर्माण कर **'तिन्नाणं तारयाणं'** के रूप में प्रभु महावीर ने सबके कल्याण के लिए, सब पर करुणा कर मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया।

दीपावली के दिन श्री उत्तराध्ययन सूत्र की वांचना देते हुए जीवा-जीव विभक्ति अर्थात् भेद व अभेद की साधना देकर कर्म सिद्धान्त को समझाकर प्रभु निर्वाण पधारे। प्रभु के निर्वाण महोत्सव पर हम निम्न रूप से प्रेरणा प्राप्त करें।

1. जीव के स्वरूप का बोध प्राप्त करें।
2. जड़ जीव के भेद को जानकर भेद ज्ञानी बनें।
3. जीव को केन्द्रित बनाएं।
4. वैरागी बनकर संसार में अनंत सुख का अनुभव करते हुए संसार सीमित करें।
5. संसार को समाप्त करने के लिए, कर्मक्षय के लिए प्रभु महावीर की तरह एकान्त व एकत्व की साधना करें।
6. जीव के अष्ट गुणों की सम्पदा प्रकट करें।
7. निमित्त को निर्दोष मानें।
8. कर्म सिद्धान्त को स्वीकार करें।
9. भेद की जगह भेद व अभेद की जगह अभेद की साधना करें।
10. मिथ्यात्व-मोह को क्षय कर कैवल्य को प्रकट करें।
11. सर्व कर्मक्षय कर निर्वाण को प्राप्त करने का लक्ष्य बनाएं।

आने वाली दीपावली से प्रभु महावीर के निर्वाण कल्याणक का 2550वाँ वर्ष प्रारम्भ होने जा रहा है। इस वर्ष में प्रभु महावीर का प्रत्येक अनुयायी फिर चाहे वह दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी या तेरापंथी हो, सभी प्रभु महावीर की ध्यान कायोत्सर्ग की साधना को आत्मसात् करें। निर्वाण कल्याणक महोत्सव में प्रभु के साधनामय जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर हम अपने जीवन को साधनामय बनायेंगे तो हमारे जीवनकाल में दुर्लभ 2550वाँ निर्वाण कल्याणक मनाना सार्थक सिद्ध होगा।

❖❖

स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति ...

आगम-स्वाध्यायी महामना पू. आचार्य श्री अमोलकऋषिजी म.सा.

जैन श्वेताम्बर स्थानवासी परम्परा में ऋषि सम्प्रदाय के विश्रुत विद्वान, श्रम परायण, आगम के विशिष्ट मर्मज्ञ आचार्य श्री अमोलकऋषिजी म.सा. ने ही सर्वप्रथम 11 आगमों का सरल हिन्दी अनुवाद करके शासन का ये अनमोल कार्य सम्पन्न कर अपना नाम इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ पर अंकित करा दिया।

जन्म एवं परिवार - श्री अमोलकऋषिजी महाराज का जन्म भोपाल (मध्य प्रदेश) में वि.सं. 1933 भाद्रपद कृष्णा 4, दिन के 9 बजे बीसा ओसवाल वंशीय परिवार में हुआ। आप मूलतः मेड़ता (मारवाड़, राजस्थान) के निवासी श्री कस्तूरचन्दजी के पौत्र और श्री केवलचन्दजी कास्टिया के सुपुत्र थे। आपकी माता का नाम श्रीमती हुलासीबाई था। आपके छोटे भ्राता का नाम श्री अमीरचन्दजी कास्टिया था।

जीवन-वृत्त - श्री अमोलकऋषिजी को बाल्यावस्था में मातृ-वियोग की संकटमयी घड़ी का सामना करना पड़ा। पिता श्री केवलचन्दजी ने मुनिजनों से बोध प्राप्त कर आर्हती दीक्षा स्वीकार कर ली। धार्मिक वातावरण श्री अमोलकऋषिजी को परिवार से सहज प्राप्त था। पिता की दीक्षा ने उन्हें संयम मार्ग के प्रति आकृष्ट किया। उन्होंने वि.सं. 1944 फाल्गुण कृष्णा 2 गुरुवार को आष्टा (भोपाल) में अल्पावस्था में ही भागवती दीक्षा ग्रहण कर संयम का मार्ग स्वीकार किया। दीक्षा के समय आपकी आयु 11 वर्ष, 5 महीना और 27 दिन थी। पण्डित मुनि श्री रत्नऋषिजी महाराज की सेवा में रह कर आपने शास्त्रीय ज्ञान उपार्जित किया। आपने गुजरात, खंभात-दक्षिण प्रान्त, बम्बई, कर्नाटक, पंजाब और राजस्थान में विचरण कर कई नवीन क्षेत्र खोलकर धर्म-जागृति का संचार किया। श्री अमोलकऋषिजी म. बुद्धिबल से सम्पन्न श्रमण थे एवं गुरुजनों के प्रति विनम्र भी थे। उन्होंने शास्त्रों का गम्भीर अध्ययन पूज्य श्री रत्नऋषिजी म. के पास किया और उनके साथ गुजरात आदि अनेक प्रदेशों में विचरण किया। श्री रत्नऋषिजी म. के साथ श्री अमोलकऋषि जी म. सात वर्ष तक रहे थे।

साहित्य - श्री अमोलकऋषिजी म. को आगमों का गम्भीर ज्ञान था। दक्षिण प्रान्त में जब आप विचरण कर रहे थे तब आपको आगम सहज उपलब्ध नहीं हुए थे, इस कारण आगम की सहज उपलब्धता पर आपने ठोस चिन्तन किया तथा साधक आगमों का गहन अध्ययन करें, इसकी भी चर्चा जब संतों से की तो यह मन्तव्य सामने आया कि आगम अर्ध मागधी प्राकृत भाषा में होने से हर साधक इसके अर्थ को ग्रहण नहीं कर सकता है, फलतः पढ़ने में अभिरुचि नहीं जगेगी। सर्व साधक के लिए आगम को सरल, ग्राह्य, सरस व रुचिपूर्ण बनाने हेतु आपने शीघ्र ही प्रखर मेधा से आगमों का हिन्दी अनुवाद करना प्रारम्भ किया।

आपने हैदराबाद और कर्नाटक प्रान्त में विचरण करते हुए आगमोद्धार का महान कार्य अतिशय श्रम, तीव्र मेधा एवं 3 वर्ष के स्वल्प समय में ही 32 ही आगमों का अनुवाद कार्य करके सम्पन्न किया। इस कार्य को करते समय आपने निरन्तर एकासन व्रत की आराधना की थी। कम से कम 7-8 घण्टे का समय प्रतिदिन इस गुरुत्तर उपकार के कार्य में लगाकर इस कार्य को सफल किया।

वि.सं. 1972 कार्तिक शुक्ला 5 गुरुवार, पुष्य नक्षत्र में आपने बत्तीस शास्त्रों के उद्धार का कार्य प्रारम्भ किया और तीन वर्ष और पन्द्रह दिन पश्चात् वि.सं. 1975 मिगसर वदी 5 को कार्य का समापन किया। बत्तीस सूत्रों का सरल एवं सरस हिन्दी अनुवाद प्राकृत भाषा को न जानने वाले आगम-पिपासु साधकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ। श्रुतसेवा की यह महत्ती आराधना कर समाज पर आपने महान उपकार किया है। स्वर्गीय दानवीर सेठ श्री सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसादजी ने आगम-प्रचार हेतु पूज्यश्री द्वारा हिन्दी अनुवादित 32 आगमों की पेटियाँ अमूल्य भेंट दीं। इस महानतम कार्य के अतिरिक्त 'जैन तत्त्व प्रकाश', 'परमार्थ मार्गदर्शक', 'मुक्ति सोपान' आदि कई महान् ग्रन्थों की स्वतन्त्र संरचना कर जैन धार्मिक साहित्य में अभिवृद्धि की। आप द्वारा रचित कृतियाँ गुजराती, मराठी, कन्नड़ और उर्दू भाषा में भी प्रकाशित हैं। आपश्री द्वारा अनुवादित, सम्पादित, लिखित और संग्रहित एवं रचित ग्रन्थों की संख्या 101 है

जिनकी कुल प्रतियाँ 176325 प्रकाशित हुईं। कुल ग्रन्थों की मूल प्रेस कापी के पृष्ठों की संख्या पचास हजार प्रमाण है। स्थानकवासी जैन समाज में आपने ही साहित्य प्रकाशन प्रारम्भ करवाया।

वि.सं. 1989 ज्येष्ठ शुक्ला द्वादश, गुरुवार की पुनीत बेला में सर सेठ हुक्मीचंदजी की नसियाँ, इन्दौर में 'ऋषि सम्प्रदाय के चतुर्विध-संघ' द्वारा आपको 'आचार्य' पद पर प्रतिष्ठित किया।

शिक्षा-प्रचार की तरफ आपका पूरा ध्यान था और यही कारण है कि आपके सदुपदेश से बम्बई में श्रीरत्न चिंतामणि पाठशाला और अमोल जैन पाठशाला आदि की स्थापना हुई।

समय-संकेत - श्री अमोलकऋषि जी म. का स्थानकवासी समाज पर अच्छा प्रभाव था। धर्म प्रचार की दृष्टि से उन्होंने मालव आदि क्षेत्रों में विशेष रूप से विचरण किया। वृद्धावस्था में भी उन्होंने पंजाब की यात्रा की। आचार्य पद का दायित्व उन्होंने करीब चार वर्ष तक कुशलतापूर्वक वहन किया। कोटा, बूंदी, रतलाम आदि क्षेत्रों में विचरण कर धर्म-प्रचार का कार्य किया।

संघ और समाज-संगठन के आप अनन्य प्रेमी थे और यही कारण है कि वि.सं. 1990 चैत्र शुक्ला 10 बुधवार के दिन आयोजित वृहत् साधु-सम्मेलन, अजमेर में आपने महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सम्मेलन की कार्यवाही को सफल बनाने के लिए महत्ती भूमिका अदा की। आपका वि.सं. 1992 दिल्ली का चातुर्मास विशेष प्रभावशाली रहा। खानदेश धुलिया चातुर्मास में उनको कर्ण वेदना हुई। उपचार करने पर भी वेदना उपशान्त नहीं हुई। उन्होंने पूर्ण समता भावों से वेदना को सहा।

आपका विहार क्षेत्र था - दक्षिण भारत, हैदराबाद स्टेट, कर्नाटक, बैंगलोर, मैसूर स्टेट, महाराष्ट्र प्रदेश, खानदेश, मध्य प्रदेश, बरार, बम्बई प्रदेश, गुजरात, कच्छ, काठियावाड़, मालवा, मेवाड़, मारवाड़, गोड़वाड़, दिल्ली, पंजाब, शिमला आदि-आदि।

आपने अपना संयम जीवन उत्कृष्ट वैराग्यमय, सतत सुकर्मशीलता और श्रुत-साहित्य-सेवा करते हुए सानन्द व्यतीत किया। आपश्री का जीवन ज्ञान का कल्पतरु था। आपश्री बाल ब्रह्मचारी थे। सभी सम्प्रदाय के सन्त समुदाय और श्रावक वर्ग पूज्य श्री के प्रति अतीव आदर भाव से प्रेम, सम्मान, सहानुभूति, भक्ति और श्रद्धा रखते थे। आप शान्त, दान्त और क्षमाशील थे। अपने युग में आपश्रीजी एक आदर्श श्रमण के रूप में विख्यात तथा सम्मानित रहे।

आगम स्वाध्यायी आचार्यश्री अमोलकऋषि जी म. का स्वर्गवास वि.सं. 1993, दिनांक 13.6.1936 की रात्रि के साढ़े ग्यारह बजे धुलिया (पश्चिम खानदेश) में शान्ति के साथ समाधिपूर्वक स्वर्गवास हुआ। आपश्रीजी ने 47 वर्ष 6 महीना और 12 दिन तक साधु जीवन की/संयम जीवन की निरतिचार परिपालना की। उस समय पूज्यश्रीजी की कुलायु 60 वर्ष और 9 दिन की थी। आपश्री द्वारा दीक्षित सन्तों की अर्थात् स्वयं के सुशिष्यों की संख्या 14 है। आज एक शताब्दी से भी अधिक समय व्यतीत हो जाने पर भी उनका गरिमामय कृतित्व सम्पूर्ण स्थानकवासी जैन समाज के लिए गौरवस्पद है। जैन समाज में सर्वप्रथम आगमोद्धारक के रूप में आपकी सुयश-सुवास युग-युग तक समाज को और भगवान महावीर के शासन को सुवासित और मुखरित करती रहेगी।

इन सभी कार्य की सफलता के पीछे मुख्य पीठबल था आपकी विनम्रता का गुण। विनय के विशिष्ट धनी होने के कारण ही आपकी मति विषद् थी। स्वयं उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी म.सा. ने अजमेर के वृहद् साधु-सम्मेलन वि. सं. 1990 में विनय का प्रसंग अपनी आँखों से देखा था।

उस सम्मेलन में विभिन्न सम्प्रदाय के बहुत से संत एकत्र हुए थे। दीक्षा, आचार्य पद या विविध प्रसंगों पर 30-40 संत या महासती समुदाय एक स्थान पर रुकते हैं तो प्रायः रत्नाधिक को भी विधि सहित वंदन करना गौण हो जाता है। ऐसे समय एक संत प्रातः 4 बजे उठकर सिर पर चद्दर ओढ़कर सभी कमरे में जाते थे और सम्प्रदायवाद व रत्नाधिक को ही वंदन करने के आग्रह से ऊपर उठकर छोटे-बड़े सभी संतों को भावपूर्वक तीन-तीन वंदन करके पुनः चुपचाप अपने स्थान चले जाते थे।

एक बार श्री पुष्करमुनिजी ने जानने के लिए कि ये मुनि कौन हैं एवं क्या करता है ? उनके पीछे गये। उन्होंने सभी को वंदना नमस्कार भावपूर्वक विधि सहित की और अपने

स्थान पर लौट गये। तब थोड़ा-थोड़ा प्रकाश होने से यह पता चला कि यह कोई सामान्य या कोई लघु मुनि नहीं अपितु आचार्य अमोलकऋषि जी म.सा. हैं।

जहाँ एक ओर रत्नाधिक भी यदि दहाई में एकत्र हो जाए एवं एक ही सम्प्रदाय के हों तो भी सभी को वंदना करने में संत व सती कतराते हैं। वहीं सम्प्रदायवाद से अलग हटकर समस्त संत को भावपूर्वक वंदना करने वाली पुण्यात्मा भी है जो बिना संकोच के छोटों को भी नमन करने में आनंद की अनुभूति कर रही है। वे ये मानते थे कि न जाने कौन कब शीघ्र मोक्ष चला जाए और मैं मोक्षगामी आत्माओं के वंदन, दर्शन, कीर्तन नहीं करके अपने अहं भाव की वृद्धि करके क्यों संसार बढ़ाऊँ। मैं यदि 'पद' के कारण, दीक्षा पर्याय में बड़ा होने से संघ व्यवस्था के कारण से दिन में वंदन आदि नहीं कर सकता तो रात्रि में तो इनके संयम की, ज्ञान, दर्शन व चारित्र की खूब-खूब अनुमोदना करने में प्रमाद क्यों करूँ? धन्य हैं ऐसी विलक्षण, विनयवंत मूर्ति को। इसी जीवनशैली की विशिष्टता ने यह सिद्ध कर दिया कि विद्या से विनय की प्राप्ति होती है और विद्या नम्र (सरल) हृदय में ही बढ़ती है।

स्वर्गीय पूज्य श्री अमोलकऋषिजी म. 'यथा नाम तथा गुण' थे। नाम के साथ आपका काम भी अमोलक था। आपके कार्य का हम क्या मोल करें? सर्वसाधारण में शास्त्रीय ज्ञान सीखने की रुचि जागृत करने वाले कुशल प्रणेता आप ही थे। इस महान उपकारी की सेवाएँ देखते हुए आपको जितना भी याद किया जाये, उतना ही कम है। ❖❖

महावीर जैसा बनने का पुरुषार्थ ही निर्वाण महोत्सव की सार्थकता है

- श्रमण संघीय मंत्री पू. श्री शिरीषमुनिजी म.सा.

प्रभु महावीर का 2550वाँ निर्वाण महोत्सव प्रारम्भ होने जा रहा है। महापुरुषों के ये महोत्सव निमित्त है। इनके निमित्त से पूरे विश्व में अध्यात्म का प्रकाश फैले, मिथ्यात्व का मिटे। जीव कैसे शिव बना? वीर कैसे महावीर बने? उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करना ही निर्वाण महोत्सव मनाने का प्रयोजन होना चाहिए।

वर्तमान में मानव जाति पर कलयुग का प्रभाव है, अर्थात् मिथ्यात्व का प्रभाव है। जिसमें व्यक्ति संकीर्ण सोच व मिथ्या संस्कारों के बल पर हिंसा का तांडव रच रहा है। धर्म सम्प्रदायों के नाम पर सत्ता की लालसा में छद्म युद्ध कर रहा है। व्यक्ति की सोच संकीर्ण होती जा रही है। आधुनिक संसाधनों का प्रयोग मानव जाति का विनाश कर रहा है। ऐसे समय में सत्युग की एक किरण, सत्य का बोध, आत्मबोध, सत्य शाश्वत है। मिथ्यात्व अर्थात् भ्रम टूटते ही सत्य प्रकट होगा। व्यक्ति को भ्रम हो गया है। सुख अनुकूलता में है, सुख पुद्गलों में है, सुख सत्ता में है, सुख मन में है, मनोरंजन में है आदि अनेकानेक भ्रम पाल कर वह जी रहा है।

जिस दिन सत्य का प्रकाश जीव के जीवन में आएगा, जड जीव का भेद करेगा और हर परिस्थिति में वह अपने भीतर आनंद व शान्ति का अनुभव करेगा। प्रत्येक में अपने समान जीव देखेगा, अभेद दृष्टि से विकास करेगा, कर्म सिद्धान्त को स्वीकारेगा, उसे आत्मिक सुख, शान्ति समृद्धि व सम्पन्नता का अहसास होगा। प्रत्येक जीव के पास अष्ठ गुणों की सम्पदा है, आवश्यकता है उन गुणों को अपने भीतर उतारने की।

1. अपनी दृष्टि को परिवर्तित करें। 2. प्रत्येक में अपने समान जीव देखे। प्रत्येक में महावीर के दर्शन करें। महावीर के समान एकान्त, एकत्व का पुरुषार्थ करें। त्याग, वैराग्य व वीतरागता से जीवन जीयेंगे तो निश्चित निर्वाण महोत्सव मनाना सार्थक होगा। ❖❖

तेतं भेक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं, क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति ।।

मानव स्वर्गलोक के सुखों का उपभोग करके पुण्य क्षीण होने पर
पुनः मर्त्यलोक (मृत्यु लोक) में प्रविष्ट होता है।

दीक्षा दिवस पर विशेष ...

खद्दरधारी, कर्नाटक गजकेसरी, घोरतपस्वी पू. श्री गणेशीलालजी म.सा.

प्रस्तुति - उपप्रवर्तक पू. श्री श्रुतमुनिजी म.सा.

वि.सं. 1963 की बात है। सद्गुणों के सागर श्री प्रेमराजजी म.सा. अपने शिष्यों के साथ विराजमान थे। वह स्थान था बलापुर जहाँ पूज्य गुरुदेव का प्रवचन चल रहा था। इधर पूज्य श्री गणेशीलालजी म. भी सद्गुरु की खोज में लगे हुए पूज्य संतों के चरणों में नित्य पहुँच रहे थे। नाव घाट खोज रही थी तो किनारे तिरने और तारने की सदाशयी प्रक्रिया में सतत लगे हुए हैं। इस रूपक में गुरु शिष्य-परम्परा का सार छिपा हुआ है, समर्पण और श्रद्धा में संतत्व के विकास का क्रम छिपा हुआ है।

अमूमन सफलता की मीनार कई विफलताओं के ईंट-पत्थर पर खड़ी नींव पर आधारित होती है। ज़्यादातर लोग नींव खड़ी करने की हिम्मत नहीं दिखाते पर कुछ अद्भुत लोग एक ही दृढ़ निश्चय से नव्य-भव्य निर्माण की कहानी लिख दिया करते हैं।

खद्दरधारी, कर्नाटक गजकेसरी, घोरतपस्वी पू. श्री गणेशीलालजी म.सा. भी ऐसे ही दुर्लभ महापुरुष हैं, जिन्होंने अपने महान पुरुषार्थ असाधारण स्थान प्राप्त किया है।

पूज्य गुरुदेव का जन्म बिलाड़ा नगरी में सुश्रावक श्रीमान पूनमचंदजी एवं माता धूलीबाईजी ललवाणी के परिवार में हुआ। लेकिन कहते हैं कि 'नियति के खेल निराले', सर्वप्रथम अल्पावस्था में माता धूलीबाई का निधन हो गया।

तत्पश्चात् पिता श्री पूनमचंदजी एवं अन्य परिवारजनों के वियोग से श्री गणेशमल एवं शोभाचंद को अत्यंत गहरा आघात लगा। अन्ततः दोनो भाई महाराष्ट्र की धरती पर व्यापार करने आ गए। लेकिन मन व्यापार में भी नहीं लगा, वे दुकान पर बैठे-बैठे भी संसार की असारता में विचारमग्न रहते थे। इधर उनको होनहार जानकर सेठ श्री खेमचंदजी उन्हें अपना दामाद बनाना चाहते थे। मगर गणेशमलजी की विचार सारिणी तो संसार से उबरने का जतन खोज रही थी। अतः विवाह के लिए स्पष्ट इंकार करके वे गुरुदेव श्री प्रेमराज जी म.सा. के सान्निध्य में अपना समय व्यतीत करने लगे और वह सौभाग्य भरा दिन भी आया जिसे सारा समाज वि. सं. 1970 की मार्गशीर्ष सुदी नवमी के रूप में जानता है।

श्रमण दीक्षा लेने के पश्चात् पूज्य गुरुदेव ज्ञान-ध्यान, जप-तप को समर्पित हो गए। उत्तरोत्तर संयम पालन में गहन निष्ठा से आप उत्कृष्ट तपस्वी संत बन गए। आपश्रीजी की कर्मस्थली मूलतः महाराष्ट्र व कर्नाटक ही रही। आपको 'कर्नाटक गजकेसरी' की उपाधि से संसार जानता है। लेकिन वास्तविकता यह है कि आपश्रीजी आधि-व्याधि-उपाधि के व्यामोह से मुक्त थे। आप देह में रहकर भी देहातीत हो चुके थे। आप ऐसे महासंत थे जिनकी वाणी से संसार के हर प्राणी की आत्मा सुख पाती थी। यही कारण है कि हिंसक से हिंसक जीव भी आप का सान्निध्य पाकर अभय एवं आश्वस्त हो जाया करते थे।

आपकी साधना का ही तपोबल था कि रोगी निरोग होकर सुखद जीवनयापन करते थे। जनता में आपकी ऐसी चमत्कारिक छवि बन गई थी कि ऊपरी दैविक बाधाओं में फंसे लोग भी दुष्टात्माओं से मुक्त हो जाया करते थे। आपश्री वास्तव में वचनसिद्ध महात्मा थे। आपके दर्शन मात्र से सुख का सागर लहराने लगता था। आपकी पगधूलि लेकर अनेक भव्य जीवों ने असंख्य लब्धियाँ प्राप्त की हैं। आप जहाँ भी विराजमान रहते या विचरण करते थे, वहाँ अनायास ही चमत्कार घटित हो जाया करते थे।

ऐसे महान संत जिनकी कीर्तिकथा किंवदंतियाँ बनकर आज भी गूँज रही हैं। जालना नगर में आपने संथारा के साथ समाधिपूर्वक इहलोक से प्रयाण किया। आपश्री के दीक्षा दिवस पर सश्रद्ध वंदन एवं नमन! ❖❖

छोटी सी दुनियां, बड़े-बड़े इलाके।
हर इलाके के, बड़े-बड़े लड़ाके।।
हर लड़ाके की, बड़ी-बड़ी बन्दूकें।
हर बन्दूक के, बड़े-बड़े धड़ाके।।
सबको दुनिया की चिन्ता,
सबसे दुनिया को चिन्ता।
छोटी सी दुनिया, बड़े-बड़े इलाके..।।

शुचि कर्मों की दीपमालिका, जग का सारा तमस हरेगी ...

- महासाध्वी पू. श्री सुधाकंवरजी म.सा.

भारतवर्ष की महान संस्कृति एवं उज्ज्वल परम्परा में दीपावली का महत्वपूर्ण स्थान है। यह पर्व अनादि का नहीं है, इसकी आदि है। आज ही के दिन अर्थात् कार्तिक कृष्णा अमावस्या को विश्ववंद्य चरम तीर्थंकर परमात्मा महाप्रभु महावीर निर्वाण को प्राप्त हुए थे। अमावस्या की उस काली अंधियारी रात में 64 इन्द्रों ने आकर प्रभु का निर्वाण महोत्सव मनाया। इस पर्व का नाम है - दीपमालिका - दीपों की माला। 64 इन्द्रों ने रत्नों की दीपमाला बनायी, जिसके दिव्य प्रकाश से पावापुरी जगमगाने लगी। चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश हो गया। अतः इस पर्व को दीपावली - दीपमालिका पर्व कहा जाने लगा।

निर्वाण पधारने से पूर्व पावापुरी में प्रभु का अंतिम समवशरण रचा गया था। उस समय प्रभु ने निरंतर 16 प्रहर तक देशना प्रदान की, जो उत्तराध्ययन सूत्र एवं विपाक सूत्र की देशना के रूप में प्रदान की गई थी। आपके मन में शायद प्रश्न उभर रहा होगा कि हम तो एक घंटा, डेढ़ घंटा प्रवचन सुनते, उसमें भी बैठे-बैठे थक जाते हैं और नींद की झपकियाँ आने लग जाती हैं तो नवमल्ली, नवलच्छी, अठारह देश के राजा आदि ने निरंतर 16 प्रहर की देशना श्रवण की तो क्या वे थके नहीं होंगे, क्या उन्हें नींद की झपकियाँ नहीं आयी होंगी? बंधुओं! इसका समाधान यह है कि प्रभु महाज्ञानी थे, वाणी के 35 गुणों से युक्त थे, उनका अतिशय ही ऐसा था कि उनकी वाणी क्षीर समुद्र के जल से भी अत्यधिक मधुर-मीठी थी अतः कोई ऊबता नहीं था, थकता नहीं था और नींद की झपकियाँ भी नहीं लेता था। प्रभु वाणी की महिमा अनन्त है - 'वाणी तो घणेरी पण वीतराग तुल्य नहीं।'

ऐसी महान वीतराग वाणी का रसपान कर सभी श्रोता आनंदित थे। भाव विभोर हो रहे थे। 18 देश के राजाओं ने पौषध व्रत अंगीकार कर लिए थे। उन्होंने मनोरंजन के लिए नहीं आत्मरंजन के लिए आध्यात्मिक दीपावली मनाई। उनका शुभचिंतन था कि शरीर का पोषण तो प्रतिदिन करते हैं, लेकिन प्रभु के चरणों में पहुंच कर आत्मा का पोषण करें, अतः वे सब आत्मा का पोषण कर रहे थे। प्रभु की अंतिम देशना श्रवण कर रहे थे। मुझे लगता है कि 18 देश के राजाओं से भी अधिक झंझट आप लोगों को है। वे अपने-अपने देश को छोड़कर प्रभु के चरणों में पहुँच गये, लेकिन आपको कहां फुर्सत है? उनके जीवन का लक्ष्य महान था, वे धन से बढ़कर धर्म को महत्त्व देते थे। आप किसको महत्त्व देते हैं? बंधुओं! जिनवाणी के महत्त्व को समझो उसे आत्मसात करो। आध्यात्मिक दीपावली पर्व मनाइये।

प्रभु ने विनय की मूर्ति अन्तेवासी शिष्य गौतम स्वामी को देवशर्मा ब्राह्मण को प्रतिबोध देने के लिए भेज दिया था प्रभु को दो दिन का संथारा था। बारह प्रकार की परिषदा से प्रभु का समवशरण सुसज्जित था। तीर्थंकर परमात्मा ने पहले विपाक सूत्र की वाचना दी इसके पश्चात् उत्तराध्ययन सूत्र का 36वाँ अध्ययन फरमाते-फरमाते निर्वाण को प्राप्त हो गये।

उत्तराध्ययन सूत्र का महत्त्व जैन दर्शन में अत्यधिक है। वैदिक दर्शन में गीता का, बौद्धधर्म में धम्मपद का, इसाई धर्म में बाइबल का एवं इस्लाम धर्म में कुरान का महत्व है वैसे ही जैन दर्शन में उत्तराध्ययन सूत्र को अध्यात्म की गीता के रूप में जाना जाता है। उत्तराध्ययन सूत्र में अध्यात्म की अनमोल शिक्षाएं भरी पड़ी हैं। यह उस विशाल समुद्र के समान है जिसमें अनेक दिव्य सद्गुणों की मुक्ता-मणियां चमक रही हैं। ज्यों-ज्यों गहराई में उतरते हैं अनुभव के अमूल्य रत्नों की प्राप्ति होती है।

अध्यात्म का नवनीत प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन इस सूत्र का स्वाध्याय करना चाहिए। नया चिंतन नयी-नयी स्फुरणाएं इसके स्वाध्याय से जागृत होती हैं। वर्तमान में उत्तराध्ययन सूत्र का स्वाध्याय दीपावली पर्व पर किया जाता है। जिनवाणी के रसिक श्रोता इसे सुनकर बड़े आनंदित होते हैं, प्रभु की अंतिम शिक्षाएँ श्रवण कर कर्मों की निर्जरा करते हैं। मरते समय पिता अपने पुत्र को जैसे अंतिम सीख या शिक्षा देते हैं, उसी प्रकार प्रभु ने भी अंतिम सीख के रूप में अनमोल शिक्षाएं प्रदान की हैं। इन शिक्षाओं को आचरण के धरातल पर उतारने वाला साधक अपना आत्म-कल्याण कर सकता है, जीवन को महान बना सकता है।

ऐसी अनमोल दिव्य देशना पावापुरी में चल रही थी। राजा हस्तिपाल की भावभरी विनती को मानकर प्रभु ने अपना अंतिम चौमासा पावापुरी में किया था -

अंतिम चौमासा वीरप्रभु ने, पावापुरी फरमाया।
पावापुरी फरमाया, हस्तिपाल का भाग्य सवाया जी।।

नवमल्ली नवलच्छी राजा, आये वीर शरण में।
देशना अंतिम छट्ठ भक्त से, सुनते वीर चरण में ।।
उत्तराध्ययन छत्तीस जी, फरमाया जगदीश जी ।
सतत् वाचना सोलह प्रहर की, सुनकर आनंद छाया जी।।

हस्तिपाल राजा के भाग्य की क्या सराहना की जाए, ऐसा शुभ पावन सान्निध्य पाकर मानो उसने सब पा लिया था। उनका रोम-रोम पुलकित हो उठा। अष्ट सिद्धि और नव निधि से भी बढ़कर संपदा मानो मिल गई हो ऐसी प्रसन्नता राजा हस्तिपाल को हुई थी। देव-देवियाँ आदि सभी बड़े भक्तिपूर्वक प्रभु की उपासना आराधना कर रहे थे। भक्ति गंगा में डूबे हुए थे। चतुर्विध संघ के आनंद की कोई सीमा नहीं थी। अपने आराध्य प्रभु के पावन निर्मल दर्शन पाकर वे धन्य बन रहे थे और उत्तराध्ययन सूत्र का 36वाँ अध्ययन कहते-कहते वह दिव्य ज्योति निर्वाण को प्राप्त हो गई। देवेन्द्र देव-देवियों के आगमन से अमावस भी पूर्णिमा के रूप में बदल गयी। चारों ओर रत्नों का प्रकाश फैल गया। रत्नों के प्रकाश से पावापुरी जगमगाने लगी।

इस दिन आप भी नकल ज़रूर करते हैं। घर-घर में दीप जलाए जायेंगे और लक्ष्मी का पूजन किया जायेगा। मैं आप से कहूँ - ज़रा जागो। हमारे घर में भी प्रकाश हुआ या नहीं? अंधकार दूर हुआ या नहीं? बाहर का जितना भी प्रकाश है वह सब बाह्य रूपी पदार्थों को दिखाने वाला है। अपने भीतर भी ज्ञान का दीपक संजोया है या नहीं? मन-मंदिर में ज्ञान का दीपक जलाइए, अज्ञान का अंधेरा दूर कीजिए। जब तक भीतर में ज्ञान का उजाला नहीं होगा तब तक बाहर के हज़ारों दीपों से घर को कितना ही सजा लो, कुछ नहीं होगा। सब भाई-बहन दीपावली पर्व मनायेंगे। आज आप घर-घर में दीप जलायेंगे, दुकानों पर दीपक लगायेंगे, पूरा बाजार आप रोशन कर देंगे लेकिन भीतर में ज्ञान की रोशनी जगी है या नहीं? अन्तर के भवन को भी रोशन कर पाये या नहीं? भीतर में ज्ञान रोशनी फैलाकर अज्ञान के अंधकार को नष्ट करने का प्रयास करें। इधर नज़र डालती हूँ तो देख रही हूँ कि आज बहनों को भी समय मिला है। सब नहा धोकर घर की सफाई करके आयी हैं, सफाई करते-करते दो महीने हो गये, धर्म साधना भी छूट गयी, प्रवचन में आना भी बंद हो गया। भवन की सजावट, तन की सजावट हो रही है, लेकिन मन की सजावट कितनी हुई है? बाहर की सब सजावट किसके लिए? लक्ष्मीदेवी के शुभागमन के लिए! लक्ष्मी देवी को प्रसन्न करने के लिए, लेकिन भीतर में राग-द्वेष का कितना कचरा भरा पड़ा है, वह कचरा हटाया या नहीं? राग-द्वेष का कचरा हट जाता तो भीतर में ज्ञान, दर्शन, चारित्र रूपी आध्यात्मिक लक्ष्मी का शुभागमन हो जाता। आपको केवल जड़ पदार्थों को पुद्गलों को पाने की इच्छा है या ज्ञान ज्योति को पाने की इच्छा? दीपावली पर्व का शुभ संदेश है -

पर्व दीवाली आज मनायें।
ज्ञान की ज्योति से तिमिर भगायें ।।ध्रुव।।
जगमग करती आई ये दीवाली,
महिमा है इसकी जग में निराली,
अज्ञान अंधेरा दूर भगायें ...
संदेश कितना पावन सुहाना,
मन मंदिर में ज्योति जगाना,
सोया है ईश्वर, आज जगायें ...
मन एक मंदिर है उसको सजायें।
ज्ञान का दीपक उसमें जलायें ।
सद्गुण लक्ष्मी की पूजा रचाए ...

(तर्ज - यशोमती मैया से...)

मन रूपी मंदिर में कचरा भरा पड़ा है। ज्ञान की झाड़ू लगाकर सफाई करनी है, किसी कोने में कचरा रह नहीं जाये। आपका भगवान, आपका ईश्वर मोह की नींद में सो रहा है, उस सोये हुए ईश्वर को जगाने का आज शुभ अवसर है। प्रभु गौतम ने उस सोये हुए ईश्वर को अर्द्धरात्रि के बाद जगाया था। मोह की नींद में सोयी आत्मा को जगाकर कैवल्य ज्ञान रूपी लक्ष्मी को प्राप्त कर लिया था।

तीर्थपति महावीर जब निर्वाण को प्राप्त हुए तो ऐसा सुनकर गौतम स्वामी का मन किस प्रकार मुरझा गया। एक छोटे बच्चे की तरह वे बिलख-बिलख कर रुदन करते हुए कहने लगे -

देव श्रमण प्रतिबोधित करने भेजा मुझको ज्ञानी ।
मुक्ति आपकी फिर भी स्वामी, रही न मुझसे छानी।
होवे खूब उदास जी, क्यों नहीं रखा पास जी।
रह-रह करके गौतम जी को, वीर विरह ने सताया जी...
नहीं देता अंतराय प्रभुजी, नहीं मैं पाँव पकड़ता।
मन भर-भरके है स्वामी मैं दर्श आपके करता।।
सदा चरण में ध्यान जी, मिलता अद्भुत ज्ञान जी।
प्रभु अकेला रहूँगा कैसे, गौतम नाद सुनाया जी...

प्रश्न कहाँ पर जाकर पूछें, शंका किससे मेटूं ।
अब हो गई सपने की माया, चरण कहाँ पर भेंटूं।
मन में अति संताप जी, करते पश्चाताप जी।
मोह हटाये, कर्म खपाये, केवल झट प्रगटाया जी...
अंतिम चौमासा वीरप्रभु ने, पावापुरी फरमाया जी...

कहा जाता है कि गणधर गौतम के करूण रुदन को सुनकर इन्द्र का मन भी द्रवित हो गया था। विरह व्यथा से पीड़ित गौतम फूट-फूट कर रुदन करने लगे, मोहकर्म की प्रबलता थी। एकदम विचारधारा ने पलटा खाया और मोह के बंधन से स्वयं को मुक्त कर लिया और कैवल्य ज्ञान की शुभ लक्ष्मी का वरण कर लिया। आप में भी वही शक्ति भरी पड़ी है, पुरुषार्थ कीजिए, अन्तर में सोये हुए ईश्वर को जगाकर ज्ञान लक्ष्मी का वरण कीजिए।

आज हमें निज घर को सजाना है। जो घर आपने सजाया है वह आपका नहीं है। यह तो ईंट-चूने-पत्थर का बना हुआ, अशाश्वत घर है। हमें तो निजघर को साफ करके सजाना है। ज्ञान का दीपक जलाना है। बाहर के इतने दीपक जलाने पर भी मन-मंदिर में इतना अंधेरा है तो फिर दीपक जलाने से क्या फायदा है? बस मन-मंदिर को रोशन करने के लिए ज्ञान का एक छोटा सा दीया ही पर्याप्त है। बंधुओं! यह दीपावली पर्व लौकिक पर्व के रूप में नहीं लोकोत्तर पर्व के रूप में मनाना है। आज के दिवस सायंकालीन प्रतिक्रमण के द्वारा पापों की आलोचना करके, निःशल्य बनकर अंतर के कचरे को दूर करना है। यह स्वर्णिम अवसर है। आने वाली दीपावली हम देख सकेंगे या नहीं, अस्थिर जीवन का कोई भरोसा नहीं है, अतः सावधान हो जाइए, अन्तर्मन को पवित्र कीजिए। गौतम स्वामी ने भी आज ही के दिन केवल ज्ञान की लक्ष्मी को प्राप्त किया था। केवल ज्ञान रूपी लक्ष्मी को प्राप्त करने हेतु हम भी पुरुषार्थ करें।

अमावस्या की सायं न मालूम कितने बजे का लक्ष्मी पूजन का मुहूर्त होगा? लक्ष्मी पूजन के बाद पता नहीं कितने रुपयों का धुआं उड़ेगा? बड़े-बड़े शहरों में तो 50-50 हज़ार के पटाखों का धुआँ हो जाता है। पटाखा जब फूटता है तो उसमें से फट्-फट् की आवाज़ आती है, मानो वह आवाज़ आपको संकेत कर रही है कि अरे मानव ! फट् ! फट् तुम्हारे को धिक्कार है। एक तरफ तो लक्ष्मी का पूजन करते हो और दूसरी तरफ लक्ष्मी का धुआँ उड़ा रहे हो। यह लक्ष्मी का आदर है या अनादर? मान लीजिए किसी की बहन सुसराल जाती है उसको ड्रेस बहुत बढ़िया पहनाई, लेकिन ड्रेस काली है तो बहन का आदर है या अनादर? इसी प्रकार लक्ष्मी का धुआँ निकालते यह लक्ष्मी का अनादर है। थोड़ी देर के मनोरंजन के लिए कितने रुपयों का पानी कर देते हैं, उस समय क्या कभी मन में मानवता का दीप भी जलता है कि कितने ही बच्चे अनाथ हैं, कितनी ही विधवा माताएँ हैं, कितने ही इंसान गरीब हैं, कितने ही लोग अपाहिज हैं, जिनके लिये मिठाई खाना तो बहुत दूर की बात है, एक टाईम खाना भी मुश्किल से मिलता है, उनको मिठाई खिला दें, भोजन करवा दें! लक्ष्मी का धुआँ निकालने के बजाय गरीब, दीन और अनाथ को भोजन कराने से तो पुण्य का ही बंध होगा और पटाखे छोड़ने से तो पापकर्मों का ही बंध होगा। पटाखे छोड़ने वाला आठों कर्मों का बंध करता है और दूसरी बात कई बार पटाखों से आग लग जाती है, लाखों रुपयों का नुकसान हो जाता है, कई बच्चे मर जाते हैं, कई जल जाते हैं। अतः लक्ष्मी का धुंआ नहीं उड़ाकर लक्ष्मी का सदुपयोग कीजिए और पुण्य अर्जन कीजिए। अनाथों के नाथ बनिए, बेसहारों के लिए सहारा बनिए। मानवता का दीप जलाइए तभी दीपावली मनाना सार्थक होगा। आध्यात्मिक दीपावली पर्व मनाना है। गौतम स्वामी ने आध्यात्मिक दीवाली मनाई। केवल ज्ञान रूपी लक्ष्मी को प्राप्त किया।

प्रभु के निर्वाण होने के बाद बारह वर्ष तक गौतम स्वामी केवली रहे, बाद में गौतम स्वामी मोक्ष में पधारे। तत्पश्चात् सुधर्मा स्वामी बीस वर्ष के बाद मोक्ष में पधारे। सुधर्मा स्वामी के पाट पर जम्बू स्वामी विराजे। जम्बू स्वामी को केवल ज्ञान हुआ 44 वर्ष तक केवली रहे। भगवान महावीर के मुक्ति में जाने के बाद 64 वर्ष तक केवल ज्ञान रहा। बाद में विछिन्न हो गया। बंधुओं ! इस भव में नहीं तो अगले भवों में तो हम कर्मों से मुक्त बनें, ऐसा पुरुषार्थ करें। आज अमावस्या है, हर अमावस्या को अंधेरा रहता है परंतु आज की अमावस्या को शुक्ल पक्ष का रूप दिखाई देगा। हम भी कृष्ण पक्ष से शुक्ल पक्ष की ओर बढ़ने का प्रयास करेंगे, तभी पर्व मनाना सार्थक होगा।

'शुचि कर्मों की दीपमालिका, जग का सारा तमस हरेगी।
स्नेह शांति सुख की जयलक्ष्मी, घर-घर में विचरेगी ।।'

जो भी मुमुक्षु आत्मा आध्यात्मिक लक्ष्मी को प्राप्त करने का प्रयास करेंगे, भीतर में ज्ञान दीप को प्रज्वलित करेंगे उन्हीं का यत्र-तत्र सर्वत्र आनंद ही आनंद होगा। ❖❖

अध्यात्म जगत के क्रांतिकारी वीर लोंकाशाह

प्रस्तुति - श्री एम. पदमचन्द कांकरिया जैन, चेन्नई (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : जैन कॉन्फ्रेन्स)

एक प्रतिभा सम्पन्न युवक का भाषा ज्ञान देखकर स्वाध्याय में रुचि देखकर, लिखाई में मोती से अक्षर देखकर आगम ग्रंथों की हस्तलिखित प्रतियाँ बनाने का विचार एक जैन मुनिराज को आया।

जिज्ञासु एवं परिश्रमी युवक लोंकाशाह, आगम ज्ञान प्राप्त करने की प्रबल इच्छा से मुनिवर के कार्य में जुट गए। घोर परिश्रम, प्रखर सोच और ज्ञान प्राप्ति की प्यास ने उन्हें जल्दी ही कार्य दक्ष बना दिया। हृदय में श्रद्धा, संकल्प में दृढ़ता, प्रतिभा, प्रवीण बौद्धिक रुचि से इस महान युवक ने लेखन कार्य करते-करते शब्दों की आत्मा को छूना प्रारम्भ किया। आगम ज्ञान रसिक युवक ने अपनी आत्मा के अंतःप्रदेश में प्रभु की वाणी को बसा लिया। ये स्वाध्याय का चमत्कार है, स्वाध्याय आत्म दृष्टि खोल देता है।

'सिद्धा सिद्धि मम दिसन्तु' इस मंत्र के जाप ने लेखन कार्य को भावित की भव्यता से भरकर समर्थ बनाया तो दिन-प्रतिदिन नए तथ्य, नया सत्य, उजागर होने लगा। दृष्टि विकास पाती गई, धर्म तंत्र के ताने बाने पर सहसा उनकी दृष्टि चली तो चलते-चलते लीपा-पोती/गड़बड़झाला/अर्थ-अनर्थ का ज्ञान होने लगा। समाज में श्रमण आवरण में घुसा पाखंड दृष्टव्य हुआ। यतियों, तांत्रिकों, मठाधीशों की आडम्बरी सत्ता का सुखवादी उद्गम नज़र आने लगा। एक शांत, सरल युवा के मन में इस असंगति-विसंगति ने ज्वालामुखी की तरह क्रांति का, बदलाव का, परिवर्तन का लावा भर दिया।

समय आया, लोंकाशाह लेखन के साथ-साथ अपने विचारों की अभिव्यक्ति जन भाषा एवं जन मुहावरे में जनता के बीच अभिव्यक्त करने लगे। **'लोग आते गए, कारवां जुड़ता गया'** वाली कहावत चरितार्थ होने लगी। समर्थन की विपुलता ने युवा लोंकाशाह को लोकनायक बना दिया।

क्रांतिकारी वीर सावरकरजी के अनुसार "जब जन साधारण से उठकर कोई धूमकेतु बनता है तो सबसे पहले उपेक्षा, बाद में विरोध आड़े आता है।" युवा लोंकाशाह के जीवन में भी यही हुआ। यतिगण तब तवे की तरह गर्म हुए, जब **'लुंकाना-सद्दियां'** नाम से एक लघु संकलन प्रकाश में आया। ये पुस्तक मूल गुजराती भाषा में आज भी उपलब्ध है। पुस्तक में खण्डन-मण्डन नहीं है। प्रश्न है, सलाखों की तरह गर्म और नुकीले प्रश्न! जनता में ये किताब 'जन गीता' बन गई। हृदय की आग, क्रांति मंत्र बनकर श्वेत क्रांति की सूत्रधार बन गई। लोक जागरण मंत्र दृष्टा लोंकाशाह का युग दृष्टा के रूप में जन्म हो गया। एक आगारी संसारी अपने चिन्तन मनन से हज़ारों यतियों पर भारी पड़ गया। धर्म क्रांति का अगुवा बनकर लोंकाशाह का ये अवतरण जब जमी हुई दुकानों की नींव हिलाने लगा तो झूठ अफवाह, चरित्र हनन और हिंसक विरोध भी होने लगा। इसी को कहते हैं कि जब आप पर लोग पत्थर मारने लगे तो फलदार पेड़ बनकर झुक जाईये। आपकी जीत सुनिश्चित हो जाएगी।

चतुर सुजान लोंकाशाह ने तीस पार करते ही यही किया। अपने आपको इतना निःस्पृह एवं प्रसिद्धि परागमुख बना लिया कि अपना नाम, अपना विवरण तक छापना बंद कर दिया, लेकिन केसर कस्तूरी, हिना और गुलाब की तरह आपकी प्रसिद्धि अपने आप होने लगी। यही कारण है कि किंवदंतियों के अलावा इस महान लेखक, विचारक, वक्ता, साधक का क्रमबद्ध इतिहास उपलब्ध नहीं है। जिस नव्य चेतना को आज हम श्वेताम्बर स्थानकवासी विचार साधना की पद्धति कहते हैं। उसके चिन्तन का आधुनिक विधि-विधान जिसने रचा है, उसका नाम सिर्फ और सिर्फ श्रीयुत वीर लोंकाशाह है।

ऐसे समस्त चिन्तन को जैन इतिहास की धार्मिक आध्यात्मिक क्रांति के अलावा कोई और नाम देना बेमानी है। वास्तव में ये कालखण्ड भारतीय आध्यात्मिक जगत का पुनर्जागरण काल था, ऐसे युगान्तरकारी परिवर्तन काल में श्वेताम्बर जैन परम्परा में यतियों का, पोतियाबंधों का पराभव होकर साधना का सही मार्ग आत्मवादी स्थानक पथ गौरव पा गया। लेकिन भ्रम निवारणार्थ यह बताना आवश्यक है कि इसमें जैनागमों का मूल यथावत रहा, सामायिक, प्रतिक्रमण में कुछ गाथाएं आवश्यक मान्यतानुसार कम ज़्यादा है मगर मूल भाव वही

(शेष भाग पृष्ठ संख्या 41 पर)

और चाँद मुस्कुरा दिया ...

प्रस्तुति : श्री सुनील बाफणा जैन, जैन कॉन्फ्रेंस विश्वस्त मंडल सदस्य, शिरूर-घोड़नदी (महाराष्ट्र)

दिनकर बाबा आज कुछ ज़्यादा ही थक गए थे, इसीलिए आराम फरमाने के लिए धरती की गोद में सरकते चले जा रहे थे। संध्या ने अपनी गुलाबी चुनरी को चारों ओर फैला दिया था। दिन भर काम से थके लोग भी अब थोड़े आराम की चाह में अपने-अपने घरों को जा रहे थे। हर किसी के झोले में कुछ ना कुछ ज़रूर था। किसी ने 400 की दिहाड़ी में से 20 रुपए की खुशियाँ खरीद ली थीं, अपने बच्चों के लिए, तो कोई स्वार्थी अपनी थकान का बहाना बना कर ठेके की तरफ घर का क्लेश खरीदने निकल पड़ा था, किसी ने बूढ़े पिता के लिए आज बुखार के तीसरे दिन कोई एक ज़रूरत मार कर दवाइयाँ ले ली थीं, तो किसी ने राशन का सामान खरीद लिया था।

मगर इन्हीं जैसों में से एक हरिराम आज फिर अपने झोले में सिर्फ मायूसी बटोरे जा रहा था। आज चौथे दिन भी मज़दूर यूनियन की हड़ताल ना टूटी थी। गेहूं खुशी से पिस रहा था, क्योंकि वो जानता था कि आटा बन कर महंगे दाम में बिक जायेगा मगर हरिराम जैसे घुन तो बेकार में ही पीसे जा रहे थे। मगर करते भी क्या आखिर थे तो घुन ही ना। वही ठेके का काम, वही रोज की दिहाड़ी। मगर चार दिन से ये दिहाड़ी भी बंद थी। पिछला राशन दो दिन तो भूखे पेट की आग को थोड़ा शांत कर गया मगर बाकी के दो दिन पहाड़ लग रहे थे। रोज़ इस आस में घर से जाता कि आज हड़ताल टूटेगी, आज कोई काम मिल जायेगा मगर रोज़ निराशा के सिवा और कुछ हाथ नहीं लगता था।

'नुनुआ की माँ।' अपने क्वार्टर के बाहर छोटे से बरामदे में बिछी टाट पर बैठते हुए हरिराम ने थके हुए स्वर में अपनी पत्नी को पुकारा। 'आज भी नहीं टूटा ना हड़ताल?' अन्दर से लोटे में पानी लिए संतोषी आई। 'कैसे जान जाती हो बिना कहे ही सब बात?' हरिराम ने लोटा पकड़ते हुए कुछ पल को मायूसी चेहरे से उतार कर उसकी जगह मुस्कुराहट सजाते हुए कहा। 'दस बरस हो गए हैं जी, अब तो आपके बुलाने से ही समझ आ जाता है कि बात खुशी का है या दुःखी का।' पास पड़े गत्ते के टुकड़े को हाथ पंखा बना कर हरिराम को हवा देते हुए संतोषी बोली।

'रहने दो अब गरम नहीं लगती है, मौसम ठंडाने लगा है।' मौसम में ठण्ड की आहट महसूस होते ही गरीब का कलेजा एक पल के लिए धक् से रह जाता है ये सोच कर कि ठण्ड आ रही है, पता नहीं कैसे समय कटेगा। 'नहीं तो, अभी कहाँ ठण्डा आया है, छठ बाद ठण्डा पड़ता है। देखिए आपको पसीना आ रहा है।' संतोषी ने मन में ठान ही लिया था कि दिसम्बर के अंत से पहले वो मानेगी ही नहीं कि ठण्ड पड़ने लगी है। अगर वो ना मानती तो हरिराम को इस तंगहाली में ओढ़ना बिछौना का चिंता भी खाने लगता और वो ऐसा कभी नहीं चाहती थी।

'आज भी हड़ताल नहीं टूटा। बड़का सब अपना काम अच्छा से चला ही रहा है मगर हम जैसा गरीब सब को सौ रुपैया रोज बढ़ने के नाम पर ई पांच-पांच दिन भूखे मार रहा है। 'अरे आप बेकार का चिंता करते हैं जी, हम मंगला के इहाँ से आटा ले आये हैं। उसको कोटा में से गेहूँ मिल जाता है ना तो उसके पास आटा था। बिहान तक काम चल जायेगा। आप देखिएगा बिहान, हड़तालों टूट जाएगा, फिर सब ठीक हो जायेगा।' हमेशा ही संतोषी की बोली हरिराम के शरीर का सारा थकान निचोड़ लेती है। उसको अपना मन शांत करने के लिए बस संतोषी को एक टक ताकते रहने भर की ज़रूरत ही होती है।

हरिराम ने अपनी सारी चिंता को किनारे रख कर संतोषी की ओर देखते हुए बड़े शरारती लहज़े में कहा 'तुम बोलती बहुत अच्छी हो नुनुआ की माँ।' 'आपका भी नहीं बुझाता, अभिये केतना टेंसन में थे और अभिये कईसे बोल रहे हैं।' संतोषी शरमा गयी थी। हरिराम कुछ और भी कहता मगर तब तक नुनुआ आ गया था। फिर संतोषी खाना बनाने चली गयी। रात के समय नुनुआ को खिला कर संतोषी ने हरिराम के लिए खाना परोसा। रोटी और नमक और सूखी मिर्च की चटनी हरिराम के आगे परोस दी संतोषी ने।

'दाल हम नुनुआ को खिला दिए, आज भर खा लीजिए कल सब ठीक हो जायेगा।' संतोषी कितनी आशावादी है ये सोच कर हरिराम गहरे से मुस्कुरा दिया। 'कल क्या होगा वो छोड़ो, आओ पहले खाना खा लें।' 'अरे आप खाइए ना, हम बर्तन मांज कर खा लेंगे।' संतोषी ने हरिराम की बात को टालते हुए कहा। 'बचा होगा तब ना खाओगी, हम जानते हैं इतना ही रोटी बनाई हो और बाकी का कल के लिए बचा ली हो। अब चुपचाप खा लो।' संतोषी अपनी चोरी पकड़े जाने पर झेंप गयी। दोनों ने साथ-साथ खाना खा लिया। पेट भले ही दोनो का ना भरा हो मगर खाने में प्यार की मात्रा इतनी थी कि दोनो का मन ज़रूर भर गया। कल कुछ अच्छा होगा इस उम्मीद के साथ दोनो एक-दूसरे की तरफ देख कर मुस्कुराते हुए सपनों की दुनिया घूमने निकल पड़े।

अगले दिन सुबह के चार बजे बर्तनों की आवाज़ से हरिराम की नींद खुल गयी। उसने बिस्तर पर देखा तो संतोषी नहीं थी।'अभी तो दिन भी नहीं चढ़ा फिर संतोषी काहे उठ गयी।' हरिराम भी बिस्तर से उठ गया। बाहर जा कर देखा तो संतोषी के हाथ में गुड़ का एक टुकड़ा था जिसके साथ वो पानी पी रही थी। 'कहे थे थोड़ा और खा लो हमारी रोटी में से, बात नहीं मानी, अब देखो खाली गुड़ का डिब्बा झाड़ कर खा रही हो।' हरिराम ने संतोषी से मज़ाक करते हुए कहा।

'नहीं भूख थोड़े ना लगा है। ऊ आज दिन में पानी नहीं ना पीना है इसीलिए अभी पानी पी रहे थे। भोरे-भोरे खाली पानी नहीं घोंटा जा रहा था तो गुड़ वाला डिब्बा झाड़ लिए।' अपनी बात बताते हुए संतोषी के चेहरे पर पाँच साल की बच्ची जैसी मासूमियत झलक रही थी। 'आज पानी काहे नहीं पीओगी?' 'ऊ आज, करवा चौथ का पबनी है ना इसीलिए।' संतोषी व्रत की बात बताते हुए शर्मा गयी। 'अरे ई सब कब से करने लगी तुम। चार दिन से तो पबनीये कर रही हो तब इसका क्या ज़रूरत है बताओ। वैसे भी तुम हमारे साथ हो ना हमको कुछो नहीं होगा। ई सब बड़ा लोग का बात है पगली।' हरिराम ने संतोषी को समझाते हुए कहा।

'नहीं जी ऐसा नहीं बोलिए, ई सब अपना संतोष का बात होता है। जब तक हम नहीं जानते थे हम नहीं किए, लेकिन अब सब औरत लोग करती हैं तो हमको भी करना है। सब अपना पति से प्रेम करती हैं तो रखती हैं, तो सोचो हम तो आपसे बहुते जादा...' इस से आगे संतोषी शरमा के चुप हो गयी। 'हम जानते हैं तुम हमसे बहुत प्रेम करती हो' मगर आगे कुछ बोलने से पहले संतोषी ने अपनी ऊँगली हरिराम के होंठों पर रख दी। हरिराम बेचारा पत्नी की ज़िद्द के आगे मुस्कुराने के सिवा और कुछ नहीं कर पाया।

आज हड़ताल टूट जाएगी इस आस में हरिराम काम पर जाने के लिए निकलने लगा तो संतोषी ने उसे टोका 'अरे दू ठो रोटी खा लीजिए तब जईयेगा।' 'अरे नहीं रात का मिरचाई वाला चटनी गर्मी कर दिया है, पेट ठीक नहीं है। क्या पता आज भी हड़ताल नहीं टूटा तो रात में फिर वही खाना होगा इसीलिए अभी नहीं खायेंगे। हड़ताल नहीं टूटा तो आज जल्दी घर आ जाएंगे।' इतना कहते हुए हरिराम ने अपने कदम तेज़ कर लिए। 'हाँ आज कईसे भी कर के जल्दी आईयेगा।' संतोषी की बात पर मुस्कुराते हुए हरिराम आगे बढ़ गया।

शाम घिर आई थी, हरिराम अभी तक घर नहीं लौटा था। संतोषी को पूरी उम्मीद थी कि आज पक्का हड़ताल टूट गयी होगी। संतोषी को ना जाने क्यों आज बहुत घबराहट भी हो रही थी। हरिराम अभी तक लौटा नहीं था, जबकि वो इतनी देर नहीं करता था। संतोषी की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। इतने में हरिराम सामने से आता दिखा। संतोषी ने सोच लिया था कि आज वो हरिराम को टोकेगी नहीं क्योंकि उसने उसकी बात नहीं मानी। मगर जब हरिराम पास आया तो उसके सर पर बंधी पट्टी देख संतोषी अपना सारा गुस्सा भूल गयी। 'हे भगबान, ई क्या हो गया जी।' संतोषी ने हैरानी में पूछा। 'अरे कुछो नहीं जरा सा चोट है।' 'जरा सा चोट है ई? इतना बड़ा पट्टी बंधा है और कहते हैं जरा सा चोट है। आप ठीक हैं ना।' संतोषी की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। 'हाँ-हाँ एकदम ठीक हैं, ई लो इसमें मिठाई है और रासन है।' हरिराम ने खुशी से थैला संतोषी की ओर बढ़ाते हुए कहा। 'अरे आग लगे मिठाई आ रासन में, आप ई बताइए ई सब कैसे हो गया? ई चोट कैसे लगा?' हरिराम अपनी पीड़ा भरी कराहटों को छुपाने की कोशिश तो कर रहा था मगर वो संतोषी से छुप ना पायीं।

'बताते हैं जरा साँस लेने दो। दिन में जब गए काम के लिए तो पता चला हड़ताल नहीं टूटा है। हम बहुत मायूस हो कर लौट ही रहे थे कि एक सेठ जी मिल गए। उनको मज़दूर नहीं मिल रहा था। हमको बोले कि हज़ार रुपईया देंगे देहाड़ी का। सीमेंट लोड करना है ट्रक में। काम भारी था मगर पईसा अच्छा था इसीलिए हम हाँ बोल दिए। सारा काम हो गया, लेकिन अंत में देह में बहुत कमज़ोरी बुझाने लगा और हम सीमेंट के बोरी लिए गिर गए। सर हमारा एक ठो पत्थर से जा टकराया, ऊ तो तुम्हारा ही पुण्य परताप था जो बच गए, नहीं तो कहीं सीमेंट का बोरा हमारे सर पर गिरता तो समझो बचते नहीं। सेठ जी अच्छा आदमी थे, अपने से इलाज करा दिए और इहाँ तक छोड़ भी गए।' हरिराम बोलता रहा पर संतोषी की आंसू की धारा बहने लगी।

'आपको कहे थे कुछो खा लीजिए, इहाँ नहीं तो बहार ही खा लेते, मगर आप हमारा सुनते कहाँ हैं।' संतोषी अब बच्चों की तरह रोने लगी। 'तुम भी हमारा कहाँ सुनती हो, हम बोले थे मत करो पबनी लेकिन नहीं सुनी। अब तुम भूखी रही तो हम कईसे खा लेते। सेठ जी के यहाँ नास्ता मिला था, हम ही नहीं किये। हाँ एक ठो गलती हो गया दबाई खाना था तब पानी पीना पड़ा। देखना कहीं हमारा पबनी टूटने से तुम मत मर जाना।' हरिराम की आखरी बात पर संतोषी रोते हुए भी हँस पड़ी। उसकी आँखों में हरिराम के प्रति पहले से कहीं ज्यादा स्नेह उमड़ आया।

'आप नहीं सुधरिएगा और जान लीजिए, हम नहीं मरने वाले इतना जल्दी। अब जल्दी चलिए चंदरमा देख के कुछो खा लिया जाए। 'हाँ चलो, सब आज का पबनी खतम करेगा और हम लोग तीन दिन से सह रहा पबनी समाप्त करेंगे।' हरिराम की बात पर दोनो खिलखिला कर हंस पड़े। उधर नुनुआ सब बातों से अंजान झोले में से मिठाई निकाल कर उसे अमृत जान गपागप खाने लगे। उसे खाता देख दोनो की जैसे तीन दिन से पेट में जल रही भूख की आग अचानक से शांत हो गयी। सब चाँद को देख अपना व्रत तोड़ने में लगे हुए थे और चाँद इन दोनो के प्रेम को देखकर अपने चेहरे पर सुकून भरी मुस्कराहट सजाए बैठा था। ❖❖

प्रवर्तक श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय' का जन्मोत्सव

– श्री हेमंत बागरेचा, राजगढ़ (मध्य प्रदेश)

मालव केसरी प्रसिद्धवक्ता श्री सौभाग्यमलजी म.सा. के शिष्य श्रमणसंघ के प्रवर्तक, मालव गौरव, संगठन शिरोमणि, प्रवर्तक श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय' का जन्म दिवस मंगलवार **28** नवम्बर को है। प्रवर्तक श्रीजी ने मात्र **14** वर्ष की आयु मे संयम पथ अंगीकार कर अपने गुरुदेव श्री सौभाग्यमल जी म.सा. एवं शिक्षा प्रदाता श्री जीवनमुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य को प्राप्त कर आगम, अद्भुत प्रवचन कला, ज्योतिष आदि का गहन अध्ययन किया। आप गुरु आदेश को सर्वोपरि मानकर सदैव उसके अनुरूप ही संयमी जीवन का निर्वहन कर रहे हैं। आपकी वाणी एवं ओजस्वी प्रवचन शैली से हर कोई आपका गुणानुवाद कर रहा हैं। आपके द्वारा दिया गया निर्णय सदैव संघ हितार्थ, जन हितार्थ व परिवार हितार्थ ही होता है। आप सदैव संघ एवं परिवार की एकता के पक्षधर रहे हैं। आपका विहार क्षेत्र मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र आदि विभिन्न प्रांत में रहा है। मालवा, निमाड़, डूँगर में आपके श्रद्धालु विशेष रूप से विद्यमान हैं। संयमी जीवन में अनेक महापुरुषों का पावन सान्निध्य आपको प्राप्त हुआ। आप सदैव श्रमणसंघ की गति-प्रगति के लिए सतत प्रयत्नशील रहते हैं। आपके सम्पर्क में आने वाले सभी संत-सतियांजी म.सा. चाहे वे श्रमणसंघ के हो या अन्य किसी भी सम्प्रदाय के, सभी के प्रति आपका वात्सल्य एक समान रहता है। आपने, अपने संयम जीवन में बहुत कठिन संघर्ष सहे। आपके गुरु श्री सौभाग्य का निर्देश कि "चाहे जैसी परिस्थितियां बनें, कभी भी श्रमणसंघ नहीं छोड़ना।" – आज भी आप अपने गुरुदेव के आदेश का, पूरी निष्ठा से पालन कर रहे हैं।

आपके चेहरे पर सदैव प्रसन्नता विद्यमान रहती है चाहे जो परिस्थिति हो। आपका संयमी जीवन बहते जल की तरह निर्मल एवं स्फटिक के समान पारदर्शी है। हर कोई आपके दर्शन के लिए सदैव आतुर रहता है।

आपके जन्मदिवस पर आपके श्री चरणों में बारम्बार वंदन-नमन! आप दीर्घायु हों, शतायु हों, आपका मार्गदर्शन सदैव जैन जगत को मिलता रहे, यही मंगलमनीषा ! आपके श्रीचरणों में बारम्बार वन्दन-नमन !! ❖❖

विवाह संबंध में देरी - समाज की जटिल समस्या

- श्री गौतमचंद दुगड़ जैन, चेन्नई - राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य : जैन कॉन्फ्रेंस

प्राचीन काल में विवाह आदि के रिश्ते सुगम थे तथा बहुविवाह की प्रथा भी थी । साथ ही साथ एक ही परिवार के भाईयों में सगी बहनों का विवाह भी हो जाता है । जब से हिन्दु कोड बिल आया तब से जैन मतावलम्बी भी उसी का अनुसरण करने लगे । बहु विवाह की प्रथा समाप्त कर दी गई जबकि जैनागमों में बहु पत्नी प्रथा का स्पष्ट उल्लेख है, यही कारण था कि उस समय करोड़ों की संख्या में जिनमतानुयायी थे । कालान्तर में धीरे-धीरे यह संख्या घटती गई तथा आजादी के बाद तो हम जैन लाखों में ही शेष रह गये ।

पूर्व में सही समय पर परिणय होने से समाज में खुशहाली का माहौल था। प्राचीनकाल में तो वृतांत आते हैं कि अमुक राजा के इतनी पत्नियाँ रहीं। अधिकांश राजा-महाराजाओं के बहु विवाह संपन्न होते थे, किन्तु आज यह परिस्थिति बदल चुकी है, लड़कों की तुलना में लड़की का अनुपात निरंतर घट रहा है, पिछली जनगणना के अनुसार 1000 पुरुषों की तुलना में 922 लड़कियां थीं, जो क्रमशः कम होती जा रही हैं। हमारे समाज में यह अनुपात एक आंकलन के अनुसार 1000 लड़कों के अनुपात में 830 लड़कियां ही हैं। इस बात को हम यूं भी कह सकते हैं कि जैसे भारतीय रेलवे के वेटिंग स्टेटस की तरह अनेक अविवाहित युवक वेटिंग में हैं।

समाज में लड़के-लड़कियों का समय पर विवाह हो, इस पर दिन-प्रतिदिन चिंताएँ बढ़ रही हैं। पहले माता-पिता उचित समय पर विवाह आदि को सम्पन्न कर लिया करते थे। आज से पचास वर्ष पूर्व ऐसी समस्या नगण्य सी थी किन्तु आजकल लड़कियों की तुलना में लड़कों की स्थिति तो अत्यंत दयनीय एवं सोचनीय है। पूर्व समय में 18-20 की उम्र होते-होते परिजन, सगे-सम्बंधी प्रायः रिश्ता करा देते थे। लड़के-लड़कियों को आपस में देखने का रिवाज़ नहीं रहता था और बड़ों की रज़ामंदी को ही वे स्वीकार कर लेते थे, बड़ों की बातें सभी को स्वीकार्य होती थी।

आज ऐसा नहीं है, रिश्तों को तय करने के पैमाने बदल गये हैं। धन-दौलत, हाई स्टैंडर्ड, पाश्चात्य संस्कृति, सभ्यता व कल्चर आज अनेक जगह रिश्तों के अलग पैमाने हो गये हैं। आज के समय में व्यक्ति संयुक्त परिवार से मुक्त होकर अपनी स्वयं की सोच से कार्य कर रहा है। आज अधिकांश कन्या पक्ष की सोच, उनसे दस गुना साधन सम्पन्न परिवार उसकी पुत्री को मिले, पुत्री के हित में उनकी यह सोच सही भी है, लेकिन अनेक बार यह पैमाना समाज के लिए घातक होता है। धन-लक्ष्मी तो चंचल है, आज जिसके पास है ज़रूरी नहीं भविष्य में उसी के पास रहे। आज जो व्यक्ति सामान्य जीवन यापन कर रहा है, वह भविष्य में धन-लक्ष्मी की कृपा से सुख-सम्पन्न जीवन जी सकता है।

ऐसे सैंकड़ों उदाहरण हैं जो किसी भी व्यक्ति को वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करते समय गुण, प्रतिभा, संस्कार देखने चाहिएं। कन्या की उम्र इस चक्कर में बढ़ती है। पूर्व के समय में जल्दी विवाह होने से भरपूर समय उसे परिवार पोषण संतानोत्पत्ति में समय मिल जाता था किन्तु आज बढ़ती उम्र के साथ यह व्यवस्था भी कम हो रही है तथा साथ ही साथ आज समाज में उचित समय पर कन्या नहीं मिलने पर कुंवारे लड़कों की आयु बढ़ रही है। तीस-चालीस साल तक के हज़ारों युवा आज विवाह से वंचित हैं और दुल्हन के लिए नाना प्रयास जारी हैं।

प्रकृति के हिसाब से 27 प्लस की उम्र का पड़ाव चिंता देने वाला है। प्रयास करने के बावजूद रिश्ते न हो पाना, शंका-समाधान, पूजा-पाठ से लेकर वैवाहिक एजेंसियों के चक्कर लगाकर भी सफलता नहीं दिला पा रहे हैं। विवश होकर फिर उसे अन्य समाज की ओर रुख करना पड़ता है। किसी विद्वान ने कहा है -

हर इंसान में है कुछ ना कुछ कमियाँ,
उन्हें स्वीकार करने पर होती हैं शादियाँ ।
बेहतर और बेहतरीन खोजने की धुन में,
कहीं गंवा बैठे ना हमारे युवा यौवन की रोशनियाँ ।।

किसी व्यक्ति का घर बसने पर संबंधित परिवार का विकास संभव है अन्यथा वह पीढ़ी वहीं रुक जाएगी। एक परिवार कालांतर में कम हो जाएगा जिसका सीधा नुकसान हमारे समाज को होगा। इस विषय पर समाज को आज सोचने की अत्यंत आवश्यकता है। अगर हमारे वंश, परम्परा,

परिवार, अनुयायी ही नहीं बढ़ेंगे तो हमारा धर्म कैसे सुरक्षित रहेगा? कैसे प्रचारित होगा? हिन्दुस्तान की आज़ादी के बाद जिस अनुपात में जनसंख्या बढ़ी उस अनुपात में हम जैनों की संख्या बहुत कम बढ़ी। हाई एजुकेशन, फॉरेन जॉब, लिव-इन रिलेशनशिप, अंतर्जातीय विवाह आदि के कारण भी विवाह का समन्वय सामंजस्य बिगड़ रहा है। व्यक्ति परिवारवाद से मुक्त होकर स्वतंत्र रहना पसंद कर रहा है। व्यक्ति अपनी मर्ज़ी का मालिक बन रहा है। देर से विवाह होने पर अंतर्जातीय विवाह करने पर विवश रहता है और कई बार तो पैसे आदि के माध्यम से संबंध बनते हुए हमने सुने हैं। यह कितने टिकाऊ होते हैं, सभी को पता है। इस विषय पर कई बार असामाजिक घटनाएं घटित होते हुए भी हमने सुनी हैं। आज समाज को इस महत्वपूर्ण विषय पर चिंतन की अत्यंत आवश्यकता है। समाज में ऐसी व्यवस्थाएं बनें कि विवाह सम्बन्धी समस्याओं पर कार्य हो। बच्चों में बाल्यकाल से ही जैन संस्कृति एवं संस्कार का बीजारोपण हो ताकि वह अन्य जगह ना भटकें। **जैन की शादी जैन से हो इस पर व्यापक व्यवस्था होनी चाहिए।** विद्वानों को इस पर जागरूकता के साथ-साथ संगोष्ठी, प्रवचन आदि करने चाहियें तथा जागरूकता लाने का प्रयास करना चाहिये। विवाह संबंध में कतई देरी नहीं करनी चाहिए तथा अन्य समाज की कन्याएं लाने से बचना चाहिये, इससे संस्कृति एवं संस्कार प्रदूषित होंगे। समाजसेवी लोग आज लाखों रुपए खर्च अपने नाम के लिये कर रहे हैं, किन्तु इस विषय पर उन्हें कोई योजना बनाने की फुर्सत नहीं है, अत्यंत नगण्य रूप से हमारे सामाजिक संगठन इस पर कार्यरत हैं। आज इस मुद्दे पर चर्चा की अत्यंत आवश्यकता है। अगर हमारी जनसंख्या पर ही अवरोध सा लग जाए तो समाज के अन्य तामझाम किसी काम के नहीं रहेंगे। युवक-युवतियों को भी चाहिए कि वे अपने नखरों को सीमित कर इस पर विचार करें। स्वयं की ओर से, अपने परिवार को चिंतामुक्त करें।

विवाह की सफलता, भव्य मंडप से मत आंको,
सोना-चांदी और ना जवाहारात से आंको ।
सफलता तो छिपी है रिश्तों की गहराई में,
उसे आपसी स्नेह-समझ, सम्मान से आंको ।।

❖❖

जैन निर्जरा साधना पद्धति में प्रज्ञा

- **डॉ. बी. रमेश गादिया जैन**, बैंगलोर (कर्नाटक)

स्वाध्याय आराधना : वस्तुतः स्वाध्याय का सीधा संबंध श्रुतमयी प्रज्ञा से है। जैन दर्शन का मूल उद्घोष-**'पढ़मं णाणं तओ दया'** का है अर्थात साधक को प्रथम सम्यक् ज्ञान होना आवश्यक है। जिसकी साधना वह कर रहा है उसकी पूरी जानकारी उसे होना, नितांत आवश्यक है। इसीलिए जैन धर्म में स्वाध्याय को परम तप कहा गया है। प्राचीन काल से लेकर आज तक स्वाध्याय पर ज़ोर दिया गया है। आज भी ऐसे कई साधक है जिन्हें जैन आगम शास्त्र, कंठस्थ है। वे इनको सीखने में यावत्जीवन प्रयासरत हैं। **ध्यान-साधना :** वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा इनको जहां एक ओर स्वाध्याय आराधना का भेद माना गया है, वहीं दूसरी ओर ये पाँचों भेद, ध्यान-साधना में भी मान्य किए गए हैं। जहाँ स्वाध्याय आराधना में इनका रटन और पठन किया जाता है। वहीं ध्यान-साधना में इनके चिंतन-मनन पर बल दिया गया है। इसे ही चिंतनमयी प्रज्ञा कहा गया है। आज भी कई साधक हैं जो सुने-पढ़े गए शास्त्र पर चिंतन-मनन करते हैं। जैन संत-सतियों, विद्वान सभी आगम शास्त्र पर चिंतन-मनन पर ज़ोर देते हैं। **व्युत्सर्ग तपाचार :** जैन दर्शन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण तप-साधना है - व्युत्सर्ग तपाचार। इसके द्रव्य और भाव दो भेद होते हैं। द्रव्य व्युत्सर्ग में आहार, गण, उपधि और भक्तपान ऐसे चार भेद कहे हैं और भाव व्युत्सर्ग में कषाय, संसार और कर्म ये तीन भेद बताए गए हैं। इस तप की सम्यक् साधना से साधक, सिद्ध-बुद्ध और मुक्त हो जाता है। काल के प्रभाव शरीर में संहनन की कमी होने से व्युत्सर्ग तपाचार साधना नहीं के बराबर हो गई है। प्रतिसंलीनता तप-साधना, बाह्य तपाचार में और व्युत्सर्ग तपाचार, आभ्यंतर तपाचार में प्रमुख होते हुए भी इसकी आराधना-साना करनी तो दूर इसकी जानकारी भी बहुत कम साधकों को है। इसे अनुभूतिमयी (आचरणमयी) प्रज्ञा कहा गया है। इनके सैद्धांतिक पक्ष और प्रयोगात्मक पक्ष को लेखक की शोध पुस्तक में विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। बौद्ध दर्शन में भी इस पर प्रज्ञा साधना कहा गया है। आज बौद्ध धर्म इसी अनुभूतिप्रज्ञा के कारण संपूर्ण विश्व में फैला है। बौद्ध दर्शन की पद्धति है : झेण ध्यान। इसकी एक साधना विधि है - झाझेण ध्यान-साधना । सामायिक और झाझेण, ध्यान-साधना में बहुत सामंजस्यता है। जहां जैन धर्म में सामायिक आराधना, सैद्धांतिक रूप से उपलब्ध है वही बौद्ध धर्म की झाझेण ध्यान-साधना, प्रयोगात्मक रूप में उपलब्ध है। ❖❖

अहिंसा और पर्यावरण संरक्षण

- डॉ. एन. के. खींचा (सीनियर फैलो, आई.सी.एस.एस.आर., नई दिल्ली)

अहिंसा सम्यक् संतुलन का हेतु है। वस्तुतः मानवता का विकास सस्टेनेबिलिटी से होता है। अहिंसा के द्वारा पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण जीव मात्र के लिए सस्टेनेबल समाधान तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है। जीव मात्र की रक्षा एवं संवर्धन तथा क्लीन एनर्जी के लिए अहिंसा प्रतिबद्ध होती है। अहिंसा स्वयं पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण है।

चारित्र पाहुड ग्रन्थ में हिंसा से विरति को अहिंसा कहा गया है। (चारित्र पाहूड 30) अहिंसा महाव्रतों एवं अणुव्रतों के पालन हेतु वचनगुप्ति, मनोगुप्ति, ईर्या समिति, सुदान-निक्षेप तथा अवलोक्य मार्ग है। पर्यावरणीय नैतिकी (Environmental Ethics) के लिए सर्वप्रथम अहिंसा व्रत आवश्यक है तभी पारिस्थितिकीय स्थापत्य, हरित स्थापत्य, स्थानीय पारिस्थितिकी, संभव होगी ताकि ईकोलॉजिकली साउंड अरबन प्लानिंग (ESUP) हो सकती है। जीवन संस्कृति का मूलाधार ही अहिंसा है।

'परस्परोपग्रहो जीवानाम्'' (तत्वार्थ सूत्र 5-21) की मुख्य धुरी है, पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण की सहोदर भावना आधार है। अहिंसामय जीवनचर्या है।

चूंकि पर्यावरण संरक्षण का आधार ही अहिंसा है। अहिंसा से ही परस्पर जीवों में सहजीवन, बंधुत्व, दया, अनुकंपा, करुणा, सेवा तथा वात्सल्य संभव है। शाकाहारी होना अहिंसक वृत्ति का प्रथम लक्षण है। अहिंसा को महाभारत के आदिपर्व, वनपर्व तथा अनुशासन पर्व में 'अहिंसा परमो धर्मः' की संज्ञा दी गई है। अहिंसा परम धर्म है, आत्म-संयम है, परम सत्य है। अहिंसा परम पुरुषार्थ है। अहिंसा एवं आचरण (Conduct) ही पर्यावरण संरक्षण है। अहिंसा जीवन का परम सत्य है। अहिंसा पर्यावरण सुरक्षा का मंत्र है। अहिंसा स्वयं पर अनुग्रह है। अहिंसा का आरम्भ अपरिग्रह से है। अहिंसा जीवन का शोधक तत्व है। अहिंसा, आत्मशुद्धि का मार्ग है। अहिंसा सभी प्रदूषणों के निवारण के लिए रामबाण है। अहिंसा का आधार कायरता नहीं बल्कि वीरता है, साहस है। अहिंसा संयम है, तप है, पुरुषार्थ है, जीवन मात्र के लिए सम्मान है। अहिंसा, अन्तर्मन का सम्पूर्ण रूपान्तरण है।

अहिंसा ही परम ब्रह्मस्वरूप है। अहिंसा मुक्ति का मार्ग है। अहिंसा आत्महित करती है। व्यवहार जगत में तप, श्रुत, यम, आत्मज्ञान, ध्यान, दान, सत्य, शील व्रतादिक श्रेष्ठ कृत्य है, उन सबकी धुरी अहिंसा ही है। अहिंसा सर्व जीवधारियों की रक्षा करती है। अहिंसा जीवन का परम आदर्श है। अहिंसा का लक्ष्य जीवन शोधन है। अहिंसा द्रव्य शुद्धि एवं भाव शुद्धि होती है। अहिंसा सामाजिक साम्य है। अहिंसा पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण का पर्यवेक्षण है। पर्यावरण संरक्षण का मूल स्तम्भ अहिंसा है। अहिंसा प्रथम अहिंसाणुव्रत है। पर्यावरण संरक्षण हेतु अहिंसा शुभ प्रक्रिया है। पर्यावरण क्षरण का मुख्य कारक है, पर-पदार्थ के प्रति राग, आसक्ति एवं लोभ। जबकि अहिंसा का मार्ग अपरिग्रह का हेतु है। अपरिग्रह से स्वतः ही पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण होता है। अहिंसा संयम है। अहिंसा जीवन का आधारभूत मूल्य है। अहिंसा जीवन शुद्धि और समृद्धि का मार्ग है। अहिंसा जीवन में मैत्री, वात्सल्य, शांति रूपी जल का प्रोक्षण (छिड़काव) करती है। अहिंसा लोक में जीवमात्र में सहोदर भावना पोषित करती है।

24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने देशना दी कि **'सव्वे पाणा पियाउपा सुहसाया दुक्खपडिकल्प'** यानि कि समस्त जीवों को अपना जीवन प्रिय है, उन्हें सुख अच्छा लगता है तथा दुःख प्रतिकूल लगता है। जीवन में राग-द्वेष और मोह की अनुत्पत्ति ही अहिंसा है। अहिंसा के अतिरिक्त सब व्रत, अहिंसा की परिपालना के लिए ही हैं। अतः जीव परस्पर उपकार करें। वस्तुतः करुणा (Compassion) जीव मात्र का स्वभाव है। जैन संस्कृति के अनुसार सभी प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव, प्रमोदभाव तथा दुःखियों के प्रति करुणा भाव रखना ही उत्तम है।

जैन संस्कृति का ध्येय है कि किसी से वैर नहीं बल्कि सभी प्राणियों के प्रति मित्रता हो। प्रत्येक जीव परस्पर उपकार करें। महावीर की देशना है कि **'मित्ती मे सव्वभुएसु, वेरं**

मज्झं ण केणइ।' अहिंसा और मैत्री एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जैन संस्कृति न केवल प्राणी बल्कि पृथ्वी, जल, वायु आदि की भी हिंसा न करने का संदेश देती है। जैन संस्कृति में अहिंसा के पर्यायवाची के रूप में अनुकम्पा का प्रयोग हुआ है। अनुकम्पा पर-पीड़ा का स्व-संवेदन है।

प्रश्नव्याकरण सूत्र में कहा गया है कि समस्त जीवों का रक्षण और परस्पर दया करें। सभी जीवों को आत्मतुल्य मानें। आचारांग सूत्र में निर्देशित किया गया है कि सभी जीवों को समान मानें अर्थात् आत्मवत् सर्वभूतेषु मानें। दैनिक व्यवहार में चुनाव (Selection) आवश्यक होने पर ही अल्पतम हिंसा का ही व्यवहार जगत में अपनाना चाहिए। मन, वचन और काया से हिंसा का त्याग करें - (आचारांग अध्याय 6 सूत्र 107)।

समाज जीवन का आधार सकारात्मक (Positive) अहिंसा है, वह भी सापेक्ष अहिंसा है किन्तु सकारात्मक अहिंसा में घटित हिंसा, हिंसा ही है। हिंसा से ही प्रदूषण फैलता है। हिंसा और अहिंसा मुख्य रूप से व्यक्ति के आन्तरिक मनः स्थिति का परिणाम है। निर्णय हेतु विवेक बुद्धि अपेक्षित होती है। अहिंसा सभी त्रस एवं स्थावर जीवों का क्षेम कुशल मंगलकारी होती है। अतः किसी प्राण का वध न करें तथा दूसरों पर शासन करना अथवा दास (गुलाम) बनाना अथवा अशान्त करना भी आचारांग सूत्र आगम में निषिद्ध बताया गया है।

अनुकम्पा क्या है? इसे इस प्रकार से समझा जा सकता है कि दुःखी प्राणी के दुःख से स्वयं दुःख का अनुभव कर उसके प्रति करुणा जनित व्यवहार भाव ही अनुकम्पा है। अहिंसा को व्यवहार जगत में अपनाने के लिए जैन संस्कृति में यतना (विवेक) को प्रतिक्षण अपनाने पर (प्रवृत्ति पर) ज़ोर दिया गया है।

यतना से भाव विशुद्धि रहती है, अपने परिणामों को शुद्ध रखें क्योंकि अशुभ परिणाम (भाव) के कारण यदि जीवों का घात (हिंसा) होता है तो वह हिंसा (Violence) है। पर्यावरण शुद्धि बनाये रखने के लिए मैत्री प्रमोद, करुणा और माध्यस्थ भाव जो कि शुभ भाव है, शुद्ध भाव से व्यवहार जगत में जीवनचर्या करने से कषाय (Passions) नहीं अपनाते हैं। हिंसा न होना, पर्यावरण का रक्षण है। मित्र भाव में सर्वहितकारी भाव ही पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण है क्योंकि सुप्रवृत्ति ही आत्मा मित्र भाव है तथा दुष्प्रवृत्ति अमित्र (शत्रु) भाव है। सभी जीवों के प्रति मैत्री भाव, गुणवानों के प्रति प्रमोद भाव तथा दुखियों के प्रति करुणा भाव तथा अविनीतों के प्रति माध्यस्थ भाव रखना ही हिंसा रूपी प्रदूषणों से बचाव है। जैन संस्कृति में करुणा को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया है किन्तु अप्रमाद, आलस्य, तन्द्रा, मूर्च्छा तथा अविवेक एवं लापरवाही के कारण अयतनापूर्वक की गई प्रवृत्ति से हुई प्राणातिपात हिंसा है। अतः अहिंसा ही संवर का प्रथम द्वार है। जैन संस्कृति में वध, बंध विच्छेद, अतिभाररोपण, भक्तपान विच्छेद से बचना अहिंसा है। इसी प्रकार अनर्थदण्ड विरमणव्रत धारण करने से विविध प्रकार की हिंसा से बचा जा सकता है। जिसमें अपध्यानाचरित, प्रमादाचरित, हिस्तप्रदान या पोपदेश प्रमुख है। वस्तुतः सभी जीवों को अपना जीवन प्रिय है। वध (मरण) सबको अप्रिय है। अतः किसी भी प्राणी की घात हिंसा नहीं करना चाहिए। अशुभ भाव (परिणाम) भी हिंसा है। अहिंसा ही संस्कृति है। त्रस-हिंसा से बचना भी अणुव्रत है। शुभ भाव ही पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण है। अकषाय भाव ही आत्म स्वभाव है। यही सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र की साधना है। राग-द्वेष रहित वीतराग भाव ही संवर और निर्जरा है जो कि पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण का मूल है।

शस्त्र (हिंसा) तो एक से बढ़कर एक हैं किन्तु अशस्त्र (अहिंसा) एक से बढ़कर एक नहीं है। अहिंसा की साधना से पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण साधना है। ज्ञानी (विवेकवान) होने का सार यही है कि किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। हिंसा के अनुमोदन से भी दुःख होता है। विवेकशील (साधनाशील) मानव हिंसा का त्याग कर देता है। कहा भी गया है **'प्रमत्त योगात्प्राण व्यपरोपणं हिंसा'** अर्थात् असावधानी अथवा अविवेकपूर्ण आचरण के व्यवहार से जीवों का घात होता है, वह हिंसा है। अतएव हिंसा से बचें ताकि पर्यावरण चेतना एवं संरक्षण आपके व्यवहार में स्वतः ही आ सके। ❖❖

जिन्हें किसी चीज का लालच नहीं होता है,
वो ज़िन्दगी में अपना
काम बहुत जिम्मेदारी से करते हैं !!

दिलों को झकझोरती प्रेरक कहानी ...

उपकारों से उपकृत लघु भ्राता की उदारता

प्रस्तुति : श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, राष्ट्रीय मंत्री, जैन कॉन्फ्रेस-बैंगलोर (कर्नाटक)

"भैया ! परसों नवनिर्मित मकान में गृह-प्रवेश है। छुट्टी (रविवार) का दिन है। आप सभी को आना है, मैं गाड़ी भेज दूँगा।" छोटे भाई लक्ष्मण ने बड़े भाई भरत से मोबाईल पर बात करते हुए कहा। "क्या छोटे, किराये के किसी दूसरे मकान में शिफ्ट हो रहे हो?" "नहीं भैया, ये अपना मकान है, किराये का नहीं।" अपना मकान, भरपूर आश्चर्य के साथ भरत के मुँह से निकला। "छोटे तूने बताया भी नहीं कि तूने अपना मकान ले लिया है।" बस भैया, कहते हुए लक्ष्मण ने फोन काट दिया। 'अपना मकान', 'बस भैया' ये शब्द भरत के दिमाग में हथौड़े की तरह बज रहे थे।

भरत और लक्ष्मण दो सगे भाई और उन दोनों में उम्र का अंतर था करीब पन्द्रह साल। लक्ष्मण जब करीब सात साल का था तभी उनके माँ-बाप की एक दुर्घटना में मौत हो गयी। अब लक्ष्मण के पालन-पोषण की सारी ज़िम्मेदारी भरत पर थी। इस चक्कर में उसने जल्दी ही शादी कर ली कि जिससे लक्ष्मण की देख-रेख ठीक से हो जाये। प्राईवेट कम्पनी में क्लर्क का काम करते भरत की तनख्वाह का बड़ा हिस्सा दो कमरे के किराये के मकान और लक्ष्मण की पढ़ाई व रहन-सहन में खर्च हो जाता। इस चक्कर में शादी के कई साल बाद तक भी भरत ने बच्चे पैदा नहीं किये। जितना बड़ा परिवार उतना ज्यादा खर्चा।

पढ़ाई पूरी होते ही लक्ष्मण की नौकरी एक अच्छी कम्पनी में लग गयी और फिर जल्द शादी भी हो गयी। बड़े भाई के साथ रहने की जगह कम पड़ने के कारण उसने एक दूसरा किराये का मकान ले लिया। वैसे भी अब भरत के पास भी दो बच्चे थे, लड़की बड़ी और लड़का छोटा। मकान लेने की बात जब भरत ने अपनी बीबी को बताई तो उसकी आँखों में आँसू आ गये। वो बोली, 'देवर जी के लिये हमने क्या नहीं किया। कभी अपने बच्चों को बढ़िया नहीं पहनाया। कभी घर में महँगी सब्जी या महँगे फल नहीं आये। दुःख इस बात का नहीं कि उन्होंने अपना मकान ले लिया, दुःख इस बात का है कि ये बात उन्होंने हमसे छिपा के रखी।

इतवार की सुबह लक्ष्मण द्वारा भेजी गाड़ी, भरत के परिवार को लेकर एक सुन्दर से मकान के आगे खड़ी हो गयी। मकान को देखकर भरत के मन में एक हूक सी उठी। मकान बाहर से जितना सुन्दर था अन्दर से उससे भी ज्यादा सुन्दर। हर तरह की सुख-सुविधा का पूरा इन्तजाम। उस मकान के दो एक जैसे हिस्से देखकर भरत ने मन ही मन कहा, 'देखो छोटे को अपने दोनों लड़कों की कितनी चिन्ता है। दोनों के लिये अभी से एक जैसे दो हिस्से (Portion) तैयार कराये हैं। पूरा मकान सवा-डेढ़ करोड़ रुपयों से कम नहीं होगा और एक मैं हूँ, जिसके पास जवान बेटी की शादी के लिये लाख-दो लाख रुपयों का इन्तजाम भी नहीं है।'

मकान देखते समय भरत की आँखों में आँसू थे, जिन्हें उन्होंने बड़ी मुश्किल से बाहर आने से रोका। तभी पण्डित जी ने आवाज लगाई, 'हवन का समय हो रहा है, मकान के स्वामी हवन के लिये अग्नि-कुण्ड के सामने बैठें।' लक्ष्मण के दोस्तों ने कहा, 'पण्डित जी तुम्हें बुला रहे हैं। यह सुन लक्ष्मण बोले, 'इस मकान का स्वामी मैं अकेला नहीं, मेरे बड़े भाई भरत भी हैं। आज मैं जो भी हूँ सिर्फ और सिर्फ इनकी बदौलत। इस मकान के दो हिस्से हैं, एक उनका और एक मेरा।' हवन कुण्ड के सामने बैठते समय लक्ष्मण ने भरत के कान में फुसफुसाते हुए कहा, 'भैया, बिटिया की शादी की चिन्ता बिल्कुल न करना। उसकी शादी हम दोनों मिलकर करेंगे।' पूरे हवन के दौरान भरत अपनी आँखों से बहते पानी को पोंछ रहे थे, जबकि हवन की अग्नि में धुँए का नामोनिशान न था।

❖❖

चिन्तामणि सम देव भव से भी बढ़कर मानव भव मिलता है ।

अक्टूबर 2023 माह में सम्पन्न कार्यों की प्रगति रिपोर्ट ...

जैन कॉन्फ्रेंस की साधु-साध्वीवृन्द की सेवार्थ गठित राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा समर्पण भावों के साथ जारी सेवा कार्यों का प्रेरणात्मक विवरण

बैंगलुरु (कर्नाटक) : जैन कॉन्फ्रेंस की अति महत्वपूर्ण वैय्यावच्च योजना द्वारा सेवा कार्यों को पूर्व की भांति अक्टूबर माह में भी गति प्रदान की गई है। वर्तमान में चातुर्मास चल रहे हैं और हर प्रांत की वैय्यावच्च समितियों ने स्थानीय श्रीसंघ और उनके पदाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर सम्पूर्ण देश में वैय्यावच्च गतिविधियों के माध्यम से पूज्य गुरु भगवंतों के लिए सेवा कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है। वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि सितम्बर माह की भाँति इस अक्टूबर माह में भी लगभग 70-80 के आस-पास सक्षम संघों ने सेवादारों को मासिक वेतन प्रदान किया है। राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना की केन्द्रीय समिति ने विभिन्न सिंघाड़ों के सेवादारों को 2,27,500 रुपये की धनराशि वेतन के रूप में प्रदान की है। पूज्य गुरु भगवंतों की स्वास्थ्य सुरक्षा हेतु 36,440 रुपये की दवाईयाँ कोरियर के माध्यम से उन तक भिजवाई गई हैं। 16,500 रुपये की धनराशि से 7 व्हील चेयर खरीदे गये। इस प्रकार कुल 2,80,440 रुपये की धनराशि वैय्यावच्च गतिविधियों में अक्टूबर माह में खर्च की गई। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन, वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी, राष्ट्रीय मंत्री श्री मनोहरलालजी लोढ़ा, योजना की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती प्रेमलताजी राजावत, राष्ट्रीय महिला मंत्री श्रीमती मनीषाजी कागरेचा, योजना के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुलजी ने सभी दानदाताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए वैय्यावच्च सेवा में रुचि रखने वाले सभी महानुभावों से योजना में अधिकाधिक सहयोग देने की अपील की है। वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचन्द जी सिंघवी जैन द्वारा साधु-साध्वीवृन्द के प्रति सेवा कार्यों को जहां मुक्त हस्त से पूरा किया जा रहा है वहीं आप पूज्यवर्ग की सेवा को अपना परम सौभाग्य मानते हैं, उन्होंने जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमल जी छल्लाणी जैन सा. को इस पुण्यात्मक कार्य से जोड़ने के लिए अपनी एवं अपनी टीम की ओर से आभार प्रकट किया।

VAYYAVACCH YOJANA ACCOUNT

SHRI ALL INDIA S. S. JAIN CONFERENCE
CANARA BANK BRANCH
GOLE MARKET, NEW DELHI 110001
ACCOUNT NO - 0270101137280 - IFSC CODE : CNRB0000270

(पृष्ठ संख्या 32 का शेष भाग)

है। परम पूज्य चौबीसों तीर्थंकर, श्रद्धेय गणधर एवं प्रथमाचार्य श्री सुधर्मा आदि से प्रारम्भ प्रतिभाएं यथावत् हैं। जिनशासन की समस्त व्यवस्थाएं एवं विचार यथावत् हैं। यह विरोध तो मूल रूप से उन छत्र, चामर और पालकियों का था, जो जनता को अनसुना करके अपनी छिछली सामंतशाही थोपा करते थे। इत्र, फुलेल, माला और कीमती दुशालों पर वे अपना अधिकार समझते थे। मेरा निवेदन है कि समाज और खासकर स्वाध्यायी ऐसा तत्वज्ञान ग्रहण करें जो नीर-क्षीर-विवेक को प्रधानता देता हो। जिस कार्य में आहत करने का भाव न हो, वो ही कार्य अहिंसात्मक है। जिन दर्शन की मूल भावना से जुड़ा हुआ है। यहाँ श्रीयुत वीर लोंकाशाह का श्रद्धा-स्मरण करते हुए हम यह संकल्प लें कि जिनवाणी के आधार पर सबको जोड़ने का काम हम करेंगे। समता, समन्वय एवं विवेक युक्त श्रद्धा, आडम्बरों का निषेध, तप-त्याग, सेवा और सद्भावना ही जैन श्रद्धालुओं का जीवन आधार है। इसे सम्भालें तथा संजोए रखें एवं निरंतर गतिमान रखें। ❖❖

समाचार प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा

एवं वार्षिक साधारण सभा का दो दिवसीय आयोजन नई दिल्ली में सफलतापूर्वक सम्पन्न

तीनों ही सभाओं में संविधान संशोधन समिति द्वारा प्रस्तावित संविधान पूर्ण बहुमत से पारित

'जो भी महानुभाव पूर्व में राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके हैं, वे महानुभाव दोबारा राष्ट्रीय अध्यक्ष पद की नामांकन प्रक्रिया का हिस्सा नहीं होंगे', प्रस्ताव पूर्ण बहुमत से पारित

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा का आयोजन सोमवार, दिनांक 30 एवं साधारण सभा का आयोजन मंगलवार, 31 अक्टूबर 2023 को जैन भवन, गोल मार्किट, नई दिल्ली में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन की अध्यक्षता तथा माननीय हाईकोर्ट द्वारा तीनों सभाओं के लिए नियुक्त किये गए ऑब्जर्वर पूर्व हाईकोर्ट जज श्रीमान अजितजी भरिहोक के निरीक्षण में सफलतापूर्वक किया गया। तीनों सभाओं का सफल संचालन जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुलजी जैन द्वारा प्रभावशाली रूप से किया गया।

तीनों सभाओं की शुरुआत मंगलाचरण के द्वारा राष्ट्रीय महिला शाखा की सदस्याओं द्वारा नवकार महामंत्र की प्रस्तुति के साथ किया गया। सभा के सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु संविधान संशोधान समिति द्वारा प्रस्तावित संविधान को राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा एवं साधारण सभा द्वारा पूर्ण बहुमत के साथ पारित किया गया। प्रस्तावित सभी दस संशोधनों को बहुमत के साथ पारित कर जैन कॉन्फ्रेंस के संविधान में शामिल किया जाएगा। सबसे महत्वपूर्ण प्रस्तावित संविधान संशोधन के प्वाइंट नंबर एक के अनुसार **'जो भी महानुभाव पूर्व में राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके हैं, वे महानुभाव दोबारा राष्ट्रीय अध्यक्ष पद की नामांकन प्रक्रिया का हिस्सा नहीं होंगे'** को उपस्थित सभी सदस्यों ने राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा व राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा में, उनकी कुल सदस्य संख्या की 2/3 सदस्यों के लिखित बहुमत से पारित किया एवं साधारण सभा में उपस्थित सदस्यों के 3/4 सदस्यों से भी अधिक सदस्यों की सहमति के साथ पूर्ण बहुमत से पारित कर दिया गया। प्रस्तावित संविधान संशोधन के पूर्ण बहुमत से पारित होने पर सभी ने हर्ष-हर्ष, जय-जय के साथ अपनी सहमति प्रदान की। इसके अलावा सभा के सभी मुख्य बिन्दुओं को सदन के सम्मुख प्रस्तुत कर चर्चा की गई, जिन पर वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए सभी विषयों को सर्वसम्मति से पारित किया। तीनों ही सभाओं में जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारियों, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यों, कार्यकर्ताओं एवं आजीवन सदस्यों की उपस्थिति बहुत सराहनीय रही।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री श्री जीवनराजजी पुनमिया जैन, श्री सुदर्शनजी दुग्गड़ जैन, श्री किरणजी गांधी जैन एवं इचलकरंजी, कोल्हापुर के आजीवन सदस्यों द्वारा लिखित निवेदन कि **'पंचम ज़ोन का निकटवर्ती क्षेत्र इचलकरंजी और कोल्हापुर हैं, इसके आस-पास के सभी क्षेत्र पंचम ज़ोन में हैं। अतः इचलकरंजी और कोल्हापुर को चतुर्थ ज़ोन से हटाकर पंचम ज़ोन में शामिल किया जाए, जिससे क्षेत्रवासियों की भावना का सम्मान हो तथा सदस्यों का यात्रा पर अनावश्यक समय और खर्च को बचाया सके'** इस प्रस्ताव पर तीनों ही सभाओं में इचलकरंजी और कोल्हापुर को चतुर्थ ज़ोन से हटाकर पंचम ज़ोन में सम्मिलित करने की स्वीकृति प्रदान कर सर्वसम्मति से इस प्रस्ताव को पारित किया गया।

इस अवसर पर जैन भवन में मौजूद कमरों के पुनर्निर्माण हेतु नगरसेठ श्री एस. महावीरचंदजी कांकरिया के दिव्य आशीष से एम. कमलादेवी कांकरिया, एम. पदमचंद, राजकुमार, नरेश, पंकज कांकरिया, पोरूर-चेन्नई (जसनगर) द्वारा जैन कॉन्फ्रेंस

के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री पदमचंदजी कांकरिया जैन द्वारा पाँच लाख रुपये की दानराशि प्रदान कर कमरा नंबर बी-1, देवानुप्रिय श्री मिश्रीलालजी व श्रीमती प्यारीबाई गुगलिया के शुभाशीष से समर्पित समर्पणकर्ता जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री एम. गौतमचंदजी गुगलिया जैन, सौ. कमलादेवी, नवरतन-कौशल्यज्ञ, प्रवेश-शर्मिला, श्रवण-भावना, डॉ. टीशा, हर्षिता, प्रिया, गुंजन, ईशांत, लविक एवं समस्त गुगलिया जैन परिवार सिकंदराबाद (तेलंगाना)-राणावास (राजस्थान) नमिता-अमितजी, तन्वी गाँधी, रत्नागिरी-(महाराष्ट्र) द्वारा पाँच लाख रुपये की दानराशि प्रदान कर कमरा नंबर बी-2 एवं श्रेष्ठिवर्य स्व. श्री मोहनलालजी मुथा एवं स्व. श्री तरुणकुमारजी मुथा की पावन स्मृति में श्रीमती मैनाबाई-मोहनलालजी मुथा, श्रीमती कल्पना-महावीरचंदजी मुथा, श्रीमती ऊषा-रजेशकुमारजी मुथा, श्रीमती जागृति-संकेशजी मुथा शांतिनगर, बैंगलुरू (बगड़ीनगर, राजस्थान) द्वारा पाँच लाख रुपये की दानराशि प्रदान कर कमरा नंबर बी-3 का उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन, विश्वस्त मण्डल के चेयरमैन श्री रमनलालजी लुंकड़ जैन एवं उपस्थित राष्ट्रीय पदाधिकारियों की मौजूदगी में किया गया। इस अवसर पर उपस्थित महानुभावों द्वारा ने हर्षनाद करते हुए दानदाताओं की जय-जयकार के साथ अनुमोदना की गई।

उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन ने अपने उद्बोधन में जैन कॉन्फ्रेंस की योजनाओं के राष्ट्रीय अध्यक्षों, मंत्रीगण, दानदाताओं एवं सभी पदाधिकारियों द्वारा जैन कॉन्फ्रेंस के सतत विकास हेतु किये जा रहे सहयोग तथा कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए अनुमोदना की गई।

मंचासीन पदाधिकारियों में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन, माननीय हाई कोर्ट द्वारा तीनों ही सभाओं के लिए ऑब्जर्वर नियुक्त किये गए हाईकोर्ट के पूर्व जज श्रीमान अजितजी भरिहोक, राष्ट्रीय चेयरमैन श्री सुभाषजी ओसवाल जैन, विश्वस्त मण्डल चेयरमैन श्री रमनलालजी लुंकड़ जैन, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पारसमलजी मोदी जैन, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री अशोककुमारजी मेहता जैन, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे.डी. जैन तथा श्री अविनाशजी चोरड़िया जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री रमेशजी भण्डारी जैन, श्री अशोकजी बाबूसेठ बोरा जैन व श्री सुरेशचंदजी छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री दिनेशकुमारजी भलगट जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री पदमचंदजी कांकरिया जैन, राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री जसवंतजी जैन, कई योजनाओं के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं मंत्रीगण, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री पदमचंदजी आच्छा जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती पुष्पाजी गोखरू जैन तथा उपस्थित पदाधिकारियों में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्रीगण, राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्रीगण, राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्रीगण, राष्ट्रीय संगठन मंत्रीगण, अनेक प्रांतीय अध्यक्ष, महामंत्री एवं कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यगण एवं कार्यकर्ता, श्रीमती सुशीलाजी आनंदमलजी छल्लाणी जैन, श्रीमती संतोषजी आच्छा जैन, दिल्ली प्रान्तीय महिला अध्यक्षा श्रीमती शीलाजी जैन एवं जैन कॉन्फ्रेंस आजीवन सदस्यों की उपस्थिति सराहनीय रही। इस अवसर पर गौतम प्रसादी का सुंदर आयोजन आदरणीया मातुश्री श्रीमती ऊषाजी जैन (मातेश्वरी श्री अभयजी जैन, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुलजी जैन एवं श्री अमितजी जैन) परिवार की ओर से किया गया।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुलजी जैन ने तीनों सभाओं के सदन में उपस्थित रहने वाले ऑब्जर्वर हाईकोर्ट के पूर्व जज श्रीमान अजितजी भरिहोक के अलावा पदाधिकारियों, कार्यकारिणी समिति सदस्यों एवं अन्य सदस्यों के प्रति सभाओं को सफल बनाने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया। अंत में श्री जे. डी. जैन जी द्वारा मांगलिक प्रदान किया गया।

प्रेषक : अतुल जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

मानवता के सूत्र

ओ जीने वाले जीना है तो जीवन मधुर बनाया कर ।
तन से, मन से और वाणी से अमृत कण बरसाया कर।

जो बढ़ता है बढ़ने दे जीवन के शिखर पर चढ़ने दे ।
मन में ज्वाला मत उमड़ने दे, मन को मत व्यर्थ जलाया कर।

राजस्थान प्रान्त के श्रीसंघों के प्रतिनिधियों का दो दिवसीय सम्मेलन आयोजित

उदयपुर (राजस्थान) : श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रान्त के तत्वावधान में श्रमण संघ से सम्बन्धित राजस्थान प्रान्त के श्रीसंघों के प्रतिनिधियों का दो दिवसीय वृहद सम्मेलन का आयोजन कामलीघाट मेवाड भवन में 7-8 अक्टूबर, 2023 में श्रमण संघीय आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के शुभ आशीर्वाद से सम्पन्न हुआ जिसमें श्रीसंघों के अध्यक्ष/मंत्री/कोषाध्यक्ष आदि महानुभाव शामिल रहे, इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुलजी जैन, ज्ञानप्रकाश योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजयजी बाफना जैन, संविधान संशोधन समिति के सह-संयोजक श्री जयप्रकाशजी ललवानी जैन, आई.एफ.एस. श्री आर. के. जैन सा., राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती पुष्पाजी गोखरू जैन उपस्थित थे।

सर्वप्रथम प्रान्तीय अध्यक्षा श्रीमती नीताजी बाबेल जैन एवं टीम द्वारा मंगलाचरण हुआ तत्पश्चात् अतिथियों द्वारा ध्वजारोहण किया गया एवं सम्मेलन हॉल के पर्दे का अनारवण कराया गया। जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रान्त के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री निर्मल पोखरना जैन द्वारा सम्मेलन में पधारे हुए सभी अतिथियों व सभी श्रीसंघ के पदाधिकारियों का हार्दिक स्वागत व अभिनन्दन किया गया। प्रान्तीय महामंत्री श्री शान्तिलालजी मारू जैन द्वारा प्रान्तीय प्रतिवेदन पढ़कर सुनाया गया। प्रान्तीय मंत्री श्री सिद्धराजसिंहजी द्वारा आचार्य सम्राट डॉ. शिवमुनिजी म.सा., युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा., उपाध्याय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा., प्रवर्तक श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा. की ओर से सम्मेलन की सफलता के सम्बन्ध में प्रेषित मंगल संदेश पढ़कर सुनाए गए। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य श्रमण संघ की मज़बूती और इसे और भी सुदृढ़ कैसे बने, इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत करने हेतु राजस्थान प्रान्त से हर क्षेत्र से प्रतिनिधियों का आगमन हुआ, जिसमें जोधपुर, पाली, ब्यावर, जयपुर, अजमेर, कोटा, सवाई माधोपुर, उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़, राश्मी, निम्बाहेडा, बेगूं, डूंगला, बड़ी सादड़ी, नाथद्वारा, कांकरोली, डबोक, कुंवारिया, भीम, आमेट, कोटड़ी, हनुमानगढ़, देवगढ़, रामडी, आलनपुर, सुमेरगंज मण्डी, कुश्तला, बरवाड़ा, गलवानिया, चोरू, पचाला, मोटर शहर, खाजना, गिलुण्ड, किशनगढ़, कनेरा, जरखोड़ा, बरावती इत्यादि अनेक संघों के प्रतिनिधि उपस्थित थे तथा कई संघों के इस परिप्रेक्ष्य में लिखित पत्र प्राप्त हुए।

सम्मेलन में करीब-करीब सभी ने अपने विचार रखे, प्रथम सत्र दिनांक 07-10-2023 को प्रातः 10 बजे से दोपहर 1:30 बजे तक रहा। द्वितीय सत्र दोपहर 3 बजे से सायं 5:50 बजे तक चला तथा तृतीय सत्र दिनांक 08-10-2023 को प्रातः 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक चला, जिसमें सभी ने बहुत सुन्दर विचार रखे। सभी का एक ही उद्देश्य था कि हमारा श्रमण संघ कैसे सुदृढ़ हो और कैसे अधिक मजबूत हो। अन्त में कुल 15 प्रस्तावों पर सर्वसम्मत्ति से निर्णय लेते हुए इन्हें पारित किया गया, जो निम्न प्रकार से हैं :-

(1) कोई भी संघ चातुर्मास करवाये उसकी आचार्यश्रीजी से फाईनल आज्ञा मंगवाये तथा दीक्षा भी यदि कोई संघ करवाये तो पूर्व में आचार्यश्रीजी की आज्ञा लिखित में मंगवाये।

(2) स्वाध्याय संघों को पुनः शुरु किया जाये।

(3) **मोबाईल : 1.** कोई भी संत-सती अपने द्वारा मोबाइल पर कोई पोस्ट नहीं डाले तथा न ही कोई आपत्तिजनक फोटो, वीडियो जो परम्परा के विरुद्ध हो वो बनवाये। **2.** कई संत-सती प्रतिक्रमण के समय ऑनलाईन रहते हैं, आचार्यश्रीजी द्वारा निर्देश जारी हो। **3.** मोबाइल सुबह 8:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक यदि कोई ज़रूरी हो तो सेवक के माध्यम से बात करें अन्यथा नहीं। ऑनलाईन क्लॉस/पढ़ाई यदि चलती है, तो उसे छोड़कर।

(4) विहार केवल सूर्योदय के पश्चात ही करें, पहले नहीं।

(5) एकल विहारी संत का चातुर्मास न करवाया जाये। श्रावकगण कोशिश करें कि एक से दो तीन हो जायें।

(6) मिथ्यात्वी अनुष्ठान सारे बन्द कराये जायें।

(7) 2015 इन्दौर साधु-सम्मेलन की समाचारी को शक्ति से लागू कराया जाये।

(8) चातुर्मास के खर्चे कम हों, सादगीपूर्ण हो, पाण्डाल इत्यादि आवश्यकतानुसार बनें ताकि छोटे संघ भी चातुर्मास करवा सके।

(9) संयम दिवस, पूर्व स्मृति दिवस सादगीपूर्ण, तप, त्याग, व्रत, एकासन, आयम्बिल द्वारा मनाया जाये, दिखावा न हो।

(10) दूसरे संघों से निष्कासित संत-सती को कोई भी सिंघाडा या संत अपने साथ मिलाते हैं तो आचार्यश्रीजी की अनुमति लेना आवश्यक होगा।

(11) स्थानकों में विराज रहे साधु-संत को टिफिन द्वारा गोचरी पर प्रतिबन्ध लगे, किसी कारणवश बारिश, प्राकृतिक आपदा, बीमारी, परहेज, बाल दीक्षार्थी इत्यादि को छोड़कर।

(12) श्रमण संघ में एकरूपता लाने हेतु चातुर्मास में बैनर का प्रारूप/डिज़ाइन एक जैसा हो, जिसमें सबसे ऊपर चारों आचार्य के नाम व युवाचार्य के नाम का उल्लेख हो, इसके बाद जिस क्षेत्र में भी चातुर्मास हों वहाँ के गुरु, गुरुणीजी का कोई नाम लगे, कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये।

(13) चातुर्मासों में प्रवचन के दौरान कम से कम 20 मिनट का प्रवचन श्रावकाचार पर हो।

(14) सभी वरिष्ठ श्रावक-श्राविकागण जो अम्मा-पिया की भूमिका में हैं, उन्हें संघ हित में सोचना पड़ेगा, सही को सही और गलत को गलत कहना पडेगा, तभी हम आगे गतिमान रहेंगे।

(15) हमारे पू. आचार्य सम्राट डॉ. शिवमुनिजी म.सा., जो कि ध्यानयोगी हैं, आत्म-ध्यान-साधना में लीन रहते हैं। प्रभु महावीर की साधना को पाकर, ये प्रसाद पूरे जग में फैला रहे हैं। हम उनकी इतनी गहन साधना में ज़रा भी विघ्न नहीं डाल सकते। अतः आचार्य भगवन्त से निवेदन है, प्रार्थना है कि श्रमण संघ के प्रशासनिक, आध्यात्मिक व्यवस्था, कार्यों हेतु आप युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. को जिम्मेदारी प्रदान करें, तो उचित रहेगा, जैसा आप ठीक समझे, यह तो आपश्री जी से केवल मात्र हमारी विनती ही है।

ये कुल 15 प्रस्ताव दो दिवसीय सम्मेलन में सर्वसम्मत्ति से पारित हुए। सम्मेलन के तीनों ही सत्र का संचालन प्रान्तीय मंत्री श्री सिद्धराजसिंहजी जैन, श्री महावीरजी बाफना जैन और श्री महेन्द्रजी जैन, चोरू द्वारा किया गया। प्रथम दिन शाम को भव्य भक्ति आयोजन हुआ, जिसमें प्रसिद्ध गायिका प्रियंका जैन थीं।

उपरोक्त सभी प्रस्ताव लेकर दिनांक 14.10.2023 को आचार्यश्रीजी के सम्मुख राजस्थान प्रान्त के अध्यक्ष श्री निर्मलजी पोखरना जैन, महामंत्री श्री शान्तिलालजी मारू जैन व प्रान्त के जोधपुर, पाली, भीलवाड़ा, कोटा, निम्बाहेड़ा, सवाई माधोपुर, उदयपुर इत्यादि क्षेत्रों के पदाधिकारी पहुँचे।

प्रान्तीय अध्यक्ष ने सारे प्रस्ताव पढ़कर सुनाये, सभी पर आचार्यश्रीजी ने निर्देश के साथ अनुमोदना भी की और सारे प्रस्ताव श्रमण संघ के हित में सही होना बताया और अपनी सहमति प्रकट की। अब आगे राजस्थान प्रान्तीय अध्यक्ष श्री निर्मलजी पोखरना जैन एवं टीम द्वारा सारे प्रस्तावों को एक फ्रेम में लगवाकर प्रान्त के सभी संघों में भिजवाया जायेगा एवं अनुपालना हेतु आग्रह किया जायेगा। **प्रेषक : शांतिलाल मारू जैन**

उप-प्रवर्तक पू. श्री गौतममुनिजी म.सा. की मौन साधना सम्पन्न

पीह (राजस्थान) : उप-प्रवर्तक पू. श्री विनयमुनिजी म.सा. 'वागीश' की निश्राय में उप-प्रवर्तक पू. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'गुणाकार' की नौ दिवसीय अखंड एकांत मौन साधना रही, जिसका समापन 29 अक्टूबर को आयोजित विशाल समारोह में महामंगलिक के साथ हुआ। तपोकेसरी श्री संजयमुनिजी म.सा. के मंगलाचरण के पश्चात तत्वचिंतक श्री सागरमुनिजी म.सा. ने मौन साधना का महत्व बताते हुए इसे हर व्यक्ति को यथा संभव जीवन में धारण कर समताधारी बनने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्य श्री गौतममुनिजी म.सा. ने इसे उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म.सा. द्वारा प्राप्त उपहार बताते हुए उन्हीं की प्रेरणा प्रतिवर्ष यह साधना कर रहे हैं और आत्म आनन्द की अभिभुति प्राप्त कर रहे हैं। कार्यक्रम के गौतम प्रसादी लाभार्थी श्रीमाणकचंदजी श्रीपुखराजजी श्री गुलाबचंदजी कोठारी परिवार अजमेर का रहा। कार्यक्रम में सैकड़ों श्रद्धालु महामंगलिक व गुरु दर्शन हेतु पधारे। महावीरचंद कोठारी, नथमल दुगड़, उत्तमचंद बोहरा, मोहनलाल नाहर, ज्ञानचंद कोठारी, तेजराज बोहरा, उतमचंद बंब आदि का कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग सराहनीय रहा। **प्रेषक : नथमल दुगड़**

जैन कॉन्फ्रेंस कर्नाटक युवा शाखा द्वारा भव्य गुरु दर्शन यात्रा सम्पन्न

बैंगलोर (कर्नाटक) : मुख्य प्रायोजक समाजरत्न दानवीर भामाशाह श्रेष्ठिवर्य जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व विश्वस्त मण्डल चेयरमैन श्री केसरीमलजी बुरड़, श्रेष्ठिवर्य श्री सुजानमलजी बुरड़ एवं धर्मनिष्ठ सुश्राविका विमलादेवीजी बुरड़ की सद्प्रेरणा व दिव्याशीष से श्रीमती शकुंतलादेवी, श्रीमान् प्रकाशजी-श्रीमती आरतीजी, अदितिजी, वैभवजी बुरड़ परिवार, बैंगलोर (मरुधर में देवगढ़) एवं आयोजक श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस कर्नाटक युवा शाखा द्वारा 101 यात्रियों की भव्य गुरु दर्शन यात्रा दिनांक 27.09.23 बुधवार को कैम्पेगोडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट से प्रस्थित हुई। यात्रा का प्रारंभ रायपुर-छत्तीसगढ़ में विराजित उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा., श्री मंगल साधना केन्द्र मंगलम् में विराजित उपप्रवर्तक डॉ. सतीशमुनिजी म.सा., भिलाई में विराजित महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. 'आर्या', उसके पश्चात् सिकन्द्राबाद में विराजित पू. युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा., उपप्रवर्तिनी श्री कंचन कंवरजी म.सा., रोचक व्याख्याता श्री ज्ञानमुनिजी म.सा., स्पष्टवक्ता श्री कपिलमुनिजी म.सा., उपप्रवर्तक श्री श्रुतमुनिजी मा.सा., श्रमणसंघीय उपप्रवर्तिनी महासाध्वी श्री चन्दनबालाजी म.सा., पुणे में विराजित जिनशासन प्रभाविका डॉ श्री कुमुदलताजी म.सा., प्रज्ञामहर्षि डॉ. समकितमुनिजी म.सा., महाश्रमणी श्री प्रीतिसुधाजी म.सा., प्रखरवक्ता श्री संयमलताजी म.सा और अंत में मुंडावरे, लोनावला में विराजित उपाध्याय श्री गौतममुनिजी म.सा. (प्रथम) के दर्शन, वंदन, प्रवचन, मांगलिक का लाभ लेने के पश्चात् पुनः 1 अक्टूबर को बेंगलुरु में आगमन हुआ, यादगार एवं अविस्मरणीय पलों के साथ यात्रा सुसम्पन्न हुई। जैन कॉन्फ्रेंस कर्नाटक युवा शाखा के सर्वश्री विकासजी कोठारी, सुनीलजी लोढ़ा, मनोजजी बोहरा, आशीषजी भंसाली तथा भरतजी कोठारी, सुनीलजी बम्ब, नवनंदितजी लुंकड, प्रवीणजी सिंघी, शीतलजी लुणावत एवं अभिषेकजी विनायकिया, अभयजी कात्रेला, अजयजी धोका, अनिलजी बम्ब, कमलेशजी भंडारी, किशोरजी बाफना, प्रदीपजी बोहरा, प्रवीणजी मुथा, राकेशजी लोढा, रूपेशजी सिसोदिया, सुमितजी कोठारी, सुशीलजी कासवा, विकासजी बाफना, विशालजी उत्ताणी, यशजी बाफना सहित 22 कार्यकर्ताओं की टीम के साथ इस ऐतिहासिक गुरु दर्शन यात्रा संघ को सफल बनाया गया। **प्रेषक : कर्नाटक युवा शाखा**

राजऋषि पू. श्री सुमतिप्रकाशजी म.सा. का जन्म दिवस मनाया गया

चेन्नई (तमिलनाडु) : श्री एस.एस. जैन संघ माम्बलम के तत्वावधान एवं स्वर्ण संयम आराधक श्री विरेन्द्रमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में दिनाँक 21 अक्टूबर 2023 को बर्किट रोड़ स्थित जैन स्थानक में गुरुदेव राजर्षि, श्रमणसंघीय सलाहकार पू. श्री सुमतिप्रकाशजी म.सा. का 86वाँ जन्म दिवस तप-त्याग व दो-दो सामायिक के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जन्मदिवस कार्यक्रम के तहत सुबह नवपद नवकार महामंत्र का सामूहिक जाप किया गया। तदनन्तर सामूहिक सामायिक आराधना के साथ गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। इस मौके पर गुरुदेव श्री सुमतिप्रकाशजी म. का प्रिय तप आयम्बिल जिसे वो कई वर्षों से अनवरत करते आ रहे हैं, उस आयम्बिल तप का सामूहिक आयोजन किया गया। माम्बलम संघ की तरफ से 125 से भी अधिक भाई-बहन ने सामूहिक आयम्बिल तप द्वारा गुरुदेव के चरणों में जन्मदिवस की भेंट प्रदान की। संघ अध्यक्ष डॉ. एम. उत्तमचन्दजी गोठी जैन ने बताया कि इस पावन प्रसंग पर भगवान महावीर सेवा समिति की तरफ से वृद्धाश्रम में अन्नदानम् भी किया गया। **प्रेषक : बी. महेन्द्रकुमार गादिया जैन**

पूज्य आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनि जी म.सा. द्वारा
साध्वी श्री संयमसुधा जी म.सा. "तप रत्नेश्वरी" की उपाधि से अलंकृत

भीलवाड़ा (राजस्थान) : महासाध्वी श्री उमरावकंवर जी म.सा. के श्रमणी परिवार की प्रखरवक्ता साध्वी डॉ. प्रीतिसुधा जी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री संयमसुधा जी म.सा. द्वारा 45 दिवसीय तपश्चर्या सुखसातापूर्वक सुसम्पन्न किए जाने पर श्रमणसंघीय आचार्य सम्राट् पू. श्री शिवमुनि जी म.सा. द्वारा तपस्विनी साध्वी जी म.सा. को **"तप रत्नेश्वरी"** की उपाधि से अलंकृत किया गया है । जैन कॉन्फ्रेंस सकल परिवार की ओर से साध्वी जी म. सा. के उन्नत श्रमण जीवन की हार्दिक शुभकामनाएं । तपस्या की हार्दिक अनुमोदना - अभिवादन - अभिनन्दन ।

अहिंसा विहार दिल्ली में गुरु पुष्कर जन्म जयंति सानंद सम्पन्न

अहिंसा विहार, दिल्ली : उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी म.सा., प्रवर्तक डॉ. राजेन्द्रमुनिजी म.सा., साहित्यकार डॉ. सुरेन्द्रमुनिजी म.सा., सेवाभावी श्री दीपेशमुनिजी म.सा., नवदीक्षित श्री पार्श्वेन्द्रमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में विश्वसंत उपाध्याय गुरुदेव श्री पुष्करमुनिजी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष के शुभ अवसर पर 114वाँ जन्मोत्सव रोहिणी स्थित अहिंसा विहार में सम्पन्न हुआ। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से प्रारम्भ कार्यक्रम में समस्त आगंतुकों का तिलक एवं धर्म पट्टा से स्वागत, स्वागताध्यक्ष लाला विपिन जैन परिवार द्वारा सम्पन्न हुआ। मुखवस्त्रिका एवं माला आदि की प्रभावना लाला हजारीमलजी व जयजिनेन्द्र विहार ग्रुप की ओर से रही।

इस अवसर पर पंडित रत्न श्री विचक्षणमुनिजी म.सा., महासाध्वी श्री समताजी म.सा., दीर्घ तपस्विनी श्री सत्येन्द्रप्रभाजी म.सा. ने अपने विचार प्रस्तुत किये। पूज्य गुरुदेव द्वारा आदर की चादर अर्पित की गई।

कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में पधारे भाजपा संसदीय बोर्ड सदस्य श्री सत्यनारायणजी जटिया, श्री बजरंगलालजी गुप्ता, जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान जे.डी. जैन जी, श्रीमान अविनाशजी चोरड़िया, दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी जैन तथा अनेक श्रीसंघों से पधारे हुए महानुभावों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. सुरेन्द्रमुनिजी म. तथा श्री सुधीर जैन ने किया । सर्वश्री विकास जैन, अमित जैन, नरेश जैन, रवि जैन, शिखरचंद जैन, सुभाषजी पारख आदि तथा महिला क्लब आदि ने अपनी सेवाएं समर्पित कीं। गुरु पुष्कर चालीसा का विमोचन लाला अभयजी गुणाकरजी द्वारा किया गया। अंत में उपाध्यायश्रीजी का आशीर्वाद व गुरुदेव द्वारा संघ, समाज गुरु पुष्कर के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए मंगल पाठ प्रदान किया गया। तपस्विनी सुश्राविका श्रीमती राखीजी महेशजी बोकड़िया ने सुदीर्घ मासखमण तप के प्रत्याख्यान ग्रहण कर जिनशासन की प्रभावना की। संघ द्वारा विशेष अभिनंदन पत्र के साथ तप की अनुमोदना की गई। बोकड़िया परिवार द्वारा दान-पुण्य के शुभ कार्य सम्पन्न हुए। नवकार तीर्थ के अध्यक्ष श्री प्रशांतजी जैन, महामंत्री श्री डी.सी. छाजेड़ जैन, कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्रजी, मंत्री श्री राजकुमारजी जैन, श्री सुनीलजी भण्डारी, श्री धर्मवीर जैन आदि ने शुभकामनाएं अर्पित की।

प्रेषक : सुभाष पारख

छत्तीसगढ़ जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड के परिणाम घोषित

दुर्ग (छत्तीसगढ़) : उपाध्याय प्रवर पू. श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. के सान्निध्य में लाल गंगा पटवा भवन में छत्तीसगढ़ जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड के परिणाम घोषित किए गए, जिसमें भाग-एक में प्रथम स्थान-वैशाली बागरेचा-शाजापुर, द्वितीय स्थान अदिति श्रीश्रीमाल-दुर्ग, तृतीय स्थान शारदा बागरेचा-शाजापुर ने प्राप्त किया। इसी तरह भाग-दो में प्रथम स्थान सोनल खटेड़-कवर्धा, द्वितीय स्थान रचना रतन बोहरा-दुर्ग, तृतीय स्थान पायल चोरड़िया-धमतरी का रहा। भाग-तीन की परीक्षा में प्रथम स्थान ऋतु चोरडिया-धमतरी, द्वितीय स्थान रेखा गोलछा-धमतरी, तृतीय स्थान चंचल श्रीश्रीमाल-दुर्ग का रहा। भाग-चार की परीक्षा में प्रथम स्थान-शिखा पींचा-रायपुर, द्वितीय स्थान प्रेरणा पारख-दुर्ग, तृतीय स्थान-सरोज गादिया-रायपुर का रहा। भाग-पांच की परीक्षा (सीनियर वर्ग) में प्रथम स्थान पर श्रीमती रचिता श्रीश्रीमाल-दुर्ग, द्वितीय स्थान पर रुचिता बाघमार-दुर्ग, तृतीय स्थान चंदा रूणवाल-दुर्ग का रहा। उपाध्याय प्रवर श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. के मुखारविंद से विजेता परीक्षार्थियों की घोषणा की गई।

प्रेषक : नवीन संचेती जैन

श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् द्वारा श्री मनसुखलालजी गुगले को पद अलंकरण

सूरत (गुजरात) : श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. द्वारा विहारधाम योजना के राष्ट्रीय मंत्री श्री मनसुखलालजी गुगले जैन को 'श्रमण संघ हितैषी' की उपाधि से अलंकृत किया गया। उल्लेखनीय है कि शिरूर से लगभग 850 श्रावक-श्राविकाओं का संघ त्रिदिवसीय यात्रा के दौरान सूरत में विराजित आचार्य भगवन् एवं अन्य साधु-साध्वीवृंद के दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। ज्ञान प्रकाश योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजयजी बाफना जैन, पंचम ज़ोन अध्यक्ष श्री सुनीलजी बाफना जैन, निवर्तमान रा. युवा अध्यक्ष श्री सागरजी सांखला जैन एवं अन्य विशिष्टगण इस यात्रा में शामिल रहे।

प्रेषक : संजय बाफना जैन

विशाल आयंबिल तप महोत्सव का आयोजन

औरंगाबाद (महाराष्ट्र) : श्रमणसंघीय सलाहाकार भीष्म पितामह परम पूज्य श्री सुमतिप्रकाशजी म.सा. के पावन जन्मोत्सव पर श्री वर्धमान श्वेतांबर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ-औरंगाबाद के तत्वाधान मे श्रमणसंघीय सलाहाकार उपप्रवर्तक नवकार साधक परम पूज्य श्री तारकऋषिजी म.सा. आदि ठाणा की सद्प्रेरणा से विशाल आंयबिल तप का आयोजन लाभार्थी परिवार द्वारा किया गया। सौ गुरुभक्तों ने आयंबिल की भेट गुरु चरणों मे समर्पित की। श्रावक संघ द्वारा आयंबिल ओली के लाभार्थी श्रीमती ज्योतीबाई मोतीलालजी संचेती परिवार द्वारा सभी तपस्वियो के आयंबिल की व्यवस्था की गयी। श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री झुंबरलालजी पगारिया जैन, चातुर्मास समिति अध्यक्ष श्री मिठालालजी कांकरिया जैन, सहमंत्री श्री दिलीपजी मुगदिया जैन, श्री लालचंदजी कोठारी जैन, श्री निर्मलजी कोठारी जैन, श्री पारसजी बाफना जैन, श्री बालचंदजी पोखरणा जैन, श्री पन्नालालजी चुत्तर जैन, श्री प्रविणजी डोसी जैन, श्री राजुजी बोरा जैन, श्री प्रकाशजी कोचेटा जैन ने आयंबिल ओली के आयोजन नियोजन तथा सफलता हेतु योगदान दिया।

प्रेषक : श्री वर्धमान श्वेताबंर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ-औरंगाबाद

डॉ. प्रतिभाजी म.सा. का आगामी चातुर्मास मैलापुर में

मैलापुर (कर्नाटक) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ मैलापुर ने आगामी वर्ष 2024 के लिए जिनशासन चन्द्रिका, शासन ज्योति महासाध्वी डॉ. प्रतिभाजी म.सा. आदि ठाणा-6 का चातुर्मास मैलापुर में कराने की विनती एवं गुरु आज्ञा हेतु मरुधरा भूषण, शासन गौरव, संत शिरोमणि, श्रमणसंघीय प्रवर्तक श्री सुकनमुनिजी म.सा. एवं प्रवर्तक श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा. को पत्र भेजा। दोनों गुरुदेवों से महासतीजी का 2024 का चातुर्मास मैलापुर में कराने की आज्ञा प्राप्त हुई।

प्रेषक : विमलचंद खाबिया जैन

गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस 21 नवम्बर से 20 दिसम्बर 2023 तक

मंगलमय जन्म दिवस

जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा.	25 नवम्बर
साधक रत्न श्री फूलचंदजी म.सा.	08 दिसम्बर
महामंत्री श्री सौभाग्यमुनिजी म.सा. 'कुमुद'	19 दिसम्बर

आत्मोद्धारक दीक्षा दिवस

उपाध्याय श्री कस्तूरचंदजी म.सा.	25 नवम्बर
घोर तपस्वी श्री मिश्रीमलजी म.सा.	28 नवम्बर
श्री गणेशीलालजी म.सा.	28 नवम्बर
आचार्य श्री जयमलजी म.सा.	29 नवम्बर
आचार्य श्री सोहनलालजी म.सा.	30 नवम्बर
आचार्य श्री काशीरामजी म.सा.	04 दिसम्बर
आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा.	14 दिसम्बर
प्रवर्तक श्री अम्बालालजी म.सा.	20 दिसम्बर

पुण्य स्मृति दिवस

गुरुदेव श्री प्रतापमलजी म.सा.	26 नवम्बर
युवाचार्य श्री मधुकरमुनिजी म.सा.	04 दिसम्बर

हम सभी गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस तप-त्याग एवं सामायिक आराधन, धर्माचरण, आयम्बिल-एकासना दिवस के रूप में मनाकर गुरु भगवंतों के श्रीचरणों में अपनी श्रद्धा भक्ति का परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण कर स्वयं के जीवन को सुरभित करें ।

अध्यात्म जगत के क्रान्तिवीर धर्मवीर लोंकाशाह

जिस नव्य चेतना को आज हम श्वेताम्बर स्थानकवासी विचार साधना पद्धत्ति कहते हैं, उसके चिन्तन का श्रेय केवल मात्र अध्यात्म जगत के क्रान्तिवीर धर्मवीर लोंकाशाह को जाता है । समाज जागरण का वृहद्तम ऐतिहासिक सन्दर्भ कहीं अन्यत्र अप्राप्य है । श्रुत और आचार निष्ठ आराधना उनकी तेजस्विता में प्रखर हुई । धर्म के नाम पर होने वाले आडम्बर और सुविधा भोग की वृत्तियां देखकर उनका हृदय द्रवित भी हुआ । श्रमणाचार और श्रावकाचार में तेज़ी से पनपने वाले श्रमणाचार और श्रावकाचार में तेज़ी से पनपने वाले स्वच्छान्दाचार को उन्होंने खुली चुनौती दी । उनका विरोध व्यक्ति अथवा परम्परा से नहीं, अपितु तब शिथिल होती विकृतियों से था । लोंकाशाह जयंती पर वन्दन !

गणेशबाग में पंच दिवसीय बाल जैन संस्कार शिविर का भव्य आयोजन

बैंगलोर (कर्नाटक) : गणेशबाग स्थानक भवन में चातुर्मासार्थ विराजित पूज्य साध्वी श्री विजयलताजी म.सा. की सद्प्रेरणा से श्री अंबेशगुरु सेवा समिति के तत्वावधान में 19-10-23 से 23-10-2023 तक पंच दिवसीय बाल जैन संस्कार शिविर का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें करीब 700 बच्चों ने भाग लिया। शिविर में बच्चों को जैन संस्कार सिखाने हेतु दैनिक जीवन में अपनाने के संस्कारित 20 नियम एवं डिजिटल कहानियों के माध्यम से जीवन को परिवर्तित करने हेतु एक कॉन्सेप्ट तैयार किया गया, जो बाल संस्कार शिविरों में अपनाया जाने वाला ऐसा पहला प्रयास था।

इस कॉन्सेप्ट को सभी बच्चों ने, अभिभावकों व देश के कोने-कोने से सभी धर्म प्रेमियों व संघ, संस्थाओं ने बहुत सराहा। शिविर के चेयरमैन श्री कन्हैयालालजी सुराणा जैन (राष्ट्रीय मन्त्री,जैन कान्फ्रेंस) अपने क्षेत्र विजयनगर स्थानक में करीब 150 बच्चों की पिछले पाँच वर्षों से एक अनुशासित ज्ञानशाला का संचालन करते आ रहे हैं। सभी बच्चों को सामूहिक रूप से स्क्रीन पर एनिमेटेड कहानियों के माध्यम से संस्कारों को सिखाया गया व इसके बाद उससे संबंधित प्रश्न पूछे गए। सही जवाब बताने वालों को तत्काल पुरस्कार प्रदान किये गए। बच्चों को भोजनशाला में अपनी थाली धोकर पीने के नियम का पांचों दिन पालन करवाया गया। समिति के आवास-निवास चेयरमैन श्रीमान दिनेशजी पोखरना ने इसमें अतुलनीय सेवाएं प्रदान कीं।

पंच दिवसिय शिविर का शुभारंभ मंगलाचरण के साथ शिविर के मुख्य लाभार्थी श्रीमान कन्हैयालालजी, दिनेशकुमारजी, दिलीपकुमारजी, सुनीलकुमारजी, अभिषेकजी, आयुषजी, युवेनजी सुराणा परिवार ने किया। साध्वी श्री विजयलताजी म.सा. ने मंगलपाठ सुनाया। बच्चों को हर रोज़ प्रभावना दी गयी तथा उन्हें 20 संस्कार नियम कंठस्थ कराए गए। इसके साथ ही पूज्य गुरुदेव श्री सौभाग्यमुनिजी म.सा. की पुण्य स्मृति हेतु उनकी चित्रावली की प्रतियोगिता आयोजित की गयी, जिसमें प्रथम स्थान पाने वाले को 5100 रुपये, द्वितीय स्थान वाले को 3100 रुपये व तृतीय स्थान पाने वाले को 2100 रुपये का नकद पुरस्कार दिया गया।

शिविर का समापन कार्यक्रम महिला अध्यक्षा ललिता ढीलीवाल ने मंगलाचरण से किया। समिति के अध्यक्ष श्रीमान लादूलालजी ओस्तवाल ने सभी को सफल आयोजन की बधाई व धन्यवाद दिया। मंत्री सुरेन्द्रजी आंचलिया ने सभी का स्वागत करते हुए शिविर की सफलता हेतु सभी को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग के लिए धन्यवाद दिया व मुख्य लाभार्थी सुराणा परिवार का अभिनंदन किया। शिविर चेयरमैन श्री कन्हैयालाल जी सुराणा ने अपने व्यक्तव्य में सभी का अभिवादन किया। मेड़तवाल के निर्देशन में भोजन व्यवस्था व युवा संघ के सदस्यों के मैनेजमेंट में उत्कृष्ट सेवाओं हेतु धन्यवाद दिया गया। सभी अभिभावकों के हर रोज प्राप्त बधाई संदेशों हेतु सभी का आभार प्रकट किया गया तथा सभी से निवेदन किया कि जब भी ऐसे संस्कार शिविरों का कहीं भी आयोजन हो तो अपने बच्चों को वहां अवश्य भेजें, जिससे हमारे बच्चों में जैन संस्कारों का बीजारोपण हो सके।

प्रेषक : दिनेश सुराणा जैन

हैदराबाद में श्री गुरु गणेश जैन भवन का भव्य उदघाटन समारोह दिसम्बर में

हैदराबाद (तेलंगाना) : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन गुरु गणेश ट्रस्ट हैदराबाद के तत्वावधान में श्री गुरु गणेश भवन का भव्य उद्घाटन पांच दिवसीय कार्यक्रमों के साथ दिनांक 6 दिसम्बर से 10 दिसम्बर तक श्रमण संघीय उप-प्रवर्तक पू. श्री श्रुतमुनिजी म.सा., तपोरत्नाकर पू. श्री अक्षरमुनिजी म.सा. आदि ठाणा, वयोवृद्ध महासाध्वी पू. श्री चंदनबालाजी म. सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में सम्पन्न होगा। मुख्य कार्यक्रम 10 दिसम्बर रविवार को सम्पन्न होगा। इस अवसर पर शहर में उपस्थित सभी गुरुजनों का पदार्पण होगा। कार्यक्रम में ट्रस्ट के चेयरमैन श्री पन्नालालजी संचेती, वाइस चेयरमैन श्री अशोककुमारजी मुथा, श्री अखराजजी कोठारी, मैनेजिंग ट्रस्टी श्री पूनमचंदजी कोचेटा, कोषाध्यक्ष श्री अशोककुमारजी सिंघवी तथा श्री वर्धमान स्था. जैन श्रमणोपासक संघ, श्री महावीर मित्र मंडल, श्री वर्ध. स्था. जैन श्रमणोपासक संघ महिला मंडल, श्री वर्ध. स्था. जैन श्रमणोपासक संघ बहु मंडल, गुरु गणेश सेवा निधि, जिनेश्वर युवा संगठन, प्रभा कन्या मंडल आदि संस्थाओं का सहयोग रहेगा। आप सभी महानुभाव कार्यक्रहम में सादर आमंत्रित हैं। **प्रेषक : गुरु गणेश ट्रस्ट रामकोट**

शोक समाचार

पूज्य श्री शीतलज्योतिजी म.सा. का देवलोकगमन

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : आनंद रत्न वल्लभ कुल दीपिका दक्षिणज्योति पू. श्री आदर्शज्योतिजी म.सा. की पूज्या माताजी म.सा. पू. श्री शीतलज्योतिजी म.सा. का दिनांक 02 नवम्बर 2023 की रात्रि को संथारापूर्वक देवलोकगमन हो गया। श्रद्धाजंलि सभा अगले दिन मुकुट मांगलिक भवन में आयोजित की गई। म.सा. जिनशासन सेवा के प्रति समर्पित होकर श्रमण संघ की सेवा में रत थीं। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार भगवान वीर प्रभु से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा मोक्षगामी हो और अपने अंतिम लक्ष्य सिद्धालय को प्राप्त हो। दिवंगत आत्मा को जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि, वंदन, नमन।

प्रेषक : गौतम दुग्गड़ जैन

महासाध्वी पूज्य डॉ. श्री सुरभिजी म.सा. का देवलोकगमन

लुधियाना (पंजाब) : संयम सुमेरू, उपप्रवर्तिनी महासाध्वी पूज्य श्री सीताजी म.सा. की शिष्यानुप्रशिष्या एवं घोर तपस्विनी महासाध्वी श्री सुमित्राजी म.सा. की प्रशिष्या एवं महासती डॉ. श्री सुनीताजी म.सा. की सुशिष्या चंदाजी आश्रम, लुधियाना में विराजित महासाध्वी पूज्य डॉ. श्री सुरभिजी म.सा. का दिनांक 18 अक्टूबर 2023 को देवलोकगमन हो गया। जिनशासन देवप्रभु महावीर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा मोक्षगामी हो और अपने अंतिम लक्ष्य सिद्धालय को प्राप्त हो। दिवंगत आत्मा को जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि, वंदन, नमन।

प्रेषक : गौतम दुग्गड़ जैन

श्रीमती शिमला जी जैन का आकस्मिक देवलोकगमन

दिल्ली : श्रीमती शिमला जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री श्रीचन्दजी जैन (स्यालकोट वाले) तथा सुपुत्री स्व. लाला मोतीलाल जी जैन (अमृतसर) का अल्पकालिक बीमारी के उपरान्त 03 अक्टूबर 2023 को कमला नगर, दिल्ली में आकस्मिक देवलोकगमन हो गया है । प्रभु महावीर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा मोक्षगामी हो और अपने अंतिम लक्ष्य सिद्धालय को प्राप्त हो। दिवंगत आत्मा को जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि। **प्रेषक : सहदेव जैन**

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : श्रीमान् विजयसिंहजी छिंगावत जैन का दिनांक 05 अक्टूबर 2023 को देवलोकगमन हो गया।

प्रेषक : प्रदीप जैन

खमनोर (राजस्थान) : श्रीमती नजरीबाईजी मांडोत जैन धर्मपत्नी स्व. श्री प्यारचंदजी मांडोत जैन का दिनांक 09 अक्टूबर 2023 को देवलोकगमन हो गया। **प्रेषक : ओमप्रकाश मांडोत जैन**

दिवंगत आत्माओं के प्रति जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि

आत्मा
अजर-अमर
तथा
पूर्ण और
अनन्त है ।

जीवन मिलना भाग्य की बात है,
मृत्यु होना समय की बात है,
पर, मृत्यु के बाद भी,
लोगों के दिलों में जीवित रहना,
यह तो अपने **सत्कर्मों** की बात है ।।

मृत्यु तो एक
कसौटी है
अपनों व
परायों को
परखने की